ग्रामोफोन मास्टर

जिसमें—

हिज़ मास्टर्स वायस, हिन्दोस्तान, न्यूथियेटर्स, सिनोला और ट्विन रेकार्डस् में प्रसिद्ध प्रसिद्ध गवैयोंके गाये हुए पूरे पूरे गाने हैं।

जिसको—

मि० पी० डी० लम्मन

ने

संग्रह किया

प्रथमबार २००० } जून १९३६ { मूल्य ।।)

HMV Gramophone series - 1920's - 1930

मिस कमला झरिया - - - - - - - १
मिस इन्दुबाला - - - - - - - - - २
मिस अंगूरबाला - - - - - - - - - ८
मिस मोहरजान - - - - - - - - - १०
मिस हरिमती - - - - - - - १३
मिस आई. एन. शिमली (कोयल) - - - - - १६
मिस. उमारानी - - - - - - - २२
मिस. सीतादेवी - - - - - - २४
मिस मानिकमाला - - - - - - 26
मिस. महबूबजान मूरी (आगरा) - - - - - 28
कुमारी जूथिकाराय - - - - - 28
सावित्रीदेवी - - - - - - 29
मिस शान्ता आप्टे - - - - - - 30
मिस माया महाराज (इलाहाबाद) - - - - 31
मिस तारा - - - - - - - - 32
महबूबजान (शोलापुर) - - - - - - 33
मिस प्रमोदा - - - - - - - - 34
मिस ज़ाहिदा - - - - - - - - 35
मिस मनोहर - - - - - - - 37
मिस मलकाबाई (करोदर) - - - - 38
कृष्णाबाई रामदुर्गकर - - - - - 39
गन्धारी हजाम - - - - - 40
रानी कुमारी एण्ड रानी - - - - - 41
मिस देवबाला - - - - - - - 43
मिस कुमारी - - - - - - - - 44
हरेन्द्रनाथ चटर्जी व कुमारी हारदी - - - - - 51
मास्टर रफ़ीक हुसैन - - - - - - 52
मि. रिसालहुसेन - - - - - - 60
मा. मदन - - - - - - - - 62

(?) - - - - 62
मि. रशीद - - - - 64
प्रो. नारायणराव काले - - - - 65
मि. वसंत अमृत - - - -
भरत दलाल - - - - 69
मि. युसुफ आझमी - - - - 73
[illegible] - - - - 77
मि. भाकी / श्री. चक्रवर्ती - - - - 78/79
डॉ. हरेंद्रनाथ चटर्जी - - - - 81
[illegible] दलाल - - - - 82
अली हुसेन दलाल - - - - 89
परवेझ आलम दलाल - - - - 93
डि. के. सी. ई. - - - - 96
मोहम्मद रसूलोद्दीन दलाल - - - - 99
मि. इसरार अली - - - - 102
डि. सी. एन. गोरडे - - - - 105
आनंद बी. व हैदराबादकर - - - - 106
प्रो. व्ही. एन. डोंगरे, अहमदाबाद - - - - 107
मि. [illegible] - - - - 108
मि. रशीद - - - - 110
के. एन. वारू[illegible] - - - - 111
बी. एन. भावसार - - - - 112
बी. एन. रानडे - - - - 113
मोहि. राजुद्दीन मजहर - - - - 113
~~के. एन. [illegible]~~ - - - - 115
मि. अमृतलाल [illegible] - - - - 115
डि. वी. एन. गोरडे - - - - 116
मि. [illegible] व [illegible] - - - - 117

મિ. કૂપિયાં ના રાનદેવી - - - - - - - 117
મિઠાં કુંવર ના ઉમરાવબાનુ - - - - - 119
ધારા રૂસ્તમ ના ધાટી - - - - - - 120
મિ. રૂસ્તમ કેકોબાદ ના પારસી રાણી - - - - - 121
મિસિ. કુંવરબાઈ Marupatel / New Reader - - - 123
મિસિ. પદમણી - - - - - - - - 125
મિસ ગુલાબબાઈ - - - - - 126
મિસ ગુલનબાઈ / ડાહીબાઈ ના સોનલ - - - - 127
ડાહીબાઈ ના પૌત્ર - સગાવાલ - - - - - 128
ડાહી સોનબાઈ પટેલની - - - - - - - 130
શ્રીમતી હિરાબાઈ / મિઠાબાપા - - - - - 132/133
શ્રીમતી અંબુબાઈ (ગામો) - - - - - 137
બે પારસી બાલકો - - - - - - 139
મિસ તારા અમૃતબાઈ બાલકો - - - - - - 141
મિસ ગુલાબનાર - - - - - - - 143
મિસ માણિકબાઈ - - - - - - - - 144
રાજબાઈ વકીલ - - - - - - - - 145
સારાબાઈ, પટેલની બાલાબાઈ ગુલાબબાઈ - - - - - 146
મિ. સોનાર - - - - - - - - - - 148/153
ધોબી રૂસ્તમ / હલકુ રૂસ્તમ - - - - - 154/55
મિ. બહેરામજી - - - - - - - - - 156
મિ. બહાદુર - - - - - - - 159
ગુલિસ્તાન પારસી - - - - - - - 160
ડૉ. ગુલામ હુસેન - - - - - - 161
ગુરુ ધરતી અને મિસ ગંગા - - - - - - 162
મિ. છોટે લાલ બાબા - - - - - 163

मि० गुलाम मोहम्मद गाफर - - - - 164
मिस्टर हेमन्ताचार्य - - - - - 169
मिस्टर गिरधरबाबा - - - - 170

सेनोला रेकार्ड

मिस दुर्गा रानी - - - - 171
कु० अमिया सरदार / मिस सरजू - - - 172/73
मिस सरजू और मि० सत्तार - - - 174
कु० मीरा दास गुप्ता / मि० मन्नू - - - 175
मि० संतोष - - - - - 176
सेनोला होली पार्टी - - - - 178
पं० विनोद कुमार दिलावरवाल - - - - 181
पं० बाबूजी शर्मा तलवार - - - - 182
सेनोला धार्मिक पार्टी - - - - 183

कुईन रेकार्ड

आश्चर्यनंद शास्त्री - - - - - 189
मिस हेमनलिनी - - - 190
मिस अरुणलीनाचार (केरल) - - - - 191
मिस नलिनाबाला - - - 193
मिस तारामती - - - - 195
सुरजन नाग / ज्वालाबाई - - - 196/97
मिस पद्मारानी - - - - 198
मिस किरनबाला - - - 200
मिस मिलानी - - - - 202
नरगिस - - - - - 205
मास्टर नगरजी / मिस जरीना 206/07

[illegible] 'નાઝ' - - - - - - - 208
[illegible] - - - - - - - - - - 209
[illegible] / [illegible] - - - - - - 210/11
[illegible] - - - - - - - 212
[illegible] - - - 213
[illegible] - - - - 214
[illegible] - - - - - 218
[illegible] - - - - - - 220
[illegible] - - - - - - 221
[illegible] / [illegible] - 224
[illegible] - - - - - - - 225
[illegible] - - - - - - 228
[illegible] - - - - - 229
[illegible] - - - 230
[illegible] - - - - - - 231
[illegible] - - - - - 232
[illegible] - - - - - - 267
[illegible] - - - - - 269
[illegible] - - - - - 270
[illegible] - - - - - 272
[illegible]
[illegible] - - - - 273
[illegible] - - - - - 274
[illegible] - - - - - 275
[illegible] - - - - - 276

ઘોટર મોનૂ રૂવાબ - - - - - - - - 277

હીંરબાઈ રાઘવજી - - - - - - 279

અલી અસગર / હદાનન શર્મા - - - - - 280/81

[illegible] - - - 282

મલકાતીબાઈ (આગ્રીયુરી) - - - - 282

મિસ રુકસાઈ જાન - - - - - - 284

મિસ શાહદર - - - - - - - - 285

મિસ રઝાબાઈ / મા. ચંદૂ - - - - 286/87

પીર મોહમ્મદ રૂવાબ - - - - - 288

મિસ ગુલઝાર શર્મા - - - - - - 289

Hindwstan Record

શ્રીમતી હીરાબાઈ - - - - - 293

પં. રવીનચંદ્ર વેદી - - - - - 294

મિ. જોર્જ ડાનિયાલ - - - - - 295

મા. વરદા ઈમાન - - - - - - 296

ગુલામ હુસેન રૂવાબ - - - - - 298

મિસ. ગુલ પશમી / મા. ઇકબાલ - - - - 300

મા. રંગાબર - - - - 302

મિસ. મુન્ની - - - - - 303

મિ. જે. રવી. ડે - - - - 306

ગાંધારી ચેતન - - - - - 307

दो शब्द

यह पहली ही वार है जबकि ऐसी पुस्तक जिसमें मशहूर २ रेकार्डिङ्ग कम्पनियोंके पूरे २ गाने दिये गये हैं तैयार हुई है! यह केवल ग्रामोफोन रखनेवालोंको ही लाभदायक नहीं बलके संगीत प्रेमियोंके लिये भी वड़ी फायदेमन्द होगी। इस पुस्तकके बारेमें एक प्रसिद्ध डाक्टर साहब को राय मुलाहजा करें!

I read your book "GRAMOPHONE MASTER" with interest & delight. The people will thoroughly enjoy these songs when they are sung or played through Gramophone.

Dr. H. MUKERJI,
177, Lower Circular Road,
CALCUTTA.

संगीतके बारेमें उपरोक्त डाक्टर साहेबकी राय:—

Music is a Great Healer said Dr. H. Mukerji B. Sc. M. D, F. C. S. an old Physician of 67 years of age of International fame.

Music is a great Healer admitted by many Scientists in France, Great Britain and America. Music is the biggest treasury of untold happiness. Our ancient Rishis had actual Sadhana through Music. Hymn is music and prayer is music. The love of music is a heritage handed down to all man-kind. It has fountain of harmeny with full of melody and when Combined with the concentrated mind it inspries the player & the hearer both and infuses the true spirit of love and happiness and leads towards Sadhana.

खाकसार—
पी० डी० लम्मन।

जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है
मुर्दा दिल खाक जिया करते हैं

अगर आपको दूरबीन, ग्रामोफोन, रेकार्ड तथा अन्य किसी वाद्ययन्त्रकी जरूरत हो तो सीधे हमें लिखिये, सूचीपत्र मुफ्त भेजा जायेगा ! आर्डर शुदा वस्तुको आपके पास पहुंचानेके लिये पैकिंग, डाक अथवा रेल खर्च सब हम देंगे ! इसके अलावा हिज़ मास्टर्स वायेस, हिन्दोस्तान, न्यू थियेटर्स सेनोला और टुईन रेकार्डोंके जून १९३६ तकके गाने पढनेके के लिये "ग्रामोफोन मास्टर" नामक पुस्तक भी हमसे मंगायें ! इसमें रेकार्ड नम्बर और प्रसिद्ध २ गवैयोंके चित्र भी हैं मूल्य १॥) डाक खर्च अलग ! !

लछमन-ब्रदर्स

८३ लोअर चीतपुर रोड, कलकत्ता ।

विज्ञान-भण्डार

सिनेमा और विज्ञानका सचित्र मासिकपत्र।

इसमें बड़े विचित्र, नवीन और आश्चर्यजनक विज्ञान और सिनेमा सम्बन्धी लेख प्रकाशित होते हैं।

वार्षिक मूल्य ४॥) एक प्रतिका ।=)

'विज्ञान भण्डार' के ग्राहकोंको 'भारतीय सिनेमाके चमकते सितारे' नामक पुस्तक जिसमें प्रसिद्ध २ सिनेमा कलाकारोंके जीवन चरित्र और फ़ोटो हैं मुफ्त दी जाती है। इस पुस्तकका मूल्य ३) हैं।

विज्ञान भण्डार कार्यालय—

३१ बांसतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता।

आपका रोग कैसा ही असाध्य हो, कहीं भी आराम न हुआ हो, इलाज कराके थक गये हो, तो एक बार हमारे पास भी आइये या रोगका पूरा हाल लिखकर पूछिये।

हमने हजारों असाध्य रोगियोंको पूर्णतया आरोग्य किया है।

कण्ठ कोकिला—गलेकी आवाजको तेज, साफ़, सुरीली और कोकिलके समान मधुर बना देती है। मूल्य १॥)

गोयल फ़ार्मेसी—

३१ बांसतल्ला स्ट्रीट कलकत्ता।

दो शब्द

यह पहली ही वार है जवकि ऐसी पुस्तक जिसमें मशहूर २ रेकार्डिङ्ग कम्पनियोंके पूरे २ गाने दिये गये हैं तैयार हुई है ! यह केवल ग्रामोफोन रखनेवालोंको ही लाभदायक नहीं वलके संगीत प्रेमियोंके लिये भी बड़ी फायदेमन्द होगी। इस पुस्तकके वारेमें एक प्रसिद्ध डाक्टर साहब की राय मुलाहज़ा करें !

I read your book "GRAMOPHONE MASTER" with interest & delight. The people will thoroughly enjoy these songs when they are sung or played through Gramophone.

Dr. H. MUKERJI,
177, Lower Circular Road,
CALCUTTA.

संगीतके वारेमें उपरोक्त डाक्टर साहेबकी राय:—

Music is a Great Healer said Dr. H. Mukerji B. Sc. M. D, F. C. S. an old Physician of 67 years of age of International fame.

Music is a great Healer admitted by many Scientists in France, Great Britain and America. Music is the biggest treasury of untold happiness. Our ancient Rishis had actual Sadhana through Music. Hymn is music and prayer is music. The love of music is a heritage handed down to all man-kind. It has fountain of harmony with full of melody and when Combined with the concentrated mind it inspries the player & the hearer both and infuses the true spirit of love and happiness and loads towards Sadhana.

खाकसार—
पी० डी० लक्ष्मन ।

विज्ञान-भण्डार

सिनेमा और विज्ञानका सचित्र मासिकपत्र।

इसमें बड़े विचित्र, नवीन और आश्चर्यजनक विज्ञान और सिनेमा सम्बन्धी लेख प्रकाशित होते हैं।

वार्षिक मूल्य ४।।।)   एक प्रतिका ।=)

'विज्ञान भण्डार' के ग्राहकोंको 'भारतीय सिनेमाके चमकते सितारे' नामक पुस्तक जिसमें प्रसिद्ध २ सिनेमा कलाकारोंके जीवन चरित्र और फ़ोटो हैं मुफ़्त दी जाती है। इस पुस्तकका मूल्य ३) हैं।

विज्ञान भण्डार कार्यालय—

३१ बांसतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता।

आपका रोग कैसा ही असाध्य हो, कहीं भी आराम न हुआ हो, इलाज कराके थक गये हो, तो एक बार हमारे पास भी आइये या रोगका पूरा हाल लिखकर पूछिये।

हमने हजारों असाध्य रोगियोंको पूर्णतया आरोग्य किया है।

कण्ठ कोकिला—गलेकी आवाजको तेज़ साफ़, सुरीली और कोकिलके समान मधुर बना देती है। मूल्य १।।)

गोयल फ़ार्मेसी—

३१ बांसतल्ला स्ट्रीट कलकत्ता।

जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है
मुर्दा दिल खाक जिया करते हैं

अगर आपको दूरवीन, ग्रामोफोन, रेकार्ड तथा अन्य किसी वाद्ययन्त्रकी जरूरत हो तो सीधे हमें लिखिये, सूचीपत्र मुफ्त भेजा जायेगा ! आर्डर शुदा वस्तुको आपके पास पहुंचानेके लिये पैकिंग, डाक अथवा रेल खर्च सब हम देंगे ! इसके अलावा हिज़ मास्टर्स वायेस, हिन्दोस्तान, न्यू थियेटर्स सेनोला और ट्वीन रेकार्डोंके जून १९३६ तकके गाने पढनेके के लिये "ग्रामोफोन मास्टर" नामक पुस्तक भी हमसे मंगायें ! उसमें रेकार्ड नम्बर और प्रसिद्ध २ गवैयोंके चित्र भी हैं मूल्य १॥) डाक खर्च अलग ! !

लछमन ब्रदर्स

८३ लोअर चीतपुर रोड, कलकत्ता ।

ग्रामोफ़ोन मास्टर

मिस वीना

विषय-सूची

हिज़ मास्टर्स वायेस

नाम	पृष्ठ
औरतोंके गाने	... १ से ५० और ३०३ से ३०५ तक
मरदोंके गाने	... ५१ से १२२ और ३०६ से ३०७

हिन्दोस्तान व न्यू थियेटर्स

औरतोंके गाने	... १२३ से १४६ और २६३ पर
मरदोंके गाने	... १४६ से १६५ और २६४ से २६६

सेनोला

औरतोंके गाने	... १६७ से १७५ और ३०० पर
मरदोंके गाने	... १७५ से १८७ और ३०० से ३०२ तक

टुईन

औरतोंके गाने	... १८६ से २१२
मरदोंके गाने	... २१३ से २६२

श्रीगणेशायनमः ।

ग्रामोफोन मास्टर

हिज़ मास्टर्स वायस

मिस कमला झरिया

नाच   रुखे अव्वल   N 6396

निकसी गुइयां मैं घूमन बजरिया
लगी छैला से मोरी नजरिया
तन मन सारे पिया पे वारे
रही तनको न मो को खबरिया—लगी....

न पूछो प्यारे की क्या प्यारी २ आंखें हैं
ज़माने भरसे जुदा सबसे न्यारी आंखें हैं
मिलाके आंख मेरा दिल जिगर किया घायल
नज़र है तीर व वरछी कटारी आखें है

मोहे नैना कटारी पीहरवा मैं वारी
छब दिखला के प्यारे सांवलिया ने मोरा मन हर लीनो—
निकसी....

जवानी भी क्या शै है उफ २ न पूछो
जिधर वह चला साथ जाती हैं आंखें
तीखी चितवन नैना मतवारे—अबरू कटारी--तेग़ दुधारी—ज़ालिम....

नाच रुखे अव्वल N 6395

बांकी रसीली नई पनिहारी पंघटपरजल भरनेको जाय
सर पर गगरी छाय छम छम पायल बाजे
पतली कमर सौ २ बल खाए—चाल चलत इठलाये
चांद सा मुंखड़ा फूलोंसे गाल लम्बे २ घुंघरवाले बाल जिसमें दिल फंस जाये
लचकत २ कामिनी एसी पग धर सी
नैन मिलाके ओ मृग नैनी मन हर सी
मोहे वह नर हाये आशिक हूं मिलजाये दिलमें लेहूं छुपाये

रुखे सानी

श्याम गिरधारी तोसे कैसे मैं मिलूं
तेरी फुकतमें तड़प रही हूं फूंकत है तन मन
तुम्हारे कारण भई जोगनया फिरूं मैं बन २ डारे कमरिया
श्याम मुरारी सुन लो हमारी देखत हूं ठाड़ी बाट तुम्हारी
मथुरा नगरमें भटक रही हूं दिखा दो दरशन

फिल्म रुखे अव्वल N 6603

बनसे लौटे हुवे तुम राजा जन्ता हुवी सुखारी
इतने दिनोंके बाद पिया की आई सुखकी बारी

नाच   रुखे सानी

तोरी तिरछी नैनाने श्याम गिरधारी दिलपर मारी कटार
पिया आओ गले लगाओ न सताओ मैं वारी तोपे जाऊं बलिहार
तुम्हारे नैनोंने तुम्हारे नैनोंने किया इस दिलको है शिकार
फिराकमें तेरे हम जान अपनी खोते हैं
न चैन पाते हैं दिनको न शबको सोते हैं
जो दिल पे मेरे गुजरती है क्या कहूं ऐ 'ज़मीर'
दिया था दिल ही क्यों अब उस घड़ीको रोते हैं

मिस इन्दुवाला

N 6416

नाच   रुखे अव्वल

मैं नाहीं मानूं पिया तोरी अब बतियां
तुम जाय२ सौतन सङ्ग रैन गंवायो-मैं जान गई निरदई तोरी घतियां
मत छेड़ो मोहे मानो मोरी अब बातरे—हट जाओ पिया हां हां
छुओ न मोरी छतियां
छोड़ो मोरी बय्यां, मैं लागूं तोरे पय्यां, मैं हारी तोसे सय्यां....

नाच   रुखे सानी

हाय मार गयो ज़ालिम नज़रियोंके बान
नैंनोंसे नैंना मिलायके लुभायके, सखी री बांका छैला जवान
न ज़खमी न घायल बनाती हैं आंखें,
मिलाकर नजर दिल चुराती हैं आंखें,

कर तुमरी छातीसे लगकर चाहत शान्ति बिचारी
बिना अपराध भयानक बनमें तुरत ही गई निकारी

फिल्म रुखे सानी

कहाँ हैं सीता कहां हैं सीता कहां हैं सीता
राजदुलारी निरजन बन है बहुत भयंकर
दीखन पड़े नाहीं यों नारी
चहूं दिश हिंसक जन्तु बिचरें
बहे नदकी धारी कारी हृदय न था उनकी छाती में
गरदोती तेरा जन नारी
निश्चय ही किसी जन्तुकी हो गई शिकार
अथवा गहरी नदीकी बहा ले गई धार
दीख न पड़ता कछु भी मुझको छाई चहुं दिश मेंह अंधियारी
नदी तरंग बन बन पुकारे कहां है सीता, प्यारी सीता.......

भैरवी रुखे अव्वल N 65 6

मैना बोल गई रे
पीतमकी मीठी बोली

न अपना और न बेगाना काम आता है,
न तख्तो ताज यह शाहाना काम आता है,
न रंगो रूप यह काम आता है न जाते सिफात,
न जाम और न पैमाना काम आता है,

मैना बोल गई रे
पीतमकी मीठी बोली,

यह चार दिनकी जवानी दो घड़ीकी बहार,
रहेगी और न रही हुस्न आरज़ीकी बहार
ग़रूरो नाज़ो तकब्बुर यह तमकनत यह गुबार,
कोई बहारका है और न है किसीकी बहार
मैना बोल गई रे
पीतमकी मीठी बोली

भैरवी **रुखे सानी**

जाना होगा बारी बारी
कर ले चलनेकी तय्यारी,

आगे पीछे जाना है सबको क्या है देर सवेर,
सबको है मंज़िल पे पहुंचना मंज़िलका है फेर,
जाना होगा,............
सौदा करके नेकी बदीका जाना होगा अकेला
सौदा कर ले ग़ाफिल बंदे उठ जायेगा मेला
जाना होगा,............
उक्बाका कुछ ध्यान तू करले छोड़ के दुनियादारी,
एसी करनी क्युं करता है कल जिससे हो ख्वारी
जाना होगा............
जो है सो आरामका साथी कौन है दुखका भागी
सो अपना कैसा बेगाना झूटा सब बैरागी
जाना होगा............

N 6174

गज़ल रुखे अव्वल

दिलमें रहे कि मेरे जिगरमें मकीं रहे।
दोनों जगह में नाविके जाना कहीं रहे।
मश्के सितम करो मगर इतना तो सोच लो।
किसपर जफा करोगे अगर हम नहीं रहे।
हस्ती हमारी हस्तिये ना पायेदार थी।
दुनिया उसी तरह है मगर हम नहीं रहे।
लाये थे आंसुओंका मुकद्दर लिखाके हम।
तेरी नज़र से गिर के कहीं के नहीं रहे।

गज़ल रुखे सानी

जैसे दरपर्दा रहा करते हैं नगमे साज़ में।
यूं तेरी आवाज़ पिन्हां है मेरी आवाज़ में।
हक यह है लफ्जे अनल हक कारे इन्सानी न था।
तेरी ही आवाज़ थी मनसूर की आवाज़ में।
जब मुझे कैदे कफसमें आशियां याद आगया।
रह गये बाजू फड़ककर हसरते परवाज़ में।
क्या खबर, उनको गिने जाते हैं तारे किस तरह
शामसे, जो सुबह तक रहते हों खाबे नाज़में

गज़ल रुखे अव्वल P 106

मज़ा आजाय साकी अबर हो पहलू में दिलबर हो।
सुराही हो लिये गुलगूं हो मीना और सागिर हो॥
हमारे कत्लका सामान यह सब ऐ सितमगर हो।

कटारी हो छुरी हो तेग़ हो पैकां हो खन्जर हो ॥
मेरा दिल शीशाये नाजुक है तुम हो संग दिल ज़ालिम ।
मुहब्बत वह करे तुमसे कलेजा जिसका पत्थर हो ॥
उफ़ अपना क़दम हरगिज़ नक़ाहतसे नहीं उठता ।
गुज़र मुझ नातवांका कूचाय जानांमें क्योंकर हो ।

गजल रुखे सानी

ज़बाने हालसे यह कह रही हैं हिचकियां मेरी ।
दमे आखिर है सुन्नेवाले सुनले दास्तां मेरी ॥
चमन छूटा मिली कैदे क़फ़स और आशियां उजड़ा ।
बहार आनेसे पहले हो गई बरबादियां मेरी ॥
क़फ़समें कैद हूं लेकिन चमकती है जहां बिजली ।
नज़र बे साख़ता जाती है सूये आशियां मेरी ॥
हुआ दो हिचकियोंमें ख़त्म सारी उम्रका किस्सा ।
ज़रूरतके मुआफ़िक़ मुख्तसर थी दास्तां मेरी ॥
क़दीर इस तरह आख़िर ज़िन्दगी कबतक वफ़ा करती ।
ज़माने भरके ग़म और एक जाने नातवां मेरी ॥

N 6416

नाच रुखे अव्वल

चश्मे पुरनम, आह बर लब दरदे उल्फत दिलमें है,
साथ मेरे मेरा हर हमदर्द भी मुशकिलमें है,
आरजू अरमां तमन्नायें उमीदें हसरतें,
इश्ककी छोटी सी इक दुनियाँ हमारे दिलमें है

कटारी हो छुरी हो तेग़ हो पैकां हो खन्जर हो ॥
मेरा दिल शीशाये नाजुक है तुम हो संग दिल ज़ालिम।
मुहब्बत वह करे तुमसे कलेजा जिसका पत्थर हो ॥
उफ़ अपना क़दम हरगिज़ नफ़ाहतसे नहीं उठता।
गुज़र मुझ नातवांका कूचाय जानांमें क्योंकर हो।

गजल रुखे सानी

ज़बाने हालसे यह कह रही हैं हिचकियां मेरी।
दमे आखिर है सुन्नेवाले सुनले दास्तां मेरी ॥
चमन छूटा मिली कैदे कफ़स और आशियां उजड़ा।
बहार आनेसे पहले हो गई बरबादियां मेरी ॥
क़फ़समें कैद हूं लेकिन चमकती है जहां बिजली।
नज़र बे साख़ता जाती है सूये आशियां मेरी ॥
हुआ दो हिचकियोंमें ख़त्म सारी उम्रका किस्सा।
ज़रूरतके मुआफ़िक़ मुख्तसर थी दास्तां मेरी ॥
क़दीर इस तरह आखिर ज़िन्दगी कबतक वफ़ा करती।
ज़माने भरके गम और एक जाने नातवां मेरी ॥

N 6416

नाच रुखे अव्वल

चश्मे पुरनम, आह बर लब दरदे उल्फत दिलमें है,
साथ मेरे मेरा हर हमदर्द भी मुशकिलमें है,
आरजू अरमां तमन्नायें उमीदें हसरतें,
इश्ककी छोटी सी इक दुनियाँ हमारे दिलमें है

आपका था तीर जबतक आपकी चुटकीमें था,
अब तो मेरी मलकियत यह है कि मेरे दिलमें है,
देखता क्या हूं रहे उल्फतमें मिट जानेके बाद,
पांव जिस मंजिलमें रक्खा था उसी मंजिलमें है,

नाच रूखे सानी

कदीर जीके मुझे इसलिये खुशी न हुई,
कि जिन्दगीके तरीकेसे जिन्दगी न हुई,
किसीने दरदे मोहब्बत अता किया एसा
कि चारागर की जरूरत मुझे कभी न हुई,
दमे अखीर मेरा सर था उनके जानु पर,
मजेका वक्त जब आया तो जिन्दगी न हुई,
नफ़सकी आमदो शुदका कुछ एतवार न कर,
यह वह हवा है जो वापिस हुई हुई न हुई,

मिस अंगूरबाला

गजल रूखे अव्वल . N 6479

फिर अब्र उठा फिर फूल खिले निकले क्या कोइ क्या मैखाने से
छलकी भी इधर पैमाने में छलकी भी उधर पैमाने से
डालो यह असर ए बादा कशो खिच आयें यहांतक शम्शो कमर,
यह चलते हुये सागर दोनों क्यु दूर हैं मैखानेसे
अहबाब छुटे घरबार छुटा ए जोश जनूं जाना ही पड़ा,
खुद खाना खराबी आई है लेने को मुझे वीराने से

ए नोह फकत मैखाने तक क्या जोश मये मदहोश रहा,
तूफान उठा मस्ती का वहीं छलकी यह जहां पैमाने से

गजल **रुखे सानी**

रूदादे शौके शरहे मोहब्बत न पूछिये,
बस जान जाइये मेरी हसरत न पूछिये,
काबा यही है दहर यही तूर भी यही,
इस बे दिलीसे दिलकी हक़ीकत न पूछिये,
मरनेका खौफ कब्रका ग़म हश्रका ख्याल,
जो जिंदगीमें है वह मुसीबत न पूछिये,
फिलहाल नोहको है नई धुन लगी हुई,
शेरो सुखनमें हाले नबव्वत न पूछिये,

नाच **रुखे अव्वल** N 6390

ठुमक चाल लचक लचक सुन्दर मोहन आवे
कदम तले ठारो सखी बांसरी बजावे।
आये देखो नन्दलाल-संग लिये बाल ग्वाल
ऐसो चित चोर सखी सबका मन लुभावे
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे-गोपिनके मनके मोहे
जमोर ऐसो निठुर श्याम मोरे मन ना भावे।

नाच **रुखे सानी**

मोहे कान्हा ने घेर लई कुन्जन में —
चूरियां करकाय दीनी—चोली मसकाय दीनी

मिनती करती मैं तो हारी=माने नहीं मोरी बात अनारी
जाय जसोदा से मैं तो कहुंगी-जमीर प्या अबमें

मिस जोहरा जान

कव्वाली **रुखे अव्वल** **N-6578**

लोग कहते हैं मोहब्बत में मजा मिलता है,
दिल गरिफतारे बला हो तो पता मिलता है,
वह नहीं मिलते तो राहत नहीं मिलती दिलको,
उनसे मिलता हुं तो इक दर्द नया मिलता है,
इन बुतोंका तो निशाने कफे पा भी न मिला,
हम तो सुनते थे मोहब्बतमें खुदा मिलता है,
यह किसी अहले वफाकी है 'वली' क़ब्र ज़रूर,
जिसके हर ज़र्रे में इक दर्से वफ़ा मिलता है,

कव्वाली **रुखे सानी**

मेरी नौजवानीके जाने के दिन हैं,
खुदा से मुहब्बत लगाने के दिन हैं,
मेरी ख़िलवतों को तू अबाद करदे,
बहार आई है तेरे आने के दिन हैं,
सरे बज्म पीरी में पीना बुरा है,
यह ख़िलवत में पीने पिलानेके दिन हैं,
वली इन दिनों आप को चाहते हैं,
सता लीजियेगा सताने के दिन हैं,

गजल **रुखे अव्वल** N 6599

हर अदा उनकी क़ज़ा से कम नहीं,
मेहरबानी भी जफा से क़म नहीं-कम नहीं कम
कोसते हैं वह मुहब्बत से मुझे, कोसना उनका दुआ से कम नहीं
कम नहीं कम नहीं
अब्रमें पीते हैं साकी हम शराब, रूस्याही भी घटा से कम नहीं
कम नहीं कम नहीं
ए परी साया तेरी दीवार का, सायाए वाले हुमा से कम नहीं
कम नहीं कम नहीं

गजल **रुखे सानी**

क्यूं वस्ल का आशिक से इकरार नहीं होता
हक़दारे मोहब्बत क्या हक़दार नहीं होता
उस मौन के मै सदके जो आये तेरे हाथों
इस शान का मरना भी हरबार नहीं होता
सब अपनी मुसीबत बन जाते हैं बेगाने
कोई भी बक्ते ग़म ग़मख्वार नहीं होता
ग़ैरों से तेरे वायदे होते हैं वफा लेकिन
इक वस्ल का मुझसे ही इक़रार नहीं होता

गजल **रुखे अव्वल** N 6461

आये और दे गये वह गैर की तस्वीर मुझे
अब बताए कोई इस ख्वाबकी ताबीर मुझे

किसी पहलू किसी करवट भी नहीं अबतो क़रार
चैन लेने नहीं देती खलिशे तीर मुझे
वह जो रहता है हमेशा मेरी शहे रगके करीब
उससे मिलनेकी बतादे कोई तरकीब मुझे
तूर पर हज़रते मूसा ने जो देखा था कभी
वही जल्वा नजर आया तहे शमशीर मुझे

गजल **रुखे सानी**

क्या कहें हिज्र में क्या क्या दिले बेताब बना
कभी शोला कभी बिजली कभी सीमाब बना
हर वह आंसू जो तेरी याद में आंखों से गिर
दुरे खुश आब बना गौहरे नायाब बना
जिसकी हर जरबसे हो ज़मज़मये कुम पैदा
साजे दिलके लिये ऐसी कोई मिज़राब बना
ता बिठायें वह तुझे दीद व दिल में नाज़िश
दीद औ दिल को तू फ़रशे रहे अहबाब बना

दादरा **रुखे अव्वल** N 6495

छोटेसे बलमा मोरे अंगनामें गिल्ली खेले
अंगनामें गिल्ली खेले, छोटेसे..........
करने रसोई गई यूं कहे गोदी में लेले,
मारूंगी फुलकों की मार वह तो हंसके बोले
पनियां भरन गई यूं कहे गोदी में ले ले,
मारूंगी रसियन चोट वह तो हंसके बोले

अपनी सेजरिया गई यूं कहे गोदीमें ले ले
मारूंगी जोबनाकी मार वह हंसके बोले, छोटे से.......

दादरा

रुखे सानी

अंधेरिया हो रात सजन रहियो कि जहियो,
सुरमा असहियो मिस्सी असहियो,
जोबन मजेदार सजन रहियो कि जहियो,
लहंगा फटी है साड़ी यही है,
अरे कमर लचकंदार सजन रहियो कि जहियो,
चुन २ कलियां सेज बिछाई,
पलंग लचकदार सजन रहियो कि जइयो,
अंधेर...........

रुखे सानी

न मारो रे लग जायेंगी नैना,
बरछी कटारी है नैन तुम्हारी,
न ताको रे लग जायेंगी नैना,
बड़ी २ तेरी मतवाली आबदार आंखें,
वह लुट गई हुईं जिससे कि तेरी चार आंखें,
हिरन मिलाये जो आंखें हो उसका होश हरन,
कटोरे जहर के हैं यह सितम इआर आंखें,

मिस हरीमती

गजल

रुखे अव्वल

N 6505

मेरी आह से अब वह घबरा रहे हैं,
तड़प कर मुझे और तडपा रहे हैं,

कुछ इस बांक पन से वह आज आ रहे हैं
क्यामत बपा है गजब ढा रहे हैं,
यह जुंबिश हवओं से है गैसुओं की,
कि दो सांप शानों पे लहरा रहे हैं,
जवानी के दिन ऐशो इशरत की रातें,
तरक्की पे जोबन है इतरा रहे हैं,

गजल **रुखे सानी**

मेरे कत्ल पे यह छुरी अड़ गई है,
तुम्हारी मोहब्बत गले पड़ गई है,
मोहब्बत मिला देगी मिट्टीमें हमको,
कि उन की नजर से नजर लड़ गई है,
रुकी मेरे लब पर फुगां दिलसे चलकर,
कहांसे निकल कर कहां अड़ गई है,
निकाला था जिसको बड़ी दिक्कतों से,
रगे दिल में वह फांस फिर गड गई है,
खुदा ही करे नूह अब नाखुदाई,
मेरी नाव तूफान में पड़ गई है,

रुखे अव्वल N 6392

मुन्दरी न मारी उतार—मोरे श्याम सुन्दर तारे पय्यां पड़त हूं।
बहियां पकड़ मोरी कर मड़काई—और मसकाई नई चोली।
ऐसो ठिठोली मोहै अब न भावे—पिया दूंगी गाली हजार

छोड़ दे मोहे ओ बेदर्दी—दुखे छोंगरिया मोरी
आश पिया तोरे वल वल जाऊं—मानो इतनी मिनती हमार

रुखे सानी

देखो देखो न छेड़ो मोहे श्याम
मूर्ख तोहे लाज न आई
चोली मसकाई चूड़ियां कड़काई
ठारी देखें बृजभान—देखो देखो
करत ढिटाई ताहे लाज न आई
चावलके चबैय्या सुदामाके भाई
जमीर तोसे अरज यही है
आओ वेग लो बहियां थाम

रुखे अव्वल N 6870

प्या आओ मोहे न सताओ
जिया न जराओ, काहे तड़पाओ, गले लग जाओ
प्या आओ मोहे न सताओ
विन्ती करत पड़ों मैं पय्यां दीहो मोहे दर्शन सय्यां।
कुछ नाहें अब भावे मोहे काहे अब तरसाओ॥
प्या आओ मोहे न सताओ
हमसे पूछो कि शबे हिज्रमें क्या करते हैं
करवटें लेते हैं और आह बुका करते हैं
आप दिन-रात रक़ीबोंमें मजा करते हैं
हम यहां आतिशे फुर्कतमें जला करते हैं

रुखे सानी

आओ अब गरवा लगा लो मोहे प्यारे बलमा
बिरहा अगन तन जरायो
बाला जोबन मेरी बाली उमरिया
सय्या न लेवे सखी मोरी खबरिया
आओ अब गरवा लगालो मोहे प्यारे बलमा
यों दमें मर्ग इलाज दिल नाशाद किया
जबदवासे न चला काम तुम्हें याद किया
रोते रोते अभी आई थी ज़रा मुझको हंसी
आपने फिर वही ज़िक्र दिल नाशाद किया
तुम बिन मोहे कुछ न भावे सूनी सेज पे नींद न आवे
प्याके दर्शन दिखा जिया नाहें सुख पावे
आओ अब गरवा लगालो मोहे बलमा

कव्वाली **रुखे अव्वल** **N 6477**

नाला मौजूं ज़बान दर्दे दिल—क़िस्मए ग़म दास्ताने दर्दे दिल
क्या करे "माहिर" बयाने दर्दे दिल
दर्द खुद है नुकता दाने दर्दे दिल—दर्द खुद करता बयाने दर्दे दिल
काश हो जाती जबाने दर्दे दिल
हो गया ख़ामोश तेरा तिशना काम-एक हिचकीमें हुवा किस्सा तमाम
मुख्तसिर थी दास्ताने दर्दे दिल
गैर क्या जाने जुदाईका मजा—ग़मतो है आशिकको हिज्रे यारक
अहले दिल है कद्र दाने दर्दे दिल

कव्वाली रुखे सानी

तू ने घेर लिया यार मुझे घेरे में

निहाले आरज़ू अब फूल फल नहीं सकता
दिले हज़ीं किसी सूरत बदल नहीं सकता
मरीज़े ग़म कभी करवट बदल नहीं सकता
इन उलझनों से तू हरगिज़ निकल नहीं सकता

तू ने घेर लिया..............

भंवर में ग़म के सफ़ीना तो फंस गया दिल का
निगाहे नाज़ ने लूटा है क़ाफला दिल का
पता निशान तो पहलू से मिट गया दिल का
बताऊं क्या तुझे मैं और माजरा दिल का

तू ने घेर.... ....

मिस आई० एम० शिपली (एमेचर)

भजन रुखे अव्वल N 6511

तू ने मन हर लीनो सांवरिया
सांवरी सूरत लुभाये मनवा, काहे को बरजोरी कीनो
सांवरिया..........

मोर मुकट माथे पे विराजे, जोबन रस मोरा लीनो
सांवरिया.........

दोहाः— कारी रैन अंधेरी ऐसी, मन मोरा धड़काये
पीहू २ बोले पपीहा, जी मोरा तड़पाये

जाओ जी कान्हा मोहे न सताओ, काहे को दुख मोहे दीनों
सांवरिया..........

भजन रुखे सानी

मोरा छैल छबीला सांवरिया मोहे तट पर दरस दिखा गयो रे
पनघट पर हंस बतियां कीनी, बिरहा की अगन बुझा गयो रे

कंसने जुल्मो सितम पर जब कि बांधी थी कमर
चीर पर कृष्णा के थी पापी दुशासन की नज़र
कष्ट में सीता ने की फ़रयाद जब दिल थाम कर
ग्राह ने जब मारना चाहा था गज को घेर कर

इतने में रूप बदल नटवर, इन सब की लाज बचा गयो रे
मौरा छैल छबीला साँवरिया...........

बैर झूठे भीलनी ने जिस घड़ी अरपन किये
डरते डरते जब सुदामा ने इन्हें चावल दिये
साग बासी जो बिदुर लाये थे भगवन के लिये
देख कर श्रद्धा को इन सब की वह प्रसन्न हो गये

फिर प्रीत की रीत सिखा मनहर, इन सबका सबकुछ खागयोरे
मोरा छैल छबीला सांवरिया...........

ग़ज़ल रुख़े अव्वल N 0554

फेर कर मुंह सितम गर रवाना हुवा
हाए दिल तीरे ग़मका निशाना हुवा
हिज्र में राहते जां कहानी हुवी
दिल का सब्रो सकुं इक फसाना हुवा
मरगया सोजे फुरकत में बीमारे ग़म
मौत का तो फक़त इक बहाना हुवा
बुलबुले दिल न हो मुजतरब इस कदर
नज़रे आतिश तेरा आशियाना हुवा

ग़ज़ल रुख़े सानी

ज़ाम भरकर जो पिलादे कोई मैनोश मुझे
है यक़ीं हश्र तक आये न कभी होश मुझे
देख इन मस्त निगाहों से न देख आह न देख
तेरे कुरबान ज़रा आने तो दे होश मुझे
अपने हमशक्ल से कहते हैं वह आईने में
नाम तू अपना बता सूरते ख़ामोश मुझे
क्या शिकायत हो ज़माने में किसीकी नाजिश
अपने हो दिलने किया जबकि फरामोश मुझे

भजन रूखे अव्वल N 6521

चलना है अब दूर मुसाफिर क्या सोवे, दूर मुसाफिर..........
चेत २ नर सोच बिचारे वहुत नींद मत सोवे मुसाफिर.......
रास्ता दूर विकट है झाड़ी
अकेला चलना होवे, चलना हैं दूर.......
काम की बारी मुख मत मोड़े, होशियार उमर मत खोवे
संग साथ तेरे कोई न चलेगा
तू रसते में सावधान होवे, चलना......
नदिया गहरी नाव पुरानी किस विध पार तो होवे.........
कहत कबीर सुनो भाई साधो
ब्याज के धोके मूल मत खोवे, चलना......

भजन रूखे सानी

अमृत से बढ़के मीठी है वाणी कबीर की
है अहले दरदके लिये चुटकी फकीर की
आंसू रवां है जोशे अक़ीदत में ए शरर
माला गले में डाली है आंखोंके नीर की

समझ बूझ दिल खोज प्यारे आशिक होकर सोना क्या
जब नैनों से नींद गुवाई तकिया लैफ बिछौना क्या
रूखा सूखा दाम का टुकड़ा चिकना और सलौना क्या
कहत कमाल प्रेम के मार्ग सीस दिया फिर रोना क्या

ग़ज़ल रुख्ने अव्वल N 6493

चश्मे नरगिस में भरे अश्क जों ढलने के लिये
दिल के अरमान भी जाग उट्ठे निकलने के लिये

हाय किसमतरह थमेगी दिले बिस्मिल की तड़प,
मेरे अरमान मचलते हैं निकलने के लिये,

खंजरे नाज से दिल चीरके फरमाने लगे,
रास्ता कर दिया अरमान निकलने के लिये

एक बस एक ही काफी है मोहव्वत की नजर,
मेरी तकदीर के लिक्खे को बदलेने के लिये,

ग़ज़ल रुखे सानी

मस्त आंखों से मुझे देखके बरबाद न कर
बमुहावा यह सितम ए सितम इजाद न कर,

आह को रोक जिगर थाम दमे दरदे फिराक,
राज अफशां कहीं हो जायेगा फरयाद न कर,

कुछ तो खातिर रहे मलहूज मेरी हसरत की,
सहरे उमीद के धोके से तू आजाद न कर,

लूट ली ताबे शकेबाह तेरे गमजों ने,
तरज अब और सितम की कोई इजाद न कर,

मिस ऊषारानी

ग़ज़ल **रुखे अव्वल** N 6376

चमन में फूल थे बुलबुल थी आशयाना था
बहार का भी जमाना अजब जमाना था
शाबाब जिसकी है तसवीर अबतक आंखों में
अजब कश मकशा शौक का जमाना था
सरे नयाज़ सिरा झुक गया था सिजदे में
मगर यह ध्यान नहीं किसका आशयाना था
कफ़स के ख्वाब ने तकलीफ़ और पहुंचाई
खुली जो आंख चमन था न आशयाना था

ग़ज़ल **रुखे सानी**

यूं बतदरीज अदा रस्म वफा होती है
पहले दिल जाता हैं फिर जान फिदा होती है
तू खुदा है तो मुझे बख्श दे ऐ दावरे हश्र
मैं जो बन्दा हूं तो बन्देसे खता होती है
एक दिन वह था कि आई थी मेरे जिस्म में रुह
एक दिन यह है कि तन से जुदा होती है
हजरते मौज भी कशती का भरोसा न करैं
मौज तूफाने हवा जिसकी बला होती है

N 6528

ग़ज़ल

रुखे अव्वल

यह मिला इश्क में मिटने का नतीजा मुझको
याद करती है तेरे नाम से दुनिया मुझको
ज़र्रे २ पे अदा है सिजदा करना मुझको
कूये जाना को बना देना है कावा मुझको
दरदे दिल दागे जिगर ज़रदिये रुख दीदाए तर
तेरी उल्फत में अतीये मिले क्या २ मुझको
लफ्ज़ दिल खाक पे लिख २ के मिठा देता था
याद है तेरे लड़कपन का जमाना मुझको

ग़ज़ल

रुखे सानी

उदास बादे मुखालिफ से रंग हैं गुल के
वफूरे ग़म से उड़े क्यों न होश बुलबुलके
हया है शर्म है या ना शफ्ता गुंजा है
वह मुझसे बात जो करते नहीं कभी खुल के
यह पारा हाय जिगर है कि अश्क़ के टुकड़े
निकल रहे हैं जो आंखों से ग़म में घुल२ के
कहां उमीद रिहाई की ए सगी मुझको
असीर हज़रते दिल है किसी की काकुल के

मिस सीतादेवी

नाच रुखे अव्वल N 6397

तोसे मिलूंगी तोसे मिलूंगी आऊंगी आधीरात
ग़ममें तुम्हारे ए जी पियारे जिया चला मौत घाट
कारे करूं मैं ए री सखी री पिया नहीं आये हाय
बिरहा नगरमें अब न रहूंगी ठानी है दिलमें यह बात
बिजली कड़के बादल गरजे जिया मोरा चला जाए
सास ननद मोरी जनमकी बैरन छोड़ूंगी अब उनका साथ
पास पड़ोसी जाग उठेंगे अबरार पिया हाय
छन छन छन छन पायल बाजे कैसे चलूं तोरे साथ

नाच रुखे सानी

मोरी सूनो पड़ी है सेजरिया मोरा श्याम कन्हैया आए
ज़रा लोरियां गाके सुला तो सही मोरा ग़ममें जिया जाय
ए दिल तू अबस घबरावत क्यूं मोरा श्याम कन्हैया आये
मैं राहमें वाकी पलकें बिछाऊं मोरा प्यारा आये
मोरा चैन गया मोरी नींद गई कागा लादे पीकी खबर-अरे लादे...
है ग़ममें तुम्हारे हाल बुरा दरशनको जिया जाए
तोहे घटमें रखूं कभी जाने न दूं अबरार पिया तू आतो जरा
मैं दरदे जिगरसे तड़फत हूं हमको जिया खाए
वही लब पे है तेरा नाम पिया ज़रा मीठी मुरली बजाके सुना
ऐ बादे सबा तू देदे खबर कि मोरा जिया जाए

रुख़ अव्वल

N 6375

लेलो चूड़िया धानी चूड़िया
अवके बालम और पहनादे धानी धानी चूड़िया
ऐ पिया नई जवानी,
चूड़ियां हो गई अब पुरानी
गोरीं गोरी मोरी बय्याँ हरी हरी धानी चूड़ियां
काली पीली न भावे
अबरार मोरा जिया जावे
नैना लगाये मन ललचाये दिखला जानी चूड़िया

रुख़े सानो

लो मेंहदी लाल लो मेंहदी लाल
रंग गुलाल गुलाबी है लाल
हरी हरी है लाल परी है गेंदवा गुले अब्बासी डाल
सेव जैसे ईरानी गाल
है लाल चुन्दरया प्यारे हाथों पावों में मेंहदया
जोबन का यार कैसा उभार सुन्हैरे घुंगवा वाल
जान मन तन मन लाल ही लाल
यही है हीना जो चमनमें हूं लाई सारे जगत में सोहरत मचाई
तुर्बत हूं अबरार में कल न आई
बागों की हूं रानी करती हूं साला ऋंगार—गुले लाल हूं में लाल

मिस मानिकमाला

N 6526

नाच **रुखे अव्वल**

लागी नजरया कटारी हाय राम........

तुम्हारे तीर नज़रने कुछ ऐसा वार किया,

कि दिलके टुकड़े उड़ाये जिगर फिगार किया

किसको बुलाऊं किसको दिखाऊं,

लागी नजरया कटारी हाय राम, लागी

सुनाऊं किसको सुने कौन माजरा मेरा,

सिवा तुम्हारे कोई दूसरा सुनेगा क्या

प्रेम कहानी प्रीतकी बानी,

आओ सुनो मैं वारी हाय राम, लागी

नाच **रुखे सानी**

पिया जाऊं मैं तोपे वारी,

तोरे नैन बान आह मोरे हो गये दिलके पार

मोहे न सिताओ गरवा लगाओ जिया न जलाओ

ज़मीर पिया तोपे बल २ जाऊं

तन मन धन सब तोपे वारूं

घड़ी पल छिन पड़े न चैन तोरे बिन पिया प्यारे

N 6564

गज़ल रुखे अव्वल

पिला दे बादए-गुलगूं का जाम कह देना
तड़प रहा है कोई तिशना काम कह देना
अगर कबूल करें वह सलाम कह देना
किसी ग़रीबका उनसे पयाम कह देना
गुज़र हो कूचए दिलबरमें ये सबा जो कहीं
शबे फिराकका किस्सा तमाम कह देना
जो नाम पूछें तो बस दर्द नाम कह देना
इक आह भरके हमारा सलाम कह देना

गज़ल रुखे सानी

हम तो साकीसे आंखें लड़ाये जायेंगे
यूंही इस दिलको बेखुद बनाये जायेंगे
यूंही झूमेंगे साक़ीका ले लेके नाम
यूंही पी पी के हम रंग लाये जायेंगे
नहीं जबतक बरायेगी अपनी मुराद
यूंही मिन्नत पर मिन्नत बढ़ाये जायेंगे
कभी आने न देंगे तुम्हें दर्द होश
यूंही साग़िर पे साग़िर पिलाये जायेंगे

मिस महबूबजान भूरी (जावरा)

ख्याल रुखे अव्वल N 5796

झुलन डला दे आई ऋतू सावन की
काली पीली वह बदरी छाई बरसातको आई प्यारी
देखो महेरबान करके ध्यान हे सगरों सभा
बृजकी नारी आई झुलनको बारी बारी

पीलू रुखे सानी

जियरा हमारा मानत न
तू जारे जारे कागा पिया से जइओ कहा
वा दिनसे पिया बिदेशवा सिधारे
वा दिनसे मोहे नींदना आवे
कहा करूं अरी एरी सखीरी
अजहुं पिया नहीं आये ॥ १ ॥

कुमारी जूठिकाराय

भजन रुखे अव्वल N 9704

राणाजीमें तो गिरधरके घर जाऊं
गिरधर हमारो साचों, प्रीतम देखत रूप लुभाऊँ
रैन पड़े तब ही उठ जाऊं, भोर भय उठ आऊं
रैन दिन वाके संग खेलूं, जीव रझे जीव रिझाऊं

जो वसतर पहिरावे सोई पहिरूं, जो दे सोई खाऊं
मेरे उनके प्रीत प्राणीमें उन बिन पल न रहाऊं
जहां बैठावे तहां ही बैठूं, बेचे तो बिक जाऊं
मीराके प्रभु गिरधर नगर बार बार बली जाऊ,

भजन **रुखेसानी**

मैं तो सांवरके रंग राती
मैं तो सांवरके, मैं तो सांवरके, मैं तो सांवरके रंग रातो
जिनके पिया परदेस बसत हैं, लिख लिख भेजत पाती
मेरे पिया मेरे हृदय बसत हैं, गूंज करूं दिन राती
और सखी मद पी पी माती मैं बिन पिये मदमाती
हरी प्रेमकी मैं मद पियूं छकी फिरूं दिन राती
नैहर बसूं ना बसूं सास घर गुरु संग लगाती
दासी मीराके प्रभु गिरधर हरी चरणांकी मैं दासी,

सवितादेवी

फिल्म **रुखे अव्वल** **N 5809**

निसदिन श्याम २ जपती, मैं अपने पिया पर मान शान अर्पन करती
प्रेम नदिया हृदय उछलतो, हंसती, खेलती रमती निसदिन....
कैसी सुरतिया प्यारी मैं हूं बनी मतवारी
मोरे जियाको लगन छब न्यारी, मन तड़फत ललचात वारी
जाऊं वारी औ बिहारी पिया चरण पे तन मन हरती, निसदिन

फिल्म रुखे सानी

भारी प्यारी गय्या ओ दूधकी तू दिलवय्या, दिलवय्या प्यारी गय्या
आचल तुझको चाय पिलाऊ, भूकी हो तो केक खिलाऊ
लाडली है मेरी गय्या मेरी गय्या, प्यारी गय्या
आचल तुझको साड़ी पहनाऊं पतली "टो" का बूट दिलाऊं
तुझपर बल बल जय्या, बल जय्या, प्यारी गय्या

मिस शान्ता एप्टे

फिल्म रुखे अव्वल N 5811

रात आई है नया रंग जमानेके लिये।
लेके आरामका पैगाम जमानेके लिये ॥
गुन गुनाती हुई धीरे से जो आती है सबा।
थपकियां मां की तरह देके भुलानेके लिये ॥
कैसी बेनज्मीसे बिखरे हैं यह लालो गौहर।
आसमां क्या तेरी दौलत हैं लुटानेके लिये ॥
क्या ही अच्छा है यह बचपनका जमाना भी यहां।
मौज करनेके लिये खेलने खानेके लिये ॥

फिल्म रुखे सानी

कमसिनीमें दिल पे ग़मका वार क्यों।
वा ए किस्मत ! पास गुलके खार क्यों ॥

टूट जब उम्मीद ही अपनी गई।
बन्ध रहा है आंसुओंका तार क्यों॥
दिल हुवा टुकड़े तो पहिले वार में।
फिर भी तीरोंकी यह है बौछार क्यों॥
'वीर' इस दीवानगी में है मज़ा।
लोग कहते हैं इसे अज़ार क्यों॥

मिस माया भट्टाचार्य (इलाहाबाद)

मालकौस **रुखे अव्वल** N 6527

सुन्दर बदन के–मौडन दीपन
मनरजंन काहे जात छिपे रे
निकसी कि सुन्दरका कहे लजात
इब्राहीम मुख चन्द्र चकोरे,

आड़ाना **रुखे सानी**

काली नाम चिंतन करो रे मेरे मन
जो चाहत हो सुख सुमति, वेद विधि कहत
सिद्ध सनकादी ब्रह्मादि समाधि धर
ध्यान तब करत अति अगम गति लहत
काली नाम चिंतन······

मिस तारा

N 6401

गजल रुखे अव्वल

मुझे शाद रखना कि नाशाद रखना-हमेशा योंही सिरफ बेदाद रखना
मगर खानये दिल को आबाद रखना
न भूलेंगी बाहम मोहब्बत की बातें-मोहब्बत की बातें वो उल्फत कीबातें
रहेंगी सदा याद यह याद रखना
तेरे हिज्र की सख्तियां जो उठाए-वोह बंदा जो बंदा तेरा बनके आए
न उसको तहे तेग़ बेदाद रखना

गजल रुखे सानी

वहार आई के कोई झूमता मस्ताना आता है
घटा आती है या उड़ता हुआ मैखाना आता
गरेबां चाक एामन टुकड़े टुकड़े तौक़ गरदन में
सरे मेहशर तेरा किस शान से दीवाना आता
अज़ब हैरत फिज़ा नज़ारा है दरबार कातिल का
लिये सर हाथ में हर इक पै नज़राना आता है
कभी ऐ नूर बूतख़ाने में काबे को यहां देखा
कभी काबे में पोशीदा नज़र बुतखाना आता है

मेहबूबजान (शोलापुर)

सेहरा रुखे अव्वल N 5767

बांधा जिस वक्त जवां वख्तके सरपर सेहरा।
परतवे रूपसे बना महेरे मुनव्वर सेहरा ॥ १ ॥
तार मुस्कैत्के फुलों में जो है इतरे हिना।
दामने गीती को करता है मोअतर सेहरा ॥ २॥
इस्कु चमकाया कुछ ऐसा तेरे रुखसारोंने।
बनगया हुस्न दिल अफरोज का जेवर सेहरा ॥३॥
तेरी सुरतपे भी, और तेरे मौजुमपर।
कैसा खुशरंग दिल आवेज है खुशरत सेहरा ॥ ४ ॥

सेहरा रुखे सानी

रुखे रोशनपे बंधे तारे नज़रका सेहरा।
हो जुदा सबसे मेरे इश्के कमरका सेहरा ॥ १ ॥
आज इस फुलूसे चेहरे पे कोई बांधेगा।
कहदूं मालन से बनावे गुलेतर का सेहरा ॥ २ ॥
हो मुबारक येही मां बाप को पिसर की शादी।
रोज़ दिखलाये सदा नुरे नज़रका सेहरा ॥ ३ ॥
फज़ल ख़ालिक से ये शादी की घड़ी आई है।
हो मुबारक तुम्हें अब लख्ते जिगरका सेहरा ॥४॥

भैरवी **रुख़े अव्वल** **N 5740**

हम पर हो जाये महर की नजरया-हम पर हो जाय।
महर की नजरया हो करम की नजरया ।। हम पर ।।
तूही महरवान-कुल हो महर बान-तेरे करमकी तनक नजरया ।।हम०।।

भैरवी **रुख़े सानी**

कटत ना हें सजनी-प्या बिन सगरी रैन
देखो सखी आज लागे मोरे नैन
अपने महरवान को कोई आन मिला ओ
नहीं पड़त मोको चैन ।। कटत ।।

मिस प्रमोदा

नाच **रुख़े अव्वल** **N 6480**

देखो आई है गवालिन चंचल चपल कैसी आन
हाथ में गगरी दुधवा बेचन लपक झपक से जात रही थी
करेजवां में मार गई नैनवा बान.........
मिनती मोरी मानो सय्यां, छोड़ो २ अबरार मोरी बहियां
दुधवा बेचूंगी न उधार, नहीं करो रंग रलियां
मानत नाहीं कैसी ढीट जान गई तोरी चतुरिया......
नाहीं भावे मोहे तकरार में पड़त हूं तोरे पय्यां

नाच रुखेसानी

जमना किनारे श्याम कन्हैया घूरत मोरे जोबना फूल
नैन रसीले मै के प्याले माली बन कर करे हैं मोल
मुख से न बोले श्याम रंगीले
बन गई नारी किसके पाले
जोरा जोरी बहियाँ मरोरी, जिया डरपावे काहे री बोल,
मानत नाहीं ढीट कन्हैया, राखू कैसे जोबना संभाल,
लिपट चिपट मोरा जोबन लूटा, झट पट दी मोरी अंगिया खोल,
अब लाज राखो मोरे घूंघटको राह कठिन है पनघट की
एसा जमाना अबरार आया सुनत नाहीं कोई अच्छी बोल

मिस शाहला

नाच रुखे अव्वल N 6481

मेरे जोबन पे शैदा जमाना रे
मेरी चितवन का घायल है सारा जहां,
जिस पर ताकु निशाना वह होवे निशा,
मेरी आंखों का मारा जमाना रे
ऐसी चितवन से परहेज करती हूं मैं
तेरी ललचाई नजरों से डरती हूं मैं
मोहे बांके तेवर न दिखाना रे

घूरते हो तुम एसे कि खा जाओगे
मेरे जोवन को लुक्मा बना जाओगे
मोहे देखो नजर न लगाना रे
गैर के भी घर में तो जाती नहीं
एसे भरों में तेरे मैं आती नहीं
बातें एसी न मुझ से बनाना रे

नाच रुखे सानी

हाय २ दइया पायल मोरी बाजे
कोठा चढ़ा सय्यां बरफी दिखावे, हाय २ दइया लालच मोहे लागे
" " " ढेला " " " चोट मोहे लागे
" " " सेजन बिछावे " " शरम मोहे लागे
" " " सौतन बतावे " " जलन मोहे आवे
" " " रंडी बतावे " " " " "

लोरी रुखे अव्वल N 6450

ओ प्यारे देवरा दोपट्टा कहां भूल आई
पान खावें दोरनियां मोरी छाली मोरे देवरा
मै विचारी कत्था खाऊं चूना चाटे सय्यां
विसकी मोरी दोरनिथां पीवे ब्रांडी मोरी देवरा
मैं विचारी सोडा पीऊं ताड़ी पीवे सय्यां
गाड़ी चढ़े दोरनिया मोरी मोटर मोरे देवरा
मैं विचारी चढं पालकी रिकशा खैंचे सय्यां
लड्डू खाए दोरनिया मोरी पेड़ा मोरे देवरा
मैं विचारी रवड़ी खाऊं पत्ता चाटे सय्यां

लोरी रुखे सानी

आजा २ री निन्दिया तू आजा, मुन्ने भय्या को निन्नी कराजा
लेके गोदी में अपनी सुलाजा, प्यारे बच्चाको झू २ झुलाजा
जाके अन्ना को कोई बुलादे, आके मुन्ने को दू दू पिलादे
कहदो आया से कपड़े पहना दे, कंघी चोटी करे मुंह धुलादे
देखेगा जादूघर भय्या जाके, नाना अब्वा का मोटर मंगा के
होहो भई होहो भई बड़ा ही प्यारा है बबवा कहां यह रोता है....
नाना जुज्जु खबरदार बिब्वा सोता है, आजा री निंदिया तू आजा....

मिस मनादा

ग़ज़ल रुखे अव्वल N 6449

बुतों ने मिलके मारा है यह कैसी मेहरबानी से
बहाया दिल को टुकड़े करके अश्कों की रवानी से
न कुछ मन्तर चला इन पर न जादू कारगर देखा
नज़र मिलते ही दिल को ले लिया जादू बयानीं से
हमारी आह से लरजां में आया गुम्बदे गरदूं
लहद के सोने वाले जाग उठे नोहा ख्वानी से
"उसामा" ग़म की सूरत मेरी ख़ामोशी से ज़ाहिर है
बयाने हाल खुद जारी है मेरी बे ज़बानी से

गजल रुखे सानी

रंज का खूगर न था दिल जां पे बन आई न थी,

चोट दिल पर दरदे उलफत की कभी खाई न थी।

ले के दिल अफ़सोस तुम ने कैसी आंखें फेर लीं,

ऐसे बेगाने बने गोया शनासाई न थी।

वह भी क्या अच्छा जमाना था कि तुम नादान थे

भोली भाली शक्ल थी बातों में चतुराई न थी

अब "उसामा" दिल हर एक माशूक पर आने लगा,

थी तबियत शोख लेकिन इतनी हरजाई न थी।

मिस लक्ष्मीबाई (बड़ोदा)

होली रुखे अव्वल N 5739

शाम होरी खेलत ब्रज में-मेरी चुन्दरी भीजोय दीनी

कुसुम के रंग की भर पिचकारी मारत ब्रज से

सारङ्ग रुखे सानी

गगर शीर भारी हो मोरी गुय्यां

हूं जल जमाना भरन जात ही

जमना जल भयो खारी मोरी गुय्यां

जिल्हा रुखे अव्वल N 5803

पिया को संदेसा मोरा कहीयो ज्या।

ज्या ज्यारी ज्यागे जागे ॥ धृ० ॥

जब से गये पिया परदेस।

तब से निन्द आवे ॥ १ ॥

भजन रुखे सानी

मोहे नीके लागे स्हाय सांवरी भाके बन्सी ॥ धृ० ॥

मोर मुकुट पितांबर सोवे गले बैजयन्ती माला।

बृन्दाबन में गँवा चरावे कांधे कमली वाला रे ॥ १ ॥

कृष्णा बाई रामदुर्गाकर

गजल रुखे अव्वल N 5736

दुश्मन मुझे बुरा कहे किसकी मजाल है।

मैं सुनके चुप रहूं ये तुम्हारा ख्याल है।

राजी हूं रजा में तुम्हारे खुशी में खुश।

वेहतर हयाल है जो तुम्हारा ख़याल है।

इतनी हिसीतो बातयी उससे हम मिट गये नजर

उसे कह दिया मुझे तेरा ख़याल है ॥ १ ॥

तराना रुखे सानी

उद तन देरेना तन्न रेना । तदारे तदरे दान्नी
उदानी दानी तदानी ॥ धृ ॥ तदेरना देरेना
दीयानरे तदारे तद्रे दानी धा किडतक धी
किडतक तिरकिट तक धुम किडतक धित्ता धा ।

गन्धारी हन्गल

जोगिया रुखे अव्वल N 5760

हरीका भेद न पायो—रामा
जिया में वसा वाको नाम रे
आपये पावे, आपये बोल, अपये रखवाल हमार रे

खम्बावति रुखे सानी

हरी खेलत ब्रज में होरी गोपियनके संग
हाथ लिये भर पिचकारी केसर रंग मद भरे
धन्य भाग है हरी संग—भयो वांछित आनन्द

दुर्गा रुखे अव्वल N 5764

दरसन बिन अखियां तरस रही
तरस रही तरसाय रही ।
प्रीतम प्यारे खबर नहीं मिलना ।
बिलम रहे अविनाशी ॥ १ ॥

मलहार रुखे सानी

काहे लाडली लाड लडाया ।
बरखा रुत मोहे भिज तननन ।
दीखे चुनरिया ॥ घृ ॥
जैसे कल उपजे मोहे मनके मोहम्मदं ।
सा तुम देखा सबकी लुकाई ।
सदा रंग रंगीले ।
बरखा रुत मोहे भिज तननन ।
दीखे चुनरिया ॥ १ ॥

रानी मुन्नी एराड शर्मा

होरी पहिला भाग N 6400

सखी—राधा आज होरी का दिन है चलो श्याम से होरी खेलें ।
राधा—होरी-श्याम से ? हां जरूर चलो ।

* गाना कोरस *

सखी—आओ सखी आओ सखी मिलकर होरी खेलें श्याम से
राधा—हम तुम सव मिल कर गायें गुइयां तारी बजायें
कोरस—सुन्दर सूरत प्यारी जायें बारी श्याम के
राधा—बांके नैर रसीले मनुआं को लागे मोरे पीहरवा
कोरस—आओ असी आओ सखी ....

कृष्ण—जमना तट पर समां सुहाना नाचे तीर तरंग।
राधा शीघ्र आओ होरी खेलो मोरे संग।
कोरस—आओ सखी आओ
कृष्ण—सखियां और ग्वाल बाल मिल कर डालें गुलाल
राधा—वांके नैन रसीले मनवा को लागे मोरे पीहरवा के
कोरस—आओ सखी आओ .....

दूसरा भाग

राधा—दुःख हरता जग पालन हारे प्यारे कृष्ण मुरार।
मोहनी मूरत प्यारी सूरत सुन्र रूप तोहार॥
मोहन तुम कितने सुन्दर हो तुम्हें तो गऊओं से मुहब्बत और वंसी से प्रेम है।
सखी—नहीं राधा वो तो तुम्हारे नाम की रट लगा रहा है
राधा...कौन मोहन! नहीं री वो तो रास रचा रहा है
सखी—चलो हम भी चलें

* गाना *

सखी मोहन संग रास रचायें
रल मिल गायें प्रेम बढ़ायें बल २ जायें
राधा— श्याम वरन कैसा रूप तुम्हारा वांकी चितवन
मुखड़ा प्यारा दरस दिखादिया तूने अपना
मुधुर २ तोरा तान सुनाना नित छन मन मोरा
हर ले जाना
कृष्ण मुरार तोरे प्यार दीनों है मार

कृष्ण— राधा तुमरे नाम बिन मोरा आधा नाव प्रेम
तिहारे कर दीनों है मुझको राधे श्याम

मिस देवाबाला

रुखे अव्वल N 6391

चट पट ला ला ला जाम पिला साक़िया तोबा टूटी रिन्दों की चलने लगी हां बाद बहारीं-बादा फशी की कर तय्यारी-साकी तुझ पर जाऊं वारी हो अब श़ग़ल मैंखुवारी।

कुमरी बैठी डारी डारा कूं कू करती है।
कूं कू क्या है दम पीतम का हृदय भरती है।
नारा यकसू तू ही तू का तूतीने मारा।
बुल बुल के नग़मा से गुलशन गूंज उठा सारा
चट पट ला ला ला जांम पिला साक़िया तोबा टूटी रिन्दों की

रुखे सानी

बन वासी आ पपीहे क्यों नाला भर रहा है।
मेरी तरह किसी से क्या तू भी छूट गया है॥
पियू कहां है प्यू कहां है क्यूं चिल्लाता है।
याद दिलावर पीतम की तूं तड़फाता है।
डूब उठी अब कोई कलेजा मेरा मलता है।
विरहा अगन ने फूंक दिया है तन मन जलता है॥
बैरी बनके आधी आधी रात को आता है।
शब्द सुना के प्यू प्यारे की हाय सताता है।

मिनती करत है तोरी लावे खबर पिया की।
जा जल्दी प्यारे पंदी साक़ी दया पर दया है।

मिस मुन्नी

N. 6494

दादरा रुखे अव्वल

दिलका ठिकाना बुरा है आंख लड़ाना,
तीरे नजरियोंका खाना बुराना है आंख लड़ाना
जो दिल पे इश्कका ओछा सा वार हो जाये,
छुरी जफाकी कलेजेके पार हो जाये
दिलका नहीं ठिकाना बुरा है....
जरा जो देख ले उस शमा रु के जलवेको,
निसार शौक से परवाना वार हो जाये
आग न यह सुलगाना बुरा........

दादरा रुखे सानी

जबतक फूलोंमें बाहर रहे, इन आंखोमें रंगे खुमार रहे,
कुछ नाजोंमें रुखपर निखार रहे,
और नाजमें अपना सिंघार रहें, जबतक....
बिजली पे बिजली गिरे साकिया रंग पे रंग जमे
दामन आंशिकका तार तार रहे
इन आंखोंमें रंगे खुमार रहे, जबतक....

मेरी नजरोंमें वफ़ा रंगे जफ़ा हो जायगा,
दरद बढ़ २ कर मेरे दिलकी दवा हो जायेगा,
जान जायेगी जो मक्तलमें तुम्हारे हाथसे
मुझेको हासिल जिन्दगीका मुद्दआ हो जायेगा,
बांकी अदा हो तिरछी निगाह हो मीठी जफ़ाये भी हों
दिल आशिक फिर तो निसार करे, इन........

N 6382

रुख़े अव्वल

आई घटायें... .... काली काली........ सावनकी आई
लायें गुलाबी....... फूलों वाली........ भर भरके लये
बाग़ पे अबरे बहार है घिर घिरके छाये
कोयल गाये मलहार मेरे दिलको भाये
बादे बहारी वुये याद है गुलशलमें लाई-मस्ती दिलदारके आंगनपेछाई
आई घटायें........ काली काली......
साकी मीनाकी बाकी चालाकीसे मोड़ लाया
खिलनेसे पहिले फूल बेबाकीसे तोड़ लाया
मौसम बहारसे मखमूर होकर-पीकर शराब आया चूर होकर
भाई सखयोंको काली काली घटायें भाई।
गायें मिल मिलके.......जोबन वाली.......मतवाली गायें
जोबन इतराय फूले शोखियोंसे रंग लाये
लाये उमंग रंग शोखियोंके संग आये
दिलके फंसानेको हैं सैंकड़ों फंदे लगाये

छाई सैकड़ों काली काली घटायें
पतली कमरका सा सौ नाजसे बल खाये जाने
नीची नजरोंसे दिल उश्शाक़के तड़पाय जाना
जोश ज जबसे मजबूर होके
इश्क़के नूरसे मखमूर होकर
आई घटायें काली काली..........

रुखे सानी

मस्ताना अदाओंने—शोखीने ह्याने
आकर मुझे तड़पाया—उलफतके बहाने
कैफ़ियत दिल देखी—खुद हो गये बीमार
लायथे मसीह को—क्यों नब्ज दिखाने
आतिश ग़म —आतिश ग़मसे जल गया
मस्ताना अदाओंने
तरज उनकी निराली हैं तुफी हैं अदायें
सर गर्म वफा होकर करते हैं जफायें
रह रहके मचलती है—मसरुकी तमन्ना
बे ताविये दिल ऐसी—बखशी है खुदाने
मस्ताना अदाओंने

गजल रुखे अव्वल N 6553

अब्रे तर आसू बहाना हमसे कोई सीख जाये
बरक़ क्या है तिलमलाना हमसे कोई सीख जाये

आज वहशतने दिखाया क्या ही एक तरफा कमाल
जोशपर आई तबीयत जोमें इक उट्ठा उबाल
बैठे २ आ गया कुछ नाग हां एसा ख्याल,
तीरो पैका तिजने थे दिलमें दिये हमने निकाल
अपने हाथोंपर लुटाना कोई हमसे सीख जाये
खैंचकर तलवार क़ातिल आया जिस दम आपसे,
हो गये आरास्ता बांधे कफन हम आपसे
कर दिमा हमने सरे तसलीमको खस आपसे,
तेग़ तो ओछी पड़ी गिर पड़े हम आपसे,
दिलको क़तिलके बढ़ाना कोई हमसे सीख खाये

ग़ज़ल **रुखे सानी**

आबरू मेरी सितम ईजाद रख,
देख बिस्मिलको न अब नाशाद रख,
कुछ तो पासे आरजू जल्लाद रख,
रख गलेपर खंजरे बेदाद रख,
कस्त है वल्लाह हम हर हाल में
तेरे बंदे हैं सनम हर हाल में
है सरे तसलीम खम हर हाल में,
शाद रख चाहे हमें नाशाद रख,
हाये यह जुल्मो सितम लैलो निहार,
मिटने वालों से यह कीना यह गुबार,
ए फलक लेने भी दे उसको करार,
खाक आशिक की न यूं बरबाद रख

रुख अव्वल N 6605

सब से अच्छा प्रेम है जग में सब से अच्छा प्रेम
प्रेम धर्म और नियम है प्यारे सब से अच्छा प्रेम
प्रेम को समझो प्रेम को जानो
प्रेम की रीत को भी पहिचानो
प्रेम करो और प्रेम को मानो प्रेम जपो और प्रेम बखानो
सब से अच्छा प्रेम,
जग सागर और जीवन नय्या, इस नय्या का प्रेक खवय्या
प्रेम खवय्या प्रेम बसय्या प्रेम प्रभु और प्रेम कन्हय्या
सब से अच्छा प्रेम,
प्रेम ही बल और प्रेम ही शक्ति, प्रेम ही सेवक प्रेम ही स्वामी
प्रेम ही ग्वाला प्रेम ही गोपी, प्रेम ही राधा प्रेम ही बंसी
सब से अच्छा प्रेम,

रुखे सानी

हाथ से छूट कर साजन दरपन टूट गया,
समझ न यह दरपन के टुकड़े हैं यह मेरे नैनन के टुकड़े
नैनन के क्या मन के टुकड़े, मन के नहीं जीवन के टुकड़े
देख ले ए मन मोहन दरपन टूट गया,
बुरे समय यह दरपन टूटा, हार सिंगार का साथी भी टूटा
मुंह देखे का साथी छूटा, भाग ने मारा करम ने लूटा
रोऊं खड़ी में आंगन दरपन टूट गया,
टूटे टुकड़े कौन उठाये, कौन उठाये कौन मिलाये

कौन मिलाये कौन दिखाये, मन दरपन को कौन बनाये

तुम बिन मोरे भगवन दरपन टुट गया

भजन रुखे अव्वल N 6419

राधा प्यारी श्याम सुन्दर गोपाल देख बनमें वह बंसी बजायेंगे

हां बजायेंगे—हां सुनायेंगे

हम अपने प्रेमसे प्रीतमको अब रिझायेंगे

सलोने श्यामको हिरदेमें अब बसायेंगे

सखी री आज उन्हें हम गलेसे लगायेंगे

पियेंगे प्रेमके पियाले उन्हें पिलायेंगे

मैंने दुनियांको मनसे विसारा—मैंने मुरली पे तन मन है वारा

आये २ नन्दके गोपाल सुनो २ प्रेमकी पुकार

सखी मधुबनमें गूंजी है मुरलीकी धुन–रास लीला कनहय्या रचायेंगे

भजन रुखे सानी

सकल संसारमें जो सत्यका सन्चार करते हैं

हम उनको बन्दना हिरदेसे बारम बार करते हैं

गिलानी धर्मपर आती है जब विश्व मण्डलमें

वही गोबिंद गीताके जगत-उद्धार करते हैं

हमारे दिलके मन्दिरमें न क्युंकर हर बसे हरदम

बहाकर प्रेम गांगा नैनको हरिदवार करते हैं

गिरे जब धर्मकी स्वांतीका जल बुद्धिकी सीपीमें

शरर हम मोतियांकी उस समय बौछाड़ करते हैं

N 6439

भजन **रुखे अव्वल**

हो श्याम तुम्हीं घन्शाम तुम्हीं है नाथ यशोदा नन्दन हो
हे नाथ कहीं योगेश्वर हो हे नाथ कहीं मन मोहन हो
हर सांस चन्वर झलता आये हर सान्स चन्वर झलता जाये
हे कृष्ण तुम्हारी मूरत का जब दिल में मेरे सिनहासन हो
हर रंग में व्यापक हम देखें वह पीत झलक पीतामबर को
ब्रहमान्ड हमारी नजरा में जब नन्द महर का आंगन हो
हर सांस मेरा यह जाप करे गोविन्द हरे गोविन्द हरे
मिल जाये तुम्हारी ज्योती में जब अन्त शरीर का शीबन हो

भजन **रुख अव्वल**

बन्सी की तान सुना श्यामा बन्सी की तान सुना श्यामा
ए नैन रसीले मतवाले ए बन्सीवर बंसी वाले
ए कृष्ण कनहैया नन्दलाले, सर मोर मुकट कुन्डल काले
आ आ आ दिल को लुभा श्यामा, वन्सी की तान सुना श्यामा
वन्सी के बोल में बोलता जा, रस प्रेम का जल में घोलता जा
इसरारे हक़ीकत खोलता जा, तौहीद के मोती रोलता जा
अब फिर से रंग रमा श्यामा, वन्सी की तान सुना श्यामा
फिर जलवा अपना दिखलादे; फ़िर कल्वो जिगर को बरमादे
फिर प्रेम और प्रीत की शिक्षा दे, फिर राजे हक़ीक़त समझादे
कतरे को दरया बना श्यामा, बन्सी की तान सुना श्यामा
तू रखवाला रखवालों का, गम्खार है खस्ता हालों का,
दिलदार गवालों बालों का महबूब है अल्लाहा वालों का,
पर दरस जरा दिखला श्यामा, वन्सी की तान सुना श्यामा

हरेन्द्रनाथ चटर्जी ब कुमारी हाशी

रुखे अव्वल N 7445

श्री राम चन्द्र कृपालु भज मन, हरन भव भय दारुनम्
नव कंज लोचन कंज मुख कर, कंज पद कंजारुनम्
कंदर्प अगनित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरम्
पट पीत मानहु तड़िप रुचि सुचि नौमि जनकसुतावरम्
भजु दीन बन्धु दिनेश दानव दैत्य वंस निकन्दनम्
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नंदनम्
इति वदति तुलसी दास शङ्कर शेश मुनि मन रंजनम्
मम हृदय कंज निवास करहु कामादि खल दल गंजनम्

रुखे सानी

अगन न दहे पवन न गमने तिशकर नीड़न आवे
राम नाम धन कर सजनी एहार धन कितहु न पावे
मेरे तो धन माधव सुन्दर एही धन सार जो कहे
जो सुख सेवा गोविंद की सो सुख राजन नाहीं दे
यह धन कारण सुख सनकादि खोजत भई उदासी
मनुष्य मुकंद चेत नारायण पड़े न जमकी फांसी
कहत कबीर मदन को माते हृदय में देख बिचारी
तुम घर लाख कोटि अश्व गज हम घर एक मुरारी

मास्टर फकीरुद्दीन

गजल **रुखे अव्वल** N. 6420

हो गई आपके दर तक जो रसाई मेरी
वाह तकदीर ने क्या बात बनाई मेरी
आपके दरका गदा कहती हैं दुनियां मुझको
बादशाही से तो बेहतर है गदाई मेरी
प्यास हर खार की सहरा में बुझाई इसने
काम कुछ आ ही गई आबला पाई मेरी
मै तेरी शाने करीमी के तसद्दुक जिसने
बात बिगड़ी हुई महशर में बनाई मेरी

गजल **रुखे सानी**

बतादो तुम हमें बेदाद करना—सिखादें हम तुम्हें फरयाद करना
हम आजायेंगे अपनी भूल बनकर—न भूले से हमें तुम याद करना
सिखाया है हमें जालिम बुतों ने—मुसीबत में खुदा को याद करना
मुबारिक हो तुम्हें यह ईद का दिन—हमें भी ईद के दिन याद करना

गजल **रुखे अव्वल** N 6433

आह करता नहीं आती मुझे फरयाद नहीं
मैं वह बुलबुल हूं जिसे तरजें फुग़ान याद नही
हाथ में जाम लिया मुंह से कहा बिस्मिल्लाह
यह न समझे कोई रिन्दों को खुदा याद नहीं

तेग ओछी जो पड़ी वार भी तिरछा आया
कौन कहता है कि वांका मेरा जल्लाद नहीं
ए मेरी शामे गरीबां वह मुसाफिर हूं मैं
जिसका घर बार नहीं जिस को वतन याद नहीं

गजल रुखे सानी

आज मैं सोई हुई क़िस्मत जगाता रह गया
पाये साक़ी पर मैं अपना सिर झुकाता रह गया
वाये शौके मै परस्ती रंग लाता रह गया
अब्र आया झूम कर पर आता २ रह गया
दिल ख्याले जाम मे खुशियां मनाता रह गया

देख ली बुलबुल ने जिस दम आरिजे गुल की बहार
हाथ से जाता रहा फिर दामने सब्रो करार
खौफ गुलचीं का रहा उसको न कुछ परवाहे खार
अंदलीबे ज़ार गुल पर गिर पड़ी दीवानावार
बाग़बां सहने चमन में गुल मचाता रह गया

दम दिये जाता है हमदम दम बदम दमबाजे इश्क़
देखिये अंजाम क्या हो है अभी आग़ाज इश्क़
रह गये अपना सा मुंह लेकर जो चारा साज़ इश्क़
नूर आंसू पीगया अफसाना होता राजे इश्क़
बहर अशके चममे पुरनम जोश खाता रह गया

गजल रुख़े अव्वल N 6407

उलफ़त ने तेरी मझको परेशान कर दिया
हमने भी दिल व ईमान सब कुरबान कर दिया
एक रोज कुये यार में जाता था बे ख़तर
बस राह में सनम से मेरी लड़ गई नजर
फिर बाद इसके क्या हुआ मुझे कुछ नहीं खबर
दीदार यार ने मुझे सरशार कर दिया
फिर बाद थोड़ी देर के मैं होश में आया
और यार को भी मैंने बेहोश ही पाया
मैंने कहा ऐ जाने जहां तुमको क्या हुआ
कहने लगी बतादो मेरा दिल किधर गया
मैंने कहा ऐ जान मुझे कुछ खबर नहीं
अपनी खबर नहीं मुझे दिलकी खबर नहीं
वह हंस के बोली दिल के मेरे चोर तुम्ही हो
तुमने इसी नज़र से मेरा दिल चुरा लिया
तीरे नजर का जिसपै यहां वार चल गया
आई सदा कि हाय हाय मेरा दिल गया
बच कर चलो जहां से हे फकीर
हम ने सर को चौखटे जाना पर रख दिया

गजल

रुखे सानी

शिकवा किसी से हम न कुछ फ़रियाद करेंगे
लेकिन सितम को तेरे सनम याद करेंगे

तेगे अदा तुम्हारी यहां काम कर गई
बरछी निगाहें नाज़ की सीने में गड़ गई

जो चीज जाने वाली थी वह आखरश गई
वहां दिल लगी गई तो यहां जिन्दगी गई

पहले तो सीमो जर लिया दिल जिगर लिया
फिर दीन लिया ईमान लिया और सर लिया

फिर कहने लगी नाज से कहो मैंने क्या लिया
मैंने कहा कि कुछ नहीं जो दे दिया दिया

घवरा के फिर वह बोली हाय मैंने क्या किया
क्या मुझ को मिल गया जो दुखा दिल दुखा दिया

नादान दिल यह क्या तूने बुरा किया
कामिल था उसका इश्क उसे यह सला दिया

मैंने कहा इस इश्क़ से अल्लाह बचाये
और भूल कर हसीनो से दिलको न लगाये

दुशमन को भी फ़क़ीर यह दिन न दिखाये
जो खुद न रहे शाद वह क्या शाद करेंगे

शिकवा किसी से.............

कव्वाली   रुखे अव्वल   N 6600

बवक्ते तंग दस्ती बेगाना भी करवद
सुराही यूं शवद खाली जुदा पैमान भी करवद
मैं पहले पहल जब जोरू को लाया बांध कर सेहरा,
तो पहले पहल ख़िदमत से न उस ने मेरी मुंह फेरा,
मगर जब हर तरफ से आनकर अफलास ने घेरा,
लगी कहने कि ए बुड्ढे न मैं तेरी न तू मेरा
बवक्ते तंगदस्ती

कभी अम्मां कहा करती थीं मेरा लाडला लाला,
कभी जोरू कहा करती थी मेरा प्यारा घरवाला,
मगर जब मुफलसी का आन कर घर पर लगा ताला,
मुरादाबाद को अम्मां गई मेरठ गई खाला,
बवक्ते तंगदस्ती ··

मेरे पास जब पैसे थे तो सब कहते थे क्युं मिस्टर,
मगर जब मुफलसी तशरीफ लाई है मेरे घर पर,
रहा तन पर नहीं कपड़ा न घर में है कोई बिस्तर,
रज़ाई ओढली जोरू ने दी मुझे फटी चादर,
बवक्ते तंगदस्ती··········

कव्वाली रुखे सानो

मेरे पहलू से दिल लेके चलते हुवे,
जब गये वह इधर से निकलते हुवे,
लड़ीं नजरें बस उन महजबीनों से क्या,
एक दम ज़ादू दिल पर उन्हों ने किया,
डाली नज़रों में नज़रें जमा कर ज़रा,
इक इशारे में फ़ौरन लिया दिल चुरा;
रह गये हम वहीं पर मचलते हुवे,

पड़ा पानी तो वहुत कीचड़ होगई.
जूती चलने में इकदम रपट जब गई,
गिर गये कीच में चोट बेहद लगी,
चिर गई टांगें पतलून सब फट गई,
चल दिये आगे सीधे फिसलते हुवे,

सांथ जुलमो सितम और उन के क़ज़ा,
हर तरफ उन के होती है फोजो सिपाह,
बनके पैग़ाम चलते हैं वह मौत का,
हर तरफ तीर मिज़गां का चलता हुवा,
यूं वह फिरते हैं हरसू टहलते हुवे,

बोसा लेने में बीबी के डाढ़ी चुभी,
बोली झुंझलाके मुंडवा के आओ अभी,

क्या करें नाई मिलता नहीं अब कोई,
किस तरह मार बीबी की खाये कोई
अबतो डरते हैं घर में भी घुसते हुवे,
एक दिन फैजी जाता था मैं बादा रु
चंद हसीं एक जगह थैठे थे घास में,
मारे तीरे नज़र सब ने एक साथ में,
छे लगे आके फौरन मेरी टांग में,
हम तो चंपत हुवे पैर मलते हुवे,

गजल रुखे अव्वल N 6556

मस्ताना बनादे मुझे मस्ताना बनादे
फिर हिरसो हविस से मुझे बेगाना बनादे
फिर होश की दुनियां को तू वीराना बनादे
फिर जलवा दिखा और मुझे दीवाना बनादे
फिर आंख उठा और मुझे मस्ता बनादे
(कोरस) मस्ताना बनादे मुझे मस्ताना बनादे
फिर जोश में आकर सुये मैखाना चलूं मैं
फिर बेखुदिये शौक़ में सिजदे को झुकूं में
फिर पांव में साक़ी के बसद इजज़ गिरूं मैं
फिर काम मेरा जुरअते ज़िन्दाना बनादे
(कोरस) मस्ताना बनादे मुझे मस्ताना बनादे

फिर मेरे लिये साक़ी चले दौर निराला.
फिर मेरे लिये साक़ी बहा नशे का दरिया
फिर मेरे लिये साक़ी बसा कैफ की दुनियां
फिर मेरे लिये कैफ को मैखाना बनादे
(कोरस) मस्ताना बनादे मुझे मस्ताना बनादे

कव्वाली रूखे सानी

चले जुल्म का मेरे सीने पे आरा,
बला से हों कल्बो ज़िगर पारा पारा,
यह सब कुछ है ए जान मुझ को गवारा
मगर याद रखियेगा इतना खुदारा,
जफ़ा कीजियेगा सितम कीजियेगा,
मोहब्बत बढ़ा कर न कम कीजियेगा,

सनम वक्ते आखिर है तड़पा न मुझ को,
कहीं जांकनी नें न रुलवाना मुझको
दमे नज़ा दीदार दिलाना मुझ को,
ज़यारत से अपनी न तरसाना मुझ को,
करम मुझ पे भी कोई दम कीजियेगा,
इधर रुख़ खुदा की क़सम किजियेगा,
करो रहम अब मेरी हसरत मिटादो,
लगी है जो दिल में इसी दम बुझा दो,

मुझे बहरे हक़ आज इतना बतादो,
यह जां बख्श मुज़दा मुझे तुम सुनादो,
मेरे सर को किस दिन क़लम कीजियेगा,
मेरे हालपर कब करम किजियेगा,

मि० फिदाहुसेन

ग़ज़ल — रुखे अव्वल — N 6545

फिर तीरे नज़र से छेद जिगर फिर आंख मिला बिस्मिल करदे
जी भर के तड़प लूं दर्द उठे इतना तो करम कातिल करदे
फिर मस्त निगाहें मुझ से मिला ओ शोख अदा ओ फितना रुवां
—फिर मुझको वनादे दीवाना बरबाद सकूने दिल करदे
मरक़द पे खड़े वह कहते हैं, यह कैसी सदायें आती हैं
इन खाक़ के जर्रों को या रब तू मेरा तड़पता दिल करदे
ए दस्त जनूं चल हद से गुजर मजनूं की तमन्ना पूरी कर
लैला को खैंचले दामन से टुकड़े २ महमिल करदे

ग़ज़ल — रुखे सानी

अभी तो नामे खुदा कमसिन शबाब आया तो क्या करेंगे
कमसिनी खेल रही है अभी क्या रक्खा है
आसरा आसरे वालों ने लगा रक्खा हैं

किसी को तीरे नजर से बिस्मिल किसी को क़तले अदा करेंगे
जो मरगये हम तो यह न समझा कि तुम से हम होगये अलैहद
पसे फना भी तुम्हारे दिलमें गुबार बन कर रहा करेंगे
न हमको काबे से कुछ मोहब्बत न है बुतों से हमें अदावत
जिधर को पीरे मुगां कहेंगे उधर को सिजदा किया करेंगे
अरे ओ सांवरी सूरत शक्ल वाले कभी तो भोला सा मुख दिखादे
हमारे दिलकी लगी बुझादे हम तेरे हक़ में दुआ करेंगे

गज़ल रुखे अव्वल N 6447

यह सुन २ के मरना पड़ा हर किसीको—
नहीं मरते देखा किसीपर किसी को
न जाऊंगा तनहा बहिश्ते बरी में
कि ले जाऊंगा दिलके अन्दर किसी को
खुदा दे तो दे अपना ग़म हर किसी को
करे पर न माइल किसीपर किसी को
हमें छेड़ कर किस तरह शाद होंगे
सताते नहीं बन्दा परवर किसी को

ग़ज़ल रुखे सानी

फिर आज सिजदा तलब कोई नक्शेपा न मिला
सरे नियाज़को खैंचनेका फिर बहाना न मिला

खिजल हैं ताइरे बेरंग परीदाए हस्ती
रहा क़फ्स ही सलामत न आशयाना मिला

सिवाय तेरे नहीं कुछ किताब फितरत में
कि जिस वरक को टटोला यही फिसाना मिला

ग़ज़ब था परदये खदारिये हरम उठना
हुई यह खबर कि बुतखानेमें खुदा न मिला

तपिश फ़ज़ूल है बेगानगी का उनके गिला
हमें तो आईना भी सूरत आशना न मिला

मास्टर कपल

भजन **रुखे अव्वल** **N 6440**

हरे राम हरे राम हरे राम हरे—भज मन निश दिन प्यारे
भोर भई ओ सोने वाले—सोकर जीवन खोने वाले
रोम रोममें राम वसाले—राम:नाम नित नेम बनाले
हरे राम हरे राम हरे राम हरे......

रा है चप्पू मा है नय्या—रामचन्द्र है इसके खेवय्या
जीवन है इक बहता पानी—निसदिन सुखसे जपले भय्या
हरे राम हरे राम हरे राम हरे......

भजन रुखे सानी (मिस रानी)

भीलनी—यह मीठे बेर निराले हैं, यह भक्ती रसके प्याले हैं
हे राम यह खाओ, मेरे हाथोंसे भोग लगाओ
राम—प्रेमका है यह पकवान, प्रेमकी है यह रसखान
मधुर अमर फलसे हैं यह, स्वाद अजब है इनमें पाया
भीलनी—अपार राम है तुमरी माया
राम—मीठे फल हैं यह प्रीतीके, स्वर्गके फल हैं इनसे फीके
भाव मुझे बेरोंका भाया, बेर २ है दिल ललचाया
भीलनी—नाथ यह खाओ, मेरे हाथोंसे भोग लगाओ... ..

देस रुखे अव्वल N 6462

नय्या आन पड़ी मंझदार—खेवो २ खेवन हार
नय्या आन पड़ी मंझधार
डगमग २ डोले—तन घबराये जिदंड़ी घोले
पार करे करतार—नय्या आन पड़ो मंझधार
आस उमीद रहो न कोई—कौन करे मेरी दिल जोई
रोवां ज़ारी ज़ार—नय्या......

देस रुखे गाना

बंसीकी टेर सुना हे नटवर लाला।
बंसीकी टेर सुना हे नटवर लाला।

(बंसीकी गत)

तटपर यमुनाजी के आके
चित की सगरी चिंता मिटाके
दूध दही और माखन खाके
बंसी की टेर ... (बंसी की गत)
चुपके २ दरस दिखाना
भात नहीं हमको हे कन्हा

प्रो० नारायण राव व्यास

सोहनी **रुखे अव्वल** N 5733

सांवरो चरावत गय्यां। जमुना तीर गोपन संग मिलकर
लरवैया देखत मैंया। मोर मुकुट सिर शोहत सुन्दर
अधर बन्सी धर बल भैया॥

दुर्गा **रुखे सानी**

....

मन मोहन मुरली वाला, मुरली वाला सखी है काला॥
निशदिन याको ध्यान धरत है मुनि निगमागम
गुन गावत है जित जैये उत हम देखत है
शीश मुकुट गले बन माला.......

ठुमरी — रुखे अव्वल — N 5741

लगन मोरी लागी हर सो पिया प्यारे सो ।
निस दिन घरी पल उन बीन कलना परे ॥
बहुत ही दिन वीते सुध मोरी बिसरी ॥
आओ प्यारे शाम मोरे लागो गरे ॥

ठुमरी — रुखे सानी

अदा जान लेती है जानी तुम्हारी
कयामत हुई है जवानी तुम्हारी
फिदा तुम पै हम हैं तुम गैरों को चाहो
किजमत हुई है कद्र दानी तुम्हारी

मास्टर वसंत अमृत

गजल — रुखे अव्वल — N 5742

ये भी तुम जानते हो मैंने तुम्हें क्या जाना
अय सितम जा सितम ये सितम आरा आना
ना नाज वता तूंने कभी सुनते हैं
दिल को दिल और कलेजे को कलेजा जाना
जो जमाना उसे जाने वोह जमाना जाने
हिज्र में मीमे का हमने जो मसीसा जाना
वद गुमानी कहीं ऐसी न देखी न सुनी
मैंने जब शुक्र किया आपका शिकवा जाना

गजल **रुखे सानी**

ये भीं तुम जानते हो मैंने तुम्हें क्या जाना
ता दम मुर्ग निकलने न दिया दिल ने उसे
तेरी पयकान को भी मेरी कथा तमन्ना जाना
तपेग़म तुम को भी मसजर को करदे तो सहा
दिल वेताब है यह तुम ने उसे क्या जाना

वसन्त **रुखे अव्वल** N 5765

विहरती हरीरिह सरस वसंत ।
नृत्यति युवती जनने सम—सखी
विरही जनस्य दूरते—हरीरिह·······

खम्बावती **रुखे सानी**

दूर रहे रघु राई तुम बिन मैं कैसे धरूं धीर ॥ घृ ॥
उपवन तृषित मन सुख मांही
घट घट रटत राम जो सुखचाहीं ॥१॥

दादरा **रुख़ अव्वल** N 5737

दो फूल साथ फूले किस्मत जुदा जुदा है ।
एक चढ़ा नोशे के सरपर एक क़ब्र पर चढ़ा है
दो भाइयों देखो आपस में करते हैं हकी की
एक शाह मुनव्वर है एक शाहजी बना है
निकले सदफ़ से दो मोती एक ही साथ में
एक पिस रहा ख़रल में एक ताज में टिका है

भजन **रुखे सानी**

काँटा किसी को मत लगा मिसल गुल फूला है तू

आखिर में तेरे हक में तेरे है—किस बात पर भूला है तू।

अपने नफे के लिये और का नुकसान मत कर

यह कलयुग नहीं मगर कर जुग है

यहां दिन को दे और रात को ले।

क्या खूब सोदा नक्द है इस हाथ दे और उस हाथ ले

जगत में दो दिन का मेला-सब चला चली का खेला

लाख करोड़ धन कमाये-किरोड़ पती वदी कहलाये

माड़ी कहे मेरा पूत सपूत-और- बहनो कहे मेरा सुन्दर भय्या

काका कहे मेरा नेक भतीजो-और सास कहे घर आओ जमय्या

नारी कहे देख मेरे बालम-झोरु कहे देख मेरा वहो पय्या

इतना और मान को करे के जिन के हाथ सफेद रुपया

ऐसे रुप्ये वाले कहलाने पर भी

आखिर औसान आये तव तेरा और

संग चले न अथैला—सब चला चली का खेला

भजन **रुखे अव्वल** N 5758

प्रभूजी तुम चन्दन हम पानी—जाकी अंग २ वास समानी।

तुम घन वन हम मोरा - जैसे चितवत चन्द चकोरा।

प्रभू तुम दीपक हम बाती—जाकी ज्योति बलै दिन राती।

तुम मोती हम धागा—जैसे सोनहि मिलत सुहागा।

भजन रुखे सानी

अपयश की मत बांधो गठरिया……. ।
लाली गुलाबी तन की रहेगी न दिन न चारन की ।
कहत कबीरा सुनो मेरे साधो, जम लेवे खबरिया नस २ की ॥
मत बांधो……………………. ।

जौनपुरी रुखे अव्वल N 5792

काहे रे बन खोजत आई अब तुम
सर्व व्यापी ऐसो सदा अलेपा तोहि संग समाई
पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है मुकुर मांहि जस छाई
बाहर भीतर एकहि जानो यह गुरु ज्ञान बताई
जन नानक बिन आपा चिन्है मिटे न भ्रम की छाई

जेतगिताल रुखे सानी

हो रसिया मैं तो शरण तिहारी
नहीं साधन बल चातुरी ॥ धृ ॥
मैं अति दीन बालक तुम शरन
नाथ न दीजै अनाथ बिसारी
निज जानी संभालोगे प्रीतम
प्रेम सखी नित जाऊं बलिहारी

प्यारु कव्वाल

P 10700

कव्वाली रुखे अव्वल

दिल जल गया, दिल जल गया, दिल जल गया
लूटे गए होशो खिरद फुरकत का जादू चल गया
वे हिस पड़ा हूं खाक पर उलफत का वह कस बल गया
दिलकी लगी आफत हुई दागों से सीना फल गया
ए सोजे पिन्हा रह्म कर तेरा चमकना खिल गया
दिल जल गया, दिल जल गया, दिल जल गया
ए साक़िए नाजुक अदा, ज़रीं कमर, गुलगूं क़बा
महफ़िल गुलिस्तां बन गई अल्लाह रे जलवा तेरा
लेकिन रक़ीबों का जथा फित्ना बना नमरूद का
शीशा हटा साग़िर उठा यह जहर गैरों को पिला
दिल जल गया, दिल जल गया, दिल जल गया
दुनियां का हैं यह क़ायदा पीती है होकर बदमजा
लेकिन ग़लत बिलकुल ग़लत होता नहीं कुछ फायदा
"मस्ते" हज़ो सागिर उलट-शीशा हटा बोतल उठा
पीकर हुआ उलटा असर ग़म हो गया दो आतशा
दिल जल गया, दिल जल गया, दिल जल गया,

कव्वाली रुखे सानी

हसरते दीद ने एक तमाशा किया।
हूक उठी-दर्द उठा-गम ने हमला किया।

जिस ने देखा मुझे बस वह रोया किया।
क्या कहूं आप से आप ने क्या किया।
दिल ने रुसवा किया..........

यूं जो फैला है दुनियां में किस्सा मेरा।
चार सू अब ज़माने में है तज़करा।
किसका शिकवा करूं और किसका गिला।
इस में तेरी खता है न मेरी खता।
दिल ने रुकसा किय..........

बाग़ में कल मिला था वह सरवे चमन।
जब गया लेके मुझको भी दिवाना पन।
कुछ कहा तो कहा अज़ रहे मकरो फ़न।
मुझको तोहमत न दे सुन अरे बद चलन।
दिल ने रुसवा..........

"मस्त" आदाबे उल्फ़त में है एक बला
छाओं देता है ऐसे में किस को भला
परदे परदे में दम उसका भरता रहा
भांडा फूटा तो घबराके कहने लगा
दिल ने रुसवा किया..........

गजल — रुखे अव्वल — P 10691

न मैं कह सकूंगा न तुम सुन सकोगे
यह सदमा यह ग़म यह अलम यह मुसीबत
यह किस्सा कहानी फ़िसाना हिकायत

न मैं कह सकूंगा न तुम..........

न पूछो ने पूछो मेरे दिल की हालत
अयां है अयां है देखो मेरी सूरत
शबे हिज्र होती है क्या क्या अजीयत

न मैं कह सकूंगा न तुम..........

मेरी क़ब्र से उसने पूछा यह रोकर
बता इसकदर क्यूं उदासी है तुझ पर
तो मरक़द यह बोला व आवाजे हसरत

न मैं कह सकूंगा न तुम सुन सकोगे।

गजल रुखे सानी

बनावट से त्योरी बदलते हुए वह आंखो में दिल लेके चलते हुए
सुना था कहीं आके देखा यहीं निगाहों के जादू को चलते हुए
अगर मैकदेमें तुम आओ कभी दिखा दूंगा सागि़र को चलते हुए
करें उनके वादे का क्या ऐतबार उन्हें देर क्या है बदलते हुए
अरे मस्त सोज जिगरकी न पूछ हमें उम्र गुजरी हैं जलते हुए।

H T 73

दादरा रुखे अव्वल

किन अंखियनसे मार २ हमक बुलावें,
इशारा करती है वह देखो चश्मे यार मुझें,
दिखा रही है अनोखी नई बहार मुझे,
बना रही है वह बदमस्त बेक़रार मुझे,
फ़रेब देती है क्या २ वह बार २ मुझे,

किन अंखियन.........

यह बांकी तिरछी निगाहें तो हैं बला देखो,
यह रंग रूप यह अंदाम दिलरूबा देखो,
मेरी तरफ भी यह मुड़ २ के देखना देखो,
कि देखते ही मेरा होश उड़ गया देखो,

किन अंखियनसे मार........

कभी नजरसे मिलाकर नज़र किया माईल,
कभी जिगरको अदायोंसे करदिय घायल,
संभालना दिले मुज़तिरका हो गया मुशकिल,
झुटाई देखिये उस शोखकी सरे महफिल,

किन अंखियनसे मार.........

नज़रका तीर है या तेग़ अब्रू ये खमदार,
खटक सी होती है रह रह के दिलमें क्युं हरबार,
संभल २ के तड़पता है क़ल्ब सीना फिगार,
अदा अदासे बरसने लगा छुरी तलवार,

किन अंखियनसे मार मार.........

दादरा रूखे सानी

बांके नैंना कटारी मोहे मार गयो,

यह आंखों आंखोंमें क्या काम कर गई आंखें,
कि जेब आशिके मुज़तिर कतर गई आंखें,
तलब जो दिलकी हुइ यूं मुकर गई आंखें,

छुरोकी तरह जिगरमें उतर गई आंखें,
बांके नैंना..........

ग़ज़ब है क़हर है आफत है वह रसीली आंख,
लहू रुलाता है मस्तीमें यह नशीली आंख,
कि अब संभाले संभलती नहीं छटली आंख
जिगरके टुकड़े उड़ाती गई कटीली आंख,
बांके नैना........

वह काली २ सी पतली वह प्यारी २ नज़र,
वह नन्हीं नन्हीं सी पलकोंमें वह दुधारी नज़र,
वह भोला भोला सा मुखड़ा छुरी कटारी नज़र,
ग़ज़ब २ कि लगी दिल पे कारी कारी नज़र,
बांके नैना..........

नज़र मिलाके सितमगरने यूं लड़ाई आंख
जिगरके खूनसे बे साख्ता भर आई आंख
अगरचे "मस्त" ने हर एकसे चुराई आंख,
मगर हज़ारोंमें देने लगी दुहाई आंख

मि० यूसुफ आफन्दी

P 10704

गज़ल रूहो अव्वल

सितमगारियां हैं दिल आज़ारियां हैं,
मोहब्बतकी यह नाज़ बरदारियां हैं।

मोहब्बत मोहब्बत खुदा जाने क्या है,
जिसे देखो इस दर्दमें मुब्तला है।
जो कहता था कल दिल लगाना बुरा है
वह गलियोंमें आज अपना दिल ढूंढ़ता है
मोहब्बत है आतिश मोहब्वत है बिजली
मोहब्बत की हर दिलमें चिन्गारियां हैं।
मोहब्बत क़यामत मोहब्बत बला है,
मोहब्बत है जन्नत मोहब्बत खुदा है,
न इसकी दवा है न इसकी दुआ है
न ईसा से यह दर्द अच्छा हुआ है।
नहीं दाग़ जलते हैं सीनेमें दिल के
यह बाग़े मोहब्बतकी गुलकारियां हैं

गज़ल रुखे सानी

जब तू ही दिल आशना न रहा
दिलका फिर क्या रहा रहा न रहा
उसका जीना भी कोई जीना है
दर्दे दिलमें जो मुब्तला न रहा
इश्कमें हमने किसी को नहीं फलते देखा
जिस्म को शमा की मानिन्द पिघलते देखा
मिस्ल परवाना यह दिल आगमें जलते देखा
तख़्ते मय्यत पे कफन सबको बदलते देखा

दिलके कहनेमें दिलरुबा न रहा
दिल लगानेका कुछ मज़ा न रहा

P 10690

गज़ल रुखे अव्वल

वर्क़ सी तेजी जुबाने खन्जरे कातिलमें है
एक क़तरा भी तो खूं न तने बिसमिलमें है

सैकड़ों छाले पड़े हैं सीनाये पुर्दाग में
रौनके बाकी अभी उजड़ी हुई महफिलमें है

करते हैं दावा खुदाईका बुते मगरूर क्यूं
या इलाही कौनसा ये वस्फ आओ गुलमें है

मूसये किस्मतका अब दिलगीर क्योंकर हो इलाज
देखकर मुश्किल मेरी मुश्किल भी खुद मुश्किलमें है

गज़ल रुखे सानी

क़त्ल पर आमदा है और हाथ रुकता जाय है
भूल जाता हूं मैं उसकी बे वफाईका ख़याल
हरफ़ मतलबपर मेरे जिस वक्त वह शरमाए है
जब कभी उस बे वफ़ाकी याद आती है मुझे
दर्द पहलू में मेरे रह रह के उठता जाय है
कुछ तो बतलाओ खुदारा मैलका दिलगीर को
नाज़ो अन्दाज़ो अदा क्यूं कर तुम्हें आजाय हैं

खम्सा　　　　रूखे अव्वल　　　　P 10702

तोसे नजरिया लग गई राम, तो से नजरिया लग गई राम
लग गई राम लग गई राम, नजरिया लग गई राम
अब सकून है न राहत व आराम, बेकली रात दिन है सुबह शाम,
परदे २ में हो गया बदनाम, हाये अब होगा और क्या अंजाम
लग गई लगगई राम.......
वह उमंगोंका अब जमाना कहां, बुलबुले दिलका वह तराना कहां
गुलो गुलजारो आशयाना कहां, गुलशन उजड़ा खजांके है अय्याम,
लग गई राम.......

खम्सा　　　　रूखे सानी

नजरमें मेरे कोई न समाये,
राहत मुझको भाती नहीं है, जाने हर्जों भी जाती नहीं है,
हाये कजा भी आती नहीं है, तड़पत हूं हरबार
नजरमें मेरी...........
लुट गया मेरे एशका सामान, छुट गया सब्रो सकूं का दामान
दिल भी प्रेशान मैं भी प्रेशान, तोरे बिना दिलदार
नजर में....... ...
हाल बुरा है किसको सुनाऊं, दर्द उठा है किसको बताऊं
कौन बनेगा किसको बनाऊं, मूनिसो गमख्वार...नजर में....

श्रीयुत हिमंगशूदत्त

P 11797

भजन पहिला भाग

जब प्रान तनसे निकले इतना तो करना स्वामी।
कह ० के श्री गोविंद मेरी जान तनसे निकले॥
चाहे गंगाजीका तट हो चाहे जमनाजीका वट हो।
वह सांवरा निकट हो तब प्राण तनसे निकले॥

भजन दूसरा भाग

सुनी मैं हरी आवनकी आवाज
महल चढ़ी जोऊं मोरी सजनी कब आवे महाराज
गरजे बदरवा मेघा बोले दामन छोड़ी लाज
धरती रूप वना वना धरिया कंथ मिलनके काज
"मीरा" के चित धीर न माने बेग मिलो महराज

होली रूखे अव्वल

P 11804

फागुनके दिन जाये रे, होली खेलो अपार रे
फूल २ राग छतीसों गावे, रंग २ राग छतीसों गावे
बन स्वर :राग छतीसों गावे, अनहदकी झंकार करे
उड़त गुलाल लाल भये बादल, बरसत रंग अपार रे
अंतर पट सब खोल दियो है, कहां पार कहां बार रे
मीराके प्रभु परम मनोहर, चरण कमल बलिहार रे

होली रुखे सानी

काया नगर मंझार साईं खेले होरी
गावत राग :सरस स्वर सोहे; अति आनन्द भयो री
शरीर महल में बाजे बाजा जग मग जोत उजारी
सहज रंग रच रहो सकल तन छूटत नहीं करे री
अनहद बाजे मधुर धुन बनकर ताला बन तम्बूरा
बिना रसना जहाँ राग छतीसों कबीर आनन्द पूरा

मास्टर लाली

कसीदा रुखे अव्वल N 6443

पय्यां २ चलो ख्वाजा मिलनको हे सजनी
बगरदाबे बला उफतादं किशती जइफाना तवारा चूं तु पुशती
बहक ख्वाजाये उस्माने हारूं मदद कुंन या मईनुद्दीन चिशती
पय्यां २.........
सब ख्वाजोंका प्यारा ख्वाजा हिंदमें राजदुलारा ख्वाजा
देखो चलके हमारा ख्वाजा पय्यां २ चलो ......
जाती हूं उनके द्वारे सय्यां है जो सबके प्यारे सय्यां
धन धन भाग हमारे सय्यां पय्यां २

नात रुखे सानो

अपनी चुनर रंगवाई रे पीर ख्वाजाके रंगमें

है रंगरेज रंगीले ख्वाजा तोरी मैं देत दुहाई रे ख्वाजाके रंगमें ...

जबसे रंगी मोरी चटक चुनरया सुध बुध सब बिसराई रे ...

हिन्दमें सायीं नसीर आलमका रंग देओ मो-लाई रे...... ..

जी० चक्रवर्ती

भाटयाली रुख अव्वल N 6371

नय्या मोरी धीरे धीरे जाये

भादों गुजरा आयी बदली हर सू छाये

पट पट मेहा वून्द पड़त जिया मोरा जाये

घाट में मोहे रोकत टोकत जिया गुजरा जाये

रुम झूम रुम झूम मेहा बरसे कश्ती मोरी जाये

फूल मंगाये हार बनाये पहनो ना अबरार प्यारे

मौज समन्दर लहर मारे अब ना सता अबरार प्यारे

कासे करूं अब जिया धड़के कल ना मोहे आये

भाटयाली रुखे सानी

मोरी डोलत जाये नय्या

बिन राजा नहीं खिवय्या

आप स्वामी पार उतर गये हमरे क्या जिया

साचे नगर का कूंच भयो सय्यां ने मोरे याद कियो

अब गम से मोरें आन बनी हो जाये नजर अब हमपे धनी
माता पिता कुछ गम ना करें यह झूठा नगर मोरे भैया
नय्या पड़ी है बीच भंवर होगा कैसे गुजर
मैं वाकी जाऊं बलहारी मोहिनी सूरत की बारी
अबरार मेरा पालन हारा मोरी पार लगाये नय्या

भजन रुखे अव्वल N 6473

जमना किनारे फूलों के बागों में बांसुरी बजाऊं राधा २
कहाँ तुझे पाऊं मैं हिया में बिठाऊं-पलकन पियारी न लियो बाधा।
हमारी प्रिया की मरम उदासी निस दिन रोये राधे प्यारी
उन बिन छाती छलकत आंखे हाथ मुरलिया बचारी
अंसुअन रोई चरण धोई - बांसुरी बजाऊं राधा २
आओ सखी धीरे - कुंजन में राधे पियारी
डारे गरे बांही..........

फजन रुखे सानी

बजाके सत्यानाशी बांस की बांसी को जाता रे
अरे मैं कैसे पाऊं कोई नहीं बताता रे
सुना जा बे मधुर मुरली कदम भी हंस के खिली
आली ने नाजुक कली सताता रे
मुरली ओ मधुर वारी, कलेजे में कहर डारीं
अंखियां आंसू धार बहातारे
ले गयो दिल सखी चैन नहीं कलेजा है दुखियारो

श्री० हरेन्द्रनाथ चटर्जी

भजन **रुखे अव्वल** N 7408

चित चंदन बिलमाई - निद्रा ने घेरी माई
इत घन गरजे उत घन गरजे चमकत बिजू सबाई
उमड़ घुमड़ चहु दिशसे आया-पवन चलो पुरवाई
बिरहासे मेरो प्राण जलत है दुगधा बेलि सेचाई
प्राण रहत मोको दरशन दीजो-प्राण राखो चरनाई
दादुर मोर पपीहा बोले-कोयल शब्द सुनाई
मीरा दासी चरन उपासी चरन कमल चित लाई

भजन **रुखे सानी**

हे गोबिन्द राखो शरण अब तो जीवन हारे।
नीर भरन मैं तो गयो सिन्धु के किनारे।
सिन्धु बीच वसत ग्राह चरन धरि पछारे।
चार पहर बरजब गयो लेगयो मझ धारे
नाक कान डूबन लागे कृष्ण के पुकारे।
द्वारिका से चले गोपाल गरुड़ के अभिसारे।
ग्राहक अरि माधो गज राज के उधारे।
सूरदास मगन भये नन्द के दुलारे।
तेरो मेरो न डर यम के द्वारे।

कालू कव्वाल

गजल   रुखे अव्वल   N 6587

यह ऐश जभी तक है जब तक यह जवानी है
फिर हाथ को मलना है हसरत की कहानी है
होती जो शराब अच्छी पीते ही सरूर आता
सच मुझको बता साक़ी यह मै है कि पानी है
इबरत न हुई तुझको कुछ हाल मेरा सुन कर
ग़म का यह फिसाना है हसरत की कहानी है
इतलाय हराम उसपर वाअ़ज ने किया जिदसे
कहते है जिसे बादा एक किस्म का पानी है

गजल   रुखे सानी

वे मौत मरेंगे कभी शिकवा न करेंगे
सौदाई बनेंगे तेरा सौदा न करेंगे
मजनूं रहेंगे तेरी परवाह न करेंगे
भूले से भी मिलने का इरादा न करेंगे
मर जायेंगे पर तेरी तमन्ना न करेंगे
यह जब्त हमारा है यह है जब्र हमारा
रोना भी नहीं है सिफ्त अब्र हमारा
कुछ होगा सकूत और तहे क़ब्र हमारा
दुनिया ही पे मौक़ूफ़ नहीं सब्र हमारा
हम हश्र में भी आपका शिकवा न करेंगे

आफत पे यह आफत है मुसीबत पे मुसीबत
क्या २ न करे देखिये कम्बख्त मोहब्बत
झेला करें बैठे हुए कब तक ग़मे फुरकत
देखा ही करें दूर से दो इतनी इजाज़त
होते ही खफा प्यारसे अच्छा न करेंगे

ग़जल — रुखे अव्वल — N 6594

अच्छा नहीं यूं सर पर इलजाम ज़फा लेना,
मुझ को जो सताना तुम जी भरके सता लेना।
इक दाग मुझे देकर तुम खुश हुए दिल लेकर,
यह तो है नया देना यह तो है नया लेना॥
बीमार तुम्हारा हूं तुम मेरे मसीहा हो,
आना तो दवा देना जाना तो दुआ लेना।
काबे में शफ़क करना सिजदा उसी काफिर को,
बुतखाने में सर रखना तब नाम खुदा लेना॥

ग़ज़ल — रुखे सानी

भुलादे जो ग़म क्या वह तक्दीर भी है।
कोई तुम से मिलने की तदबीर भी है॥
यह दिल तेरे काबे से बेहतर है वाअज़।
कि इस घर में दिलवर को तस्वीर भी है॥
मिलेगा न दिलबर कोई उस से बढ़कर।
वह बेदरद भी है वह बेपीर भी है॥

है क्या देर अब इमतहाने वफ़ा में ।
ज़िगर भी है सर भी है शमशीर भी है ॥
न बोलो न बोलो मगर यह तो कह दो ।
कि नाचीज़ की कोई तक्सीर भी है ॥

गजल **रुखे अव्वल** N 6372

या परदा उठादे रुखे जानाना दिखादे
या ज़ोके नज़र से मुझे बेगाना बनादे
आखिर कोई सूरत तो बने ख़ानाये दिलकी
क़ाबा नहीं वनता है तो बुतख़ाना बनादे
हम खूने जीगर पीके चले जायेंगे साकी
ले शीशाये दिल तोड़ दे पैमाना वना दे
दीवानगीये इश्क़ के बाद आही गया होश
और होश भी वह होश कि दीवाना बनादे
करता है तसव्वर तेरा इस रंग की बातें
सुनले कोई दो हर्फ तो अफसाना वनादे

गजल **रुखे सानी**

परी जमाल भी इन्सां जरूर होता है ।
फिर उसपे आंख हो अच्छी तो हूर होता है ॥
अहाये शर्त है माशूक के लिये नखबत ।
बुरी भी शक्ल हो जब भी ग़रूर होता है ॥
जिसे पड़ा हो नई ताक झाक का लपका ।
वह खुल्द में लेकिन पाबन्द हूर होता है ॥

हज़ार रंग में और तफ़क्कर में नहीं।
उसी का परदा उसी का जहूर होता है॥
वह मेरे वास्ते करते हैं जब सितम इजाद।
सितम शरीफ जमाना जरूर होता है।

रूखे अव्वल N 6567

कैसी मुरली बजाये गयो बलमा
हाय हमका पागल बनाय गयो बलमा

सरूरो बादा परस्ती से काम रहता है
जबां पे साकी महवश का नाम रहता है
खयाले पीरे मुर्गा सुवह व शाम रहता है
नज़र के आगे सुराही व जाम रहता है

सुध बुध छीनो मस्त बनायो
कैसा प्याला बनाये गयो बलमा

जहांने इश्कमें देखा तो चारसू तू है
वहार बाग है फूलों में रंगो बू तू है
मेरी तलाश मेरे दिल की जुस्तजू तू है
मेरी नुमाज़ो तयम्मुम मेरा वजू तू है

बल बल जाऊं अपने ही रंग में
हाय मोरे मन को रंगाय गयो बलमा

तेरे ही वास्ते मल के भभूत जोग लिया
क़रार मन में न वाक़ी रहा वह सोग लिया

कोई अनीस न हम दम न ग़मगुसार रहा
तेरे खयाल में ऐसा बला का रोग रहा
नूर कहते हैं प्रीत लगाके
हम का जोगन बनाये गयो बलमा

ख्वे साना

पिया बिन दिन मोरा कैसे कटी है

कोई अनीस नहीं कोई ग़म गुसार नहीं
कोई शरीक ग़में कल्ब सोगवार नहीं
ग़में फिराक की जलती है आग सीने में
पिया की याद में इक लहजा भी क़रार नहीं
पिया बिन............

मेरा फिसाना भी इक़ क़ाबिले फिसाना है
वह बद नसीब हूं दुश्मन मेरा ज़माना है
फिराक़ यार मेरी मौत का बहाना है
ज़वां पे शामो सहर अब यही तराना है
पिया बिन............

ज़िगरमें उठता है रह रहके दर्द रोते हैं
ग़मे फिराक में मुह आंसुओं से धोते हैं
वह और होंगे जो बेफिक्र होके सोते हैं
यहां तो जान यह कह कह के अपनी खोते हैं
पिया बिन............

गजल **रुखे अव्वल** N 6379

दिल गया दिल गया दिल गया दिल गया

एक दिन उसकी महफिल में जा पड़ा
देखा मजमा है अश्शाक का जा बजा
हर तरफ है कयामत का आलम बपा
जिसको देखा तो लब पर यही है सदा
दिल गया दिल गया............

याद महबूब किसको सताती नहीं
किस जगह यह जलन खूं रुलाती नहीं
मरके तासीर उल्फ़त की जाती नहीं
कब्रे मज़नूं से आती है अबतक सदा
दिल गया दिल गया............

कैसे चोरी हुई किसने डाका दिया
किसने धोका किया कैसे लूटा गया
दिलका पहलू में मिलता नहीं है पता
नूर कहता है हरसू यह रोता हुआ
दिल गया दिल गया............

ग़ज़ल **रुखे सानी**

दर्दे दिल दर्दे दिल दर्दे दिल दर्दे दिल

मैंने पहले कहा था कि मत उससे मिल
उसकी उल्फतमें होना पड़ेगा खिजल

हाये बर्बाद कैसी हुई आओ गुल
लेके दिल आखिरश दे गया संग दिल
दर्दे दिल............
आशकी का ये आखिर नतीजा हुआ
दिल लगानेका हमको ये फल मिल गया
आंख उसने मिला कर सितम ये किया
दिल लिया दिल के बदले वो देकर चला
दर्दे दिल............
मिसर में क्या सबब था यूसुफ़ बिका
हुस्न का कूचे कूचे में शोहरा हुआ
किस बिना पर वो क्यूं हस्त खाना बना
हाय किसने जुलेखा को रुसवा किया
दर्दे दिल............

गजल **रुखे अव्वल** **N 6531**

मोहे कल नहीं आवे मोरा जिया घबराये
कैसी मोहनी सूरतया, कैसी भोली सूरतया कैसी मीठी २ बतियां
मोरा जिया ललचाय
श्याम बंसिया बजाके, मोसे नैनां मिलाके, सुन्दर रूप दिखा के
मोरा मन में समाये
लूं मैं चरनन की बलियां, प्यारे कृष्ण कन्हैया
थामो २ मोरी बहियाँ मोरी गगरी छलकाय
प्रीत नूर से बढ़ाये, मन में बिजरी गिराये, काहे जख्मी बनाये
बाण नैनों को चलाये

गजल   रुखे सानी

जग में रुसवा हो जायें, हम तुम दोनों बलमा
लैला मजनूं कहायें, हम तुम दोनों बलमा
गेरवा कपड़ा रंगायें, भेष जोगी का बनायें, बन में धूनी रमायें
हम तुम दोनों बलमा
मैं पियें और पिलायें, दोनों दुनियां को भुलायें, ऐसे बदमस्त होजायें
हम तुम दोनों बलमा
प्यास बिरह की बुझायें, पर्दा दूरी का उठायें, एक ही रंगमें रंगजायें
हम तुम दोनों बलमा
जोश वहदत बढ़ायें, दोनों पागल कहायें, सारी दुनियां को हंसायें
हम तुम दोनों बलमा

अली हुसेन कव्वाल।

गजल   रुखे अव्वल   N 6593

तुम मुझको दाद इक न दो इस का ग़म नहीं,
तुम सा कोई हसीन खुदा की क़सम नहीं,
तुम लेके दिल समझ न सके दिल की कैफियत,
क्या इस में सरगुजिश्त हमारी रक़म नहीं
उलफत में कैसी फूट यह क़िसमत ने डालदी,
हम हैं तो तुम नहीं हो जो तुम हो तो हम नहीं,

उड़ती है मरने वालों की ख़ाक और क्या कहूं,
कूचा तुम्हारा गोरे ग़रीबां से कम नहीं;
सर चढ़ गये जो रश्के क़मर उनको कह दिया,
है अर्श पर दिमाग जमीं पर क़दम नहीं

ग़ज़ल रुखे सानी

ग़ज़ब तेरे नैना ओ बांके छैला
नेहा लगा के भई बदनामी, प्रीत का चरचा जगत में है फैला
ग़ज़ब तेरे नैना…………
सोग में तुम्हरे सोहाग न भावे, चन्द्र बदन मोरा होगयो मैला
ग़ज़ब तोरे…………
बिरहा की आग सफी अस लागी, प्रेम नगर में जैसे कैस और लैला
ग़जब तोरे नैना………
कर दिया तेरे हवाले जो क़ज़ाने मुझको
मार डाला तेरी चितवनकी अदा ने मुझ को
तेरी दुजदीदा निगाहों में असर कैसा था
क्या कहूं लूट लिया शरमो हया ने मुझ को
ग़जब तोरे………

गजल रुखे अव्वल N 6377

आज छाया है अबरे बहार साकि गुलशनमें
वह मै पिलाके हो लुतफे बहार आंखोमें
तमाम उम्र रहे फिर खुमार आंखोंमें

खुमके खुम जो खुलें-पीके रहें मस्त दिल आरा-दे दे एक जाम खुदारा
तेरे कुरबान दोबारा—आज छाया है अबरे बहार
पिला दे जाम किस्तोंमें नामहो जाये-सनफीपे नगीना फैज़े आम होजाये
ऐसी होके पियें जाम हो लबरेज हमारा—होशसे अब हो किनारा
करो आंखोंका इशारा—आज छाया है अबरे बहार

गजल रुखे सानी

जाने जहां तूने मारा दिखाके जलवा—तीर रे अदा थोड़ा हटा करसे
अशारे तेरी सूरत दिलकश—करके हिजाव आह कैसा मेरा दिल लूटा
शर्म व हया से
लाजिम भी थी शर्त मुहब्बत—शीशाये दिल हाये तोड़ा वफाके बदले
संग जफा से
कब है गवारा हिज्रमें जीना-अब तो दम लबपे आया कहूं क्या जालिम
रंजो बला से
दिलका लगाना समझा था आसान
यह सनफी होके रुसवा बुतोंका शिकवा।
क्यों है खुदा से

N 6584

नात रुखे अव्वल

जोगनकी झोली भर दे ऐ बेकसोंके वाली
आई हूं दर पे तेरे ए मेरे शाहे आली
लाई हूं नज्र करने सल्ले अलाको डाली
उम्मीदवार रहमत है मेरी खस्ताहाली

जोगनकी झोली भर दे.... ....

मैं हूं तेरी भिकारन ए दो जहांके दाता
नख्ले मुराद अपना है खुश्क मेरे आका
आबे करम से कर दे सरसब्ज डाली २
जोगनकी झोली भर दे........

रख न पास अपने सरमाया आख़रत का
सरकार लुट गई मैं ग़फ़लतने मुझको लूटा
सामान खो चुकी हूं हैं दोनों हाथ खाली
जोगनकी झोली भर दे .....

मोहताज वेनवा हूं है वक्त दस्तगीरी
होगी कबूल आका जवतक न अर्ज मेरी
छोड़ूंगी मैं न हरगिज रोजे की तेरे जाली
जोगन की झोली भर दे ....

नात रूखे सानी

थाम लो मोरी बहियां नबी जी
नार जहन्नम मोहे डरावे, कांप उठत मोरी देहियां नबी जी
थाम लो मोरी ....
मोहे वता दे तुमरी डगरिया, नाहीं आस कोई गुय्यां नबी जी
थाम लो मोरी ...
निश दिन सगी कोई रो २ कहत है लागू मैं तोरी पय्यां नबी जी
थाम लो मोरी .....

याद रह रहके मदीनेकी जो तड़पातो है
रूह कालिब में तपे हिज्रसे घबराता है
तालिबे दीद रहे हिंदमें नालां कबतक
चाक दिल चाक ज़िगर चाक गरेबां कबतक
थाम लो मोरी ......

फखरेआलम कव्वाल

रुखे अव्वल

N 6585

ऐसे बेदरदीसे नैना लड़ी है
जान मुसीबतमें आन पड़ी है,
कोई घड़ी नहीं राहत नसीब है मुझ का
बलाये जान फिराके हबीब है मुझ को,
दरद है दिलमें सोज़ जिगर में
ऐसी कलेजेमें फांस गड़ी है,
मैं सीना चीर कर दिल और जिगर दिखा देता,
जो बसमें होता सितमगर को बता देता
सांस भी लेना अब तो कठिन है
तिरछी नज़रकी वह चोट पड़ी है,
निगाहे नाज़का मारा हर एकको पाया,
किसीके लब पे था नाला कोई तड़पता था
हाये जिगर हाये दिल हर तरफ है
कूचाए जाना में लूट पड़ी है,

रुखे सानी

सय्यां गये कौन देश बता दे सखी
ज़माने भरमें कहां लेके उसका ग़म न गये
सुये अरब न गये या सुये अजम न गये,
बहारे दैर न देखी कि हम हरम न गये,
जगह वह कौनसी बाक़ी रही कि हम न गये
सय्यां गये कौन देस .. ...
बस अब तो हिज्रका सदमा सहा नहीं जाता,
यह रंगे बाग़ यह गुलशन मुझे नहीं भाता
क़रार क्या कि मुझे सब्र तक नहीं आता,
निशाने यार जो मिलता तो जाके खुद लाता
सय्यां गये कौन देस ....
ज़मीमें उसका पता है न आसमामें पता,
न उस मकांमें पता है न इस मकांमें पता
अगरचे पाया है लोगोंने कल्बोजां थोड़ा हटा कर पता
मगर मुझे न मिला उसका दो जहांमें पता
सय्यां गये कौन देस ......

गजल **रुखे अव्वल** **N 6508**

प्रीतके फंदे में फंस गई हो
लोग कहे मोहे मत बौरानी, कासे कहूं मैं बिपता कहनी
आओ खबर लो दिलबर जानी, मैं तो फंस......

अब रंग रलिया नीक न लागे, सूना भवन मोरा जियरा डरावे।
कौन नगर सखी सय्यां बिराजे, मैं तो फंस………
न कभु सय्यां दरस दिखावे, निसदिन माहिर बिरहा सतावे
मैं तो फंस………

गजल **रुखे सानी**

प्रेम की भूल भुलय्यां मैं तो फंस गई
न पूछो एसी है पुर पेच राह उल्फत की
भटकती फिरती हूं दर २ मैं हिज्र की मारी,
हवास गुम है पड़ी हूं कुछ एसे चक्कर में,
तलाश करती हूं मञ्जिल मुझे नहीं मिलती,
प्रेम की भूल…… ..
निगोडी पहले कभी चाह से ना वाकिफ थी,
न सोज़े कल्ब ही पहिले था और न दरदे दिली,
तड़प तड़प के गुजरती है अब तो आठो पहर,
सजन से हाय रे किस जोग में निगाह लड़ी'
प्रेम की भूल………
लगाती दिल न कभी जो मुझे खबर होती,
कि रफता २ फज़ूं होगी बेकली दिल की,
पिया से मिलने की तदबीर लाख की मैं ने,
हजार हैफ न बर आई अरजू दिल की,
प्रेम की भूल……

मि० के० सी० डे०

फिल्म　　　रुख अव्वल　　　N 6541

बाबा मनकी आंखें खोल
दुनिया क्या है एक तमाशा, चार दिनों की झूठी आशा,
पल में तोला पल में माशा, ज्ञान तराजू लेके हाथ में,
तोल सके तो तोल……
मतलव की सव दुनियादारी, मतलब के सब है संसारी
जग में तेरा को हितकारी, तन मन का सब जोर लगाकर
नाम हरी का वोल………

फिल्म　　　रुखे सानी

तेरी गठरी में लागा चोर मुसाफिर जाग जरा
आज जरासा कितना है यह, तू कहता है कितना है यह
दा दिन में यह वढ़े कर होगा, मुंह फट और मुंह जोर
नींद में माल गंवा वैठेगा, अपना आप लुटा वैठेगा
फिर पीछै कुछ नाहीं वचेगा, लाख मचावे शोर………

होली　　　रुखे अव्वल　　　N 6380

मोरे नैनके ऊपर मारी सैंया पिचकारी
भर पिचकारी मुखपर मारी भीज गई तन सारी
अबीर गुलालसे रंगमें वोरी गावत दे दे तारी
कृष्ण नन्द सो फगवा नहीं

भैरवी **रुखे सानी**

ऐ री मोसे होरी खेलन आये श्याम कुमर नन्दलाल
अबीर गुलालकी झोरी भर भर डारत रंग गुलाल
केसर रंग पिचकारी छिड़कत डार प्रेम को जाल
कृष्णानन्द रंग में भिजोई भिगवा लिये ब्रजलाल

भजन **रुखे अव्वल** N 6418

न ढूंडो और न हो हैरान—हैं वसते तुममें ही भगवान
जोगी बन कर जटा बढ़ाओ—घर २ जाकर अलख जगाओ
जंगलमें सब उमर गंवाओ—हो न यूं हैरान
गीताका गुरु ज्ञान बखानो—वेद पुरान जनम भर छानो
सच्ची बातोंको नहीं मानो—तुम्हारा कूर है अज्ञान
रहते हुवे नित दीन जनोंमें—या बालकके सरल मनों में
या दिलके मीठे बचनोंमें—यह ही है ठीक विज्ञान

रुखे सानी

दम आया न आया ख़बर क्या है—यह जग एक रातका सुपना
कभी दिखाना दिखाना
इस दुनियाका नहीं भरोसा—सुपना की सी छाया
सोच विचार न कर मन मूरख—जिन खोजा तिन पाया है

भजन **रुखे अव्वल** N 6572

उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है
जो सोवत है सो खोवत है जो जागत है सो पावत है

टुक नींदसे अखियां खोल ज़रा खो गफलत रबसे ध्यान लगा
यह प्रीत करनकी रीत नहीं सब जागत हैं तु सोवत है
एक २ भुगत करनी अपनी ओ पापी पापसे चैन कहां
जब पाप गठड़िया सीस धरी फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है

भजन — रुखे सानी

मेरे पीतम प्यारे रामको लिख भेजूं री पाती
शाम सुने सो कबहु न दिन हो जान बूझ गई पाती
ऊंचो चढ़ चढ़ पन्थ निहारूं रोय २ अखियां राती
तुम देखे बिन कल न पड़त है हियो फटत मोरी छाती
मीराके प्रभू कब रे मिलोगे पूर्व जन्मके साथी

फिल्म रुखे अव्वल N 6520

न आया मनका मीत, उमरिया बीत गई सारी उमरिया बीत,
आहट पाकर कोई जरासी कहते हैं लोगो आते हैं,
धोका खाने वाले नैना हरदम धोका खाते हैं,
इस आशा और निराशा में सब गइ उमरिया बीत,
नाहीं पड़े मोहे पी बिन चैना, पीके दरशको तरसत नैना,
पल पल छिन छिन ढलते ढलते गई उमरिया बीत,

फिल्म रुखे सानी

मत भूल मुसाफिर तुझे जाना ही पड़ेगा,
फुलवारी जब फूल खिले तो फूली नहीं समाती है,
अपनी २ सुन्दरतापर कली २ इतराती है,

शबनम है जो रो २ कर हर फूलको यह समझाती है,

एक मुसाफिरखाना है दुनिया एक मुसाफिरखाना है,

मोह जालमें फंस कर मूरख फिर पाछे पछताना है,

गाफिल एक दिन सबको यहांसे इतना कहकर जाना है,

अफसोस न जाना था के जाना ही पड़ेगा,

मोहम्मद ख़लील कव्वाल

N 6510

दादरा **रूखे अव्वल**

कोई नैनासे नैना मिलाये चला जाये,

ठारी रही मैं तो अपनी द्वारिया,

हिरदेमें बरछी लगाये चला जाये,

ऐसे बे दरदके पाले पाडी हूं, मिनती न माने रुलाये चला जाये,

हर लीनो मन मोरे हिरदेसे प्रीतम,

प्रेमी नदीमें डुबाये चला जाये,

दादरा **रूखे सानी**

वान मारा वान मारा बान मारा रे,

मतवारी नैनोंने जादू बान मारा रे,

कल सरे शाम जो चौक के जानिब गुजरा

क्या बताऊं मेरी आंखोंने जो मन्जर देखा,

जुल्फ बिखराये कोइ बाम पे था जल्वा नुमा,

देखकर हुस्न यह बेसाख्ता मुंहसे निकला,

वान मारा वान मारा.......

मतवारी नैनों ने ...

वादिये बख्दमें जब नाक्ये लैला पहुंचा,
कस के पास खबर लेके बगूला आया,
शोर इक वलवला अंगेज जरस का उट्ठा,
बस वह दीवानये दिल सोज सदा देने लगा.

बान मार बान मारा.........
मतवारी नैनों ने ....

रात फरहाद से रूयामें मुलाकात हुई,
दिल मेरा कांप उठा देखके हालत साकी,
तेशा इक हाथ में था एक में तस्वीर कोइ
बामे खुशरू की तरफ देख के कहता था यही,

वान मारा वान मारा.........
मतवारी नैनों ने

गजल रूखे अव्वल N 6569

दिल ने धोका दिया दिल ने धोका दिया
मना करता था कूये सनम में न जा,
आखरश मेरा कहना न दिल ने सुना,
धोका देना मगर मुझ को मक़सूद था.
इक इशारे में पहलू से जाता रहा,

दिल ने.........

हाये बैठे बिठाये यह क्या होगया,
चैन मिलता नहीं कोई पहलू ज़रा,

हर घड़ी रंजो ग़म का है अब सामना,
सब्रो राहत भी साथ अपने लेता गया,
दिल ने धोका दिया........
किस से पूछुं कहां जाऊं ढूंढू किधर,
रहम खाया न कुछ भी मेरे हाल पर,
चल दिया मुझ को रोता हुवा छोड़ कर,
मेरे नाज़ों का पाला हुवा बावफा
दिल ने धोका दिया........

गजल रुखे सानी

काहे मचावे बन में कोयलिया शोर
तड़पे सजन बिन जियरा मोर मोर
सय्यां नगर चली परभू बचाना
डर है न लूटे कहां रहिया में चोर चोर
आओ गुसय्यां मोरी संकट टालो
ग़म की घटा है सर पे छाई घंघोर घोर
अब तक मिली न राहत कोई खबरया
सारी उमरिया पिया को ढूंडी चो ओर ओर

भजन रुखे अव्वल N 6533

किस सोच बिचार में बैठे हो मन सुध करो भइ इक छिन को
जग चिंता को सब दूर करो और त्यागो विषय धन को
प्रभु कुब्जा में अनुराग करो ओर प्रस्तुत हो हरी कीर्तन को

हरि तरानके विच सब ब्याकुल हो तुम आकुल प्रभु दरशन को
भगति और प्रेम की फूलों से भरपूर करो हृदय कानन को
एकांत सुधा रस पान करो और शांत करो अपने मन को

भजन रुखे सानी

धोयदे धोयदे रे धोबनिया मोरी प्रेम की चुंदरिया
ले ले साबुन ले ले पानी काया मल मल धोवे
अंत की दाग नहीं छूटा है निरमल कैसे होवे
धोदे धोदे रे धोबनिया............
झूठे घर को घर कहे और खांठी घर को गोर
में चला अपने घरको लोग मचावें शोर
मियां रोवे जब लग जिया बहन रोवे ६ मास
घर की तिरया तीन दिन रोवे दूसरा ढूंढे वास
धोदे धोदे रे धोबनिया........
कबीर दास जब जग में आये जग हंसे तुम रोये
एसी करनी कर चलो फिर तुम हंसो जग रोये

मास्टर एज़ाज अली

गजल रुखे अव्वल N 6513

दिल लगी मेरे हक में कजा हो गई
मर गये हम किसी की अदा हो गई
तुम हसीं थे तो चाहा था दिल ने तुम्हें
फिर खता इसमें सरकार क्या हो गई

उस की रहमत ने भेजा मुझे खुल्द में
जब कहा मैंने मुझ से खता हो गई
मौत आई तो दिल को करार आगया
जान रंजो अलम से रिहा हो गई
वेबफाई का शिकवा अबस है वली
जब जमाने से उनका वफा हो ग

गजल रुखे सानी

हिज्र में जख्मे जिगर दिल में मेरे नासूर है
आह व गम देने वाले किस लिए तू दूर है
उनपे मरता हूं जिन्हें मरना मेरा मन्जूर है
मौत को मैं ढूंढता हूं मौत कोसों दूर है
आप की खू से तो वाकिफ हूं मगर अब क्या करें
दिल से हम मजबूर हैं दिल आपसे मजबूर है
आपने तो इक झलक दिखलाके परदा कर लिया
और वदनाम आज तक दुनियां में कोहे तूर है

N 6455

गजल रुखे अव्वल

हसरत भी मेरी कब्र पे दिलगीर हो गई
बादे सबा उलझ के गिरहगीर हो गई
गुल झाड़ने की शमा में तासीर हो गई
जारी मेरी जबां पे यह तकरीर हो गई
मरें तेरे कूचे में जन्नत यही है
सनम आखरी अपनी हसरत यही है

करें रात दिन तेरी चौखट पे सिजदा
हमारी नुमाज और इबादत यही है
चमकता रहे दागे दिल ता कयामत
सुना है निशाने मोहब्बत यही है

रुखे सानी

हमने देखे हैं नौजवानो में, मए रंगी के लुत्फ पानी में
आही जाता है दिल कहीं न कहीं, रोज मरते हैं जिन्दगानी में
दीनो इमां पे पड़ गया डाका लुट गये हम सराये फ़ानी में
उम्र फानी गुजर गई यारब, तेरे बंदों कीं बंदगानी में
वह अमीर और हम फकीर वली, प्यार कैसे हो आग पानीमें

गजल रुखे अव्वल N 6555

दिल में मेरे दौर चश्मे मस्त जानाना रहे,
है मजा कावे में इक छोटा सा बुतखाना रहे,
या खुदा हम मैंकशों पर इस तरह होवे जज़ाब,
पांव दोज़ख में रहें हाथों में पैमाना रहे,
माशूक़ का तो जुरम हो आशिक़ खराब हो,
कोई करे गुनाह किसी पर अज़ाब हो,
दोज़ख में पांव हाथ में जामे शराब हो,
कोई करे गुनाह किसी पर अज़ाब हो,
चश्म में हो मय भरी और दिल में पैमाना रहे,
कावा सीने में रहे आंखों में बुतखाना रहे,

गजल रुखे सानी

हां इमतियाज काबा व बुतखाना चाहिये,
मशरब मगर ज़माने में रिंदाना चाहिये
शायद कभी वहक के चले आयें शेख जी,
मस्जिद के पास ही दरे मैखाना चाहिये,
साक़ी उठी वह देख घटा झूमती हुवी,
रिंदो के लब पे नारये मस्ताना चाहिये
साक़ी हमें भी इक बुते कमसिन के वास्ते,
हलकी सी मय हो छोटा सा पैमाना चाहिये

मिस्टर जी० एन० जोशी

गजल रुखे अव्वल N 5750

प्रीत सुनाऊं गीत बनाऊं
कोयल बन कर गाऊं गाऊं
प्रेम जगा दिया चित को हर लिया
ख़ोजन को क़हां जाऊं जाऊं

ठुमरी रुखे सानी

माने नाहीं सय्यां
इतनी अरज मोरी मानत नाहीं
छोड़ो बात सय्यां

आनन्द जी व केशव लाल

रुखे अव्वल N 5763

मरी रे मरी रे मरी रे जान आजा तू आजा
सेजा पोढे बालम, मैं बारी जाऊं सय्यां
मैं पन्खा लेकर खड़ी रे, जान आजा तू आजा
पेंचा बँधे बालम मैं वारी जाऊं सय्यां
मैं तुर्रा लेकर खड़ी जान आजा तू आजा

रुखे सानी

बुरा है मुल्क यह स्वामी जरा भी बाहर मत जाना
जमाना सख्त नाजुक है दिवाना बनता है शामा
सलामी हमारी होजाये हमीं पर प्रेम बरसाना,
अबर नारी की नजरों पर कभी न नाथ तरसाना
मोहनिया मतवाली तुमको दो दो सलाम
अक्कल देने वाली तुमको दो दो सलाम
नरवर घर के काम संभालो, होवे तब बच्चों को पाल
उपवन के हो माली तुमको को दो २ सलाम
गया समझ लो काल पुरानो तिरया मरद और मरद जनाना
जगदम्बा महा काली तुमको दो दो सलाम

प्रो० वी एन ठाकुर, अलाहाबाद

मल्हार **रुखे अव्वल** N 5802

उमंड घुमंड घन बरस बून्दरी।
चलत पूरवै सनन नननन थर थर कापै
मनुआ लरजे झिंगरव बोले झनन ननन नन नन ॥
चमक चमक चमके जो मनुवां दमक दमक दमके
दामिनिया मन भावन गेर लगन आयो
दग तान मान दग लिय हिय धिटि किटिधा
धिटि किटिधा ॥ १ ॥

बहार **रुखे सानी**

सधन धन अभराई।
बड़ि गेर भई तामे पुकारू मलिया किनी वाले लाल झूले ॥
ले ले दे दे चितवा भंवरन के पास कोयलिया बोले
कूंक कूंक सुन सुन सरस वाले।
बिरहन के संग वाम फिरत मेराहि लाल डोले डोले ॥

देस **रुखे अव्वल** N 5780

दई पिया बिन कैसी रतियां बैरिन भई
कल ना परत मोसो अचला भई
मेरी आहे बीर कैसे धरू धीर
मोहे तो निठुर नेक सुधा ना रही

खमाच रुखे सानी

सांवरो ने बंसी बजाई
मैं तो सुध बुध बिसराई
सुनत बांसरी सुध बुध बिसरी
खुलगई अंगिया हमारीं
कहो सखी का बैरन बंसी
देखत ल्यूं गी छिनाई

मा॰ मनोहर बरवे

गजल रुखे अव्वल N 5776

दो फूल साथ फूले किसमत जुदा जुदा है
नौशाह के एक सर पर, एक कब्र पर चढ़ा है
दो भाइयों को देखो आपस में हैं हक़ीक़ी
एक शाह नामवर है एक शाहजी बना है
निकले सदफ से मोती दो एक साथ ऐसे
एक पिस रहा खरल में, एक ताज में टिका है
एक ही शजर की शाखें दो एक साथ काटीं
एक आग में जलाई, एक का बना असा है
दो मुरग असीर आये, देखो नसीब उनका
सदके में एक छुटा है, एक जिबह हो रहा है

गज़ल — रूखे सानी

कहीं बेखुदी में ए दिल, न ज़बां से नाम लेना।
जो ख्याल इश्क़ आवे, तो जिगर को थाम लेना॥
मेरे हाथों ही से पीना; जो तुम्हें है शौक़ सागिर।
मेरी आबरू बचाना, न उदू से जाम लेना॥
यही काम है हमारा शबो रोज ए सितमगर।
तेरा नाम सुबह लेना, तेरा नाम शाम लेना॥
तुम्हें कौनसी है मुशकिल किसी दिलपे जख्म करना।
जो छुरी न काम आवे तो अदा से काम लेना॥

N 6381

ठुमरी — रूखे अव्वल

छांड़ छांड़ माने नहीं सय्यां
काह करूं गुय्याँ—जाने नहीं देत मोहे
माने नहीं सय्यां·······

ठुमरी — रूखे सानी

छांड़ो मोरी बईयां
तुम ठाकुर लरकत कलईयाँ
हमारे पिया जो मानत नाहीं
ढीट लंगरवा कन्हैया
छांड़ो मोरी बईयां

मास्टर कमाल

भजन रुखे अव्वल N 6595

प्रभू कैसे उतरूं पार नैय्या आन फंसी मंझधार
गहरी नदियां नीर अगम चौरासी वहे धारा
जो मुखकी आंधी और छाये वदरि कारा
करो तुम आन के निस्तार, नैय्या आन पड़ीमंझ धार
वनके मगरमछ पांचों इन्द्रि ताके मुंह फैलाये
उलटी सीधी नाव चले यह देखके मन थराए
चांद न सूरज और न एको जोत भरा तारा
कैसे भंबर से नांव बचाऊं रास्ता अंधियारा
अन्तर कव होइ उजियार, नैय्या आन फंसी मंझदार

भजन रुखे सानी

जप ले जप ले साधू भूल न अपने मालिक का तू नाम
विपदा तोरी टल जाई बनजाई बिगड़ा काम
नाग फनी का फूल है दुनिया मत दामन उलझाओ
लेलेती है धर्म दिखा कर थोड़ा सा आराम
सुख के कारण पापी काहे बनता है नादान
जन्म अकारत हो जायेगा छोड़ बुरे काम
क्या करने परदेश में आया है तू मन में सोच
जैसी करनी वैसी भरनी यह होगा अंजाम

भजन पहला भाग N 6568

भजो मन रामा रामा रामा

तंदुल लेके मिले श्याम को होगये मगन सुदामा
छीन विपति हरि करुणा निधी बख्शो कंचन धामा
अजामिल, गज, गृध, भीलनी, तारी गौतम बामा
जो जो अधम तेरे शरनागत ले ले प्रभू को नामा

भजो मन........

ध्रूव, प्रह्लाद अटल पद दीनों देव धन्ना को जामा
राजा वलीं को दर्शन दीने लंक विभीपण धामा

भजन दूसरा भाग

भज मन ओंकार चित लाई
जासे मिटे विपत दुखदायी

जीवन जल विच बुल्बला होकर फटत पार न लाई
यह विचार सरिता तट तरुवर तब लों हों कुशलाई
रंग खिदत ज्यों रहे न तेरो झूटी करत ढिटाई
कर स्थूल उदर के भीतर वोशन कीनी सहाई
इहर आ फस विपत जाल में वह सुरता बिसराई

के० एच० वाकन्कर

ठुमरी रुखे अव्वल N 5734

मैं तोसे नहीं बोलूंगी, बालम छोड़ो मैं तो जात ॥ घृ ॥
डगर चड़त मोरी बैया गहोना, बालम छोड़ो मैं तो....

वागेसरी **रूखे सानी**

अवगुन कही नहीं जात भाई
नयो नित कुञ्ज ग्वालिन मो, कान्ह करत उत्पात ॥
पानी भरन मैं जाय रही थी। मिल्यौ
तिहारी छैला ने पकरी मोरी गैन
फोर डारी मैं मन में सकुचात ॥ १ ॥

वी० एन० पावलकर

वागेसरी **रूखे अव्वल** N 5735

ऋतु वसंत तुम अपने उमङ्ग सों
पी घुंड में निकसो तरसो ॥
आवे तो लाला घर बैठे लाओ
पांग बंधावो फूली तरसो ॥

भैरवी **रूखे सानी**

मेरे गली आजाओ रे सांवरिया
जमुना के नीर तोर धेनु चरावे
बन्सी बजा जाओ रे सांवरिया

खमाच **रूख अव्वल** N 5747

मान नहीं सैंया तोरे ॥ धृ ॥
डगर चलत मोरी सुधहु न लीनी
जोग सासन ननदिया ॥ १ ॥

सारङ्ग रुखे सानी

हमारी मनु निकसे चलो जनिया ॥
चुपके २ मैं तेरी याद पिया करता हूं ।
ले खबर तेरी कि मैं इश्क पर मरता हूं ॥

जे० एल० रानाडे

देश रुखे अव्वल N 5751

सय्यां हटो मोसे न बोलो
अब मत बोलो जावो जावो जावो
जावोजी जावोजी तुम पैरे न परो
निरलज बन कर मत डोले

बागेसरी रुखे सानी

तुम तरसावत हो प्यारी को दरस बिना
हूं तो तेहारी बलिहारी
कल न पडे मोहे निसदिन रट लागा
रहत जिया तेहारी बलिहारी

मलिकार्जुन मन्सूर

सारङ्ग रुखे अव्वल N 5753

विन बादल बिजली कहां चमके
न कहूं गरजे न कहूं बरसे
अरे गोरिया के भाल पर बिंदया चमके
बिन बादल

जंगला **रुखे सानी**

काहेरी ननदिया मारे बोल
अब ही मंगाई बिष खाई मरोरी
लाज की मारी मैं कौन तकत हों
जोबन करत झक जोर

मलहार **रुखे अव्वल** H T 38

सोरंग चुनरया देआ मंगाय
प्यारे मोरे बालमा में नवा
यह ही लाल में पिरोगी
रेस रेस धानी खोल दे

काफी **रुखे सानी**

वरकत वालियो ठाडो मोहे बुलये अरी ए
नन्दन जागे हारे मोरे मारत कंकरया
जागे सब घरके लोगवा अव कसे का जाऊं
प्यारी मोरी वाजे

मिसरा मांड **रुखे अव्वल** H T 43

मोरा मन हर लीनो
श्याम सुन्दर मैं तोरे बलिहारी, सुरतिया दिखाजा मोहे प्यारे २
रैन बिना मोहे तरपत बीती, दरस दिखाजा मुझे प्यारे

भैरवी बहार रूखे सानी

जोबना ललया अन धूमक धामे
बरजिन माने, बरजिन आवे
अत पल बिन कैसे गावे,

के० एच० वाकंकार औफ भोर

गजल रूखे अव्वल N 5762

नजरों से देख प्यारे ईश्वर है पास तेरे
वह है सभी ठिकाने घट २ की बात जाने,
उस को जो न माने वह मूढ़ है घनेरे,

काफी रूखे सानी

कैसे खेले हरी होरी जमना तीरे
उड़त गुलाल लाल रंग सब किनी कंचन की पिचकारी

मास्टर अमृतलाल (नवसारी)

काफी रूखे अव्वल N 5752

जावो जावो कान्हा नाहीं बोलूंगी
वृन्दा वासी कान्हा गोकुल वासी कान्हा
बन्सी बजावे सुध वुध लीनी
अब मोसे काहे करत बर जोरी

बागेसरी रुखे सानी

नाहीं आए शाम सुन्दरवा
सगरी रैन बीती जात रे
तड़प तड़प जियारा जात
रोये रोये कट गई रैन

मि० जी० एन० जोशी

भजन रुखे अव्वल N 5769

छांड़ो लंगर मारी, बहिया गहोना।
मैं तो नारी पराये घर की।
मेरे भरोसे गोपाल रहोना।
जो तुम मेरी बहिंया गहत हो।
नयन जोर मेरे प्रान हरोना।
बृन्दा वन की कुञ्ज गली में।
रीत छोड़ अन रीत करोना ॥ १ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरिधर नागर।
चरन कमल चित टार टरोना।

भजन रुखे सानी

लाज रखो तुम मेरी कन्हैया—प्रभुजी
जब बैरीनें कबरी पकरी।
तबही भान मरोरी—घृ ॥
मै गरीब तुम करुणा सागर।

दुष्ट करत बल जोरी……
सुन लीजे बिनती मोरी।
मैं सरन गही प्रभु तोरी।
मीरा कहे प्रभु गिरिधर नागर।
तुम पिता मैं छोरी।

मास्टर धूलीया व रामा देवी

रुख्ने अव्वल

N 5757

मालिन—मैं हूं जैपुर की मालिन लो फूलों का हार।
मोरे गोरे से मुखड़े पे मरते हजार॥ मैं हूं····
भोली सुरतिया, पतली कमरिया।
मोरी मतवाली चाल मोरे नागन से बाल॥

या खुदा, खूबसूरत बनना यह भी क्या कुछ गुनाह है, जैपुर के अन्दर फूल वेचने जाती थी जब मुझे हलवाई पानवाले और तांगे वाले मेरे सामने ही भांपते थे, उन बलाओं के पंजे से बचकर यहां अहमदाबाद में आई तो यहां भी दूसरी बला सामने आई एक मुवा मोटर ड्राइवर मैं जहां जाती हूं वहां मेरे पीछे २ आता है लो देखो वही सामने से आ रहा है।

ड्राइवर—(पौम, पौम चलो सेट एक आना, भद्र से स्टेशन एकआना

पैसेंजर –ए मोटर ड्राइवर रीची रोड आना है।

ड्राइवर—क्या यह मोटर किराये की नहीं है यह तो गरवारे मोटर वर्क्स की रैली मोटर है समझे (मोटर ड्राइवरोंकी मारा मारी)

मालिन—फूल लो फूल।

ड्राइवर—ए मतवाली मालिन, जरा देखूं तेरी फूलों की डाली।

मालिन—जा मुए मुंह संभाल कर बात कर नहीं तो सुनादूंगी गाली, मुये जरा आइने में अपनी सूरत तो देख, तुझे देख कर भूत भी भड़क जाते हैं तू क्या देख कर मुझ पर आशिक हुआ है। कहां मैं गुल अनार।

मैं रंगीली फूल रंगीले, रंग मेरा निराला है।
मैं चाहूं क्या तुझ जैसे को जैसा कव्वा काला है।

ड्राइवर—मेरी जान, मैं तो तेरे पर मर मिटा हूं।

वह कौनसा दिल है जिसे इश्क़ का आजार नहीं।
अच्छी सूरतका भला कौन तलबगार नहीं।

रुखे सानी

ड्राइवर—मेरी जान चार दिन की चांदनी के मुवाफिक यह चंद रोजा जवानी पर इतराया न करो। ख्याल रखो कि सच्चे आशिक़ तो बड़ी मुशकिल से मिलते हैं।

मिलाते खाक में हमको जो हम तुम्पे मरते हैं।
मेरी जां चाहने वाले बड़ी मुश्किल से मिलते हैं॥

मालिन---अरे जा मूए ओ काले सांप डसने वाले।

मैं नहीं बोलूंगी तो से बतिया॥

ड्राइवर—काला २ मत कह प्यारी, काला सब से आला है।

सच पूछो तो गोरे से मा काला कीमत वाला है।

मालिन—गोरा समन्दर छीपे गोरी उसमें मोती गोरा है।

वह मोती पहिने वह गोरी जिसका मुखड़ा गोरा है।

ड्राइवर—जब तक तेरे बाल हैं काले वहां तक जान जवानी है।

उजले होंगे दुनिया कहेगी देखो बुढ़िया नानी है।

फिदा हुसैन व हमराहियान

नात रुखे अव्वल N 6485

लोग देखेंगे वहां हम ने यहीं देख लिया
तूर पर हजरते मूसा के करीं देख लिया
बद्र में हम रहे सरकार अमीं देख लिया
जाबजा अजमन आराये जमीं देख लिया
दीदये दिल से तुझे दिल में मकां देख लिया
लोग देखेंगे········

कभी हंसते फूलों मे तेरी आन मिली,
कभी सूरज की हकीकत मै तेरी शान मिली,
कभी आरिफ की जबां से तेरी पहचान मिली,
दिल के अंदर तेरी तस्वीर तो हर आन मिली,
लोग देखेंगे········

परदये तूर में भी जल्वा तेरा छुप न सका,
दिले मन्सूर में भो छुप के वही बोल उठा,
देख कर लौट गई यह बुलबुले आशुफता नवा,
कहती फिरती है मेरी तरह गुलिस्तां में सबा,
लोग देखेंगे········

नात रुखे सानी

अब मैं भी जरा देखूं कब तक तेरा परदा है,
यूं शरम हया का अब एक २ को दावा है,
खुरशीद भी छिपता है छिप २ के निकलता है,
अब मैं भी जरा.......
थीं काफ के परदे में परियां भीं तो पोशीदा,
उन को भी उठा लाया इन्साने जहां दीदा,
अब मैं भी जरा........
दुनियां की निगाहों से दिन भर तो छिपे तारे,
फिर शाम को घबरा कर वे परदा थे बेचारे,
अब मैं भी जरा........
फिर दीद की हसरत है फिर मस्त को वहशत है,
फिर बात को रह २ कर फिर बिगड़ी हुवी मत है,
अब मैं भी जरा........

प्यारू कव्वाल व पार्टी

गजल रुखे अव्वल P 10701

न मैं उम्मेद लाया हूं न मैं अरमान लाया हूं
तेरी उलफत के नज़राने को सिर्फ इमान लाया हूं
तेरा रुए किताबी खुब गया है मेरी आंखों में
तलावत के लिये दरपरदा में कुरान लाया हूं
अरे काफ़िर अदा में और तुझ से मुन्हरिफ तोबा

तुझी को देख कर अल्लाह पर ईमान लाया हूं
कहीं ऐसा न हो तुम रूठ जाओ मेरी बातों से
बड़ी हसरत से आया हूं बड़े अरमान लाया हूं

गजल रुखे सानी

कहें क्या कि गुल्शने दहर में वह अजब करिश्मा दिखा गए
कहीं आशिकों को मिटा दिया कहीं लनतरानी दिखा गए
कभी देरो काबा बना दिया कभी ला मकां का पता दिया
जो खुदी को तुमने मिटा दिया तो वह अपने आपमें पा गये
कहीं अन्दलीबे शुमार में कहीं गुलमें फस्ले बहार में
कभी नूर में कभी नार में वह हजार रंग दिखा गये

मास्टर फकीरउद्दीन वा लच्छी राम

भजन रुखे अव्वल N 6384

तुम्हीं हो देश रक्षक और तुम्हीं इसके बसैय्या हो
तुम्हीं ऐ नाथ इस भारत की नाओ खिवैय्या हो
कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण,
आओ प्रभू क्यों देर लगाई–मित्रों पर है गफ़लत छाई
आफ़त हैं शत्रु ने मचाई– भारत मात की है यह दुहाई
सोतों को आन जगाओ—गीता के शब्द सुनावो
कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण
प्रभू आनन्द बर्षा आओ बरषाते हुए बन में
खिलादो शांति के फूल आकर इस समय मन में

दीपाओ प्रभू हृदय सेवकों के प्रेम पानी से
बुझादो आत्मा की प्यास अब दर्शन के पानी से
बाल तुम्हीं गोपाल तुम्हीं हो-मात यशोदा के लाल तुम्हीं हो
दयाल तुम्हीं लज्या वाल तुम्हीं हो-कंस के जीका काल तुम्हीं हो
देश का कष्ट मिटाओ—दासों का मान ,वढ़ाओ
कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण

भजन

रुखे सानी

ना कुछ सोच तू मन में कर रे—कर्म लिखा सो होवत प्यारे
होवन हार मिटै न कबहूं—बहुत जतन कर कर हारे
हरिश्चन्द्र, नल, राम, युधिष्ठर—राज छोड़ बनवास सिधारे
अपनी करनी सबको भरनी—दुश्मन मित्र न कोई तुम्हारे
राम राम सुमिरन कर बन्दे---वह दुःख संकट कर दूर निवरो

ग्रामोफोन मास्टर

हिंदोस्तान

वा

न्यू थियेटर्स

मिस सुन्दर बाई।

H129 h

मजाकिया दादरा नं०—१

छोटीसी हुं मैं गुइयां दुल्हा, बुढ़ा आया री।
कोई लावे कंगनवा कोई बेसर लावे री
बुढ़ेको क्या जो सुझी बुढ़ा घोघां लाया री।
कोइ लावे असरस कोइ साड़ी ज़रकी अंगया री,
बुढ़े को क्या जो सुझी बुढ़ा मलमल लाया री।
कोइ चढ़े टमटम पे कोइ बग्घी चढ़े री,
बुढ़ेको सुझी क्या गधेपर बुढ़ा आया री।
कोइ लावे...............

दादरा नं०—२

हां पिया मुझको पिया न बिसारना,
तनमन तुमपर वारना।

तेग़ोंसे मैं नहीं डरने वाली,
नैनोंका भाला न मारना,
हां बालम मुझको पिया न बिसारना।
स्वु खेलुंगी वाड़ी प्रेमकी तोसे,
दिलही पड़ेगा जो हारना।
हां बालम मुझको............

पहिली तरफ

H 308 h

हाय, पनघटवा पे लुट गई राम।
हाय, मोहे छैलाने कीन्हो वदनाम।
सर् पे घड़ा मोरे, हाथमें गगरी,
हाय, काहे छेड़े डगर बीच श्याम।
कमर लचक गई, बहियां मुरक गई,
हाय, तुम कैसे निठुर हो श्याम।
सुन्दर कमर मोरी, सौ-सौ बल खाये,
हाय, बरजोरी करत मो से श्याम।
हाय, पनघटवा पे लुट गई राम।

दूसरी तरफ

रसीले तोरे नैनवा रे, कटारी मोहे मारे रे।
कटारी मोहे मारे, करेजवामें प्यारे,
रसीले तोरे नैनवा रे, कटारी मोहे मारे रे।
जो उसने पूछा कि तुम किसलिए सताते हो ?
किसी गरीबको दिन-रात क्यों जलाते हो ?

नहीं पसन्द है दिल, फेर दो मेरा मुझको।
खुदाके वास्ते क्यों खाक़में मिलाते हो ?
ता बोले, किसने लिया, कब लिया, कहां है दिल !
जो मुझे छेड़ते हो, चोर तुम बनाते हो !
पैयां परू में तोरी, बहियां पकर मोरी,
काहे करत झकझोरी, ऐजी हां—
देखो हबीब न छेड़ो मोहे, बीच डगरियां ठाड़े !
रसीले तोरे नैनवा रे. कटारी मोहे मोरे रे।

मिस लक्ष्मी

U H 132 h

पहिली तरफ

कान ना सुनी बात मोरी जियाकी सुध बुध
लाए पिया कहां से
बात खट मोरे पिया की

दूसरी तरफ

क्युं जवानी खो रहे हो शादमानीके लिए,
फिर तुमही रोया करोगे इस जवानीके लिए।
सुखता है जब के जखी वो हरा होता नहीं,
वुह कहानी पे जवानी पीर फानीके :लिए।
आबे रफ़ता नहरमें फिर लौटकर आता नहीं,
पा नहीं सकता गुजिश्ता जिन्दगानीके लिए।

मिस कमला बाई

कहरवा **पहिली तरफ** H 290 h

सखी पीया दरशनवां सपनवां भैलेना
जब तो रही मोरी बारी उमरिया की अब तो भैलेना
दोनों नये हो जोवनबां की अब तो भैलेना
सखी पिया दरशनवां
चितवतहूं में वलम जी किरहीया की फंसबे गैलेना
जाय कोने मधूवनवां की फंसबे गैलेना
नित जोहत दीनन्वां की बीती गैलेना
सखी पीया दरशनवां ....

दादरा **दूसरी तरफ़**

कहवां गये पिया नैना लगायके
मुझ विरहनको बावरी वनायके
आपतो जाई सौत संग रीझे
सुखन पैहें हमें तरसायके
वाको भेद नहीं जांनू सखिहो
कौने ठइयां रहत पीया जायके
करके प्रीत ना प्रीत भयो री
का करूं दइया अब पछताय के
"प्रेम" पियासे आस लगाई
जाई सेजिया पे रहुं मुरझायके

मिस मुनन बाई

गज़ल **पहिली तरफ** **H 174 h**

हसरते जलवा गिरी मोंहरे लवे खामोश है
आंख महवे दीद थी इतना मुझे भी होश है
मेरे असियां से ज़ियादा रहमतो में जोश है
मैं नदामत पेश हूं मौला नदामत पोश है
जोश पर है जलवये मस्ताना अहदे सवाब
ओनशीली आंख वाले कुछ तुझे भी होश है
कह रहा है शोरे दरिया से समुन्दरका सुकून
जितना जिसका जर्फ है उतनाही वह खामोश है।

भजन **दूसरी तरफ**

चमनको यूं मेरे साकी ने मैखाना बना डाला
कभी तो सीसये महफ़िलका पैमाना बना डाला
गिरफ्तारे वलाये इश्क पहले ही से था लेकिन
तुम्हारे गेसूवोंने और दीवाना बना डाला
खुदाके घर मैं कब्जाकर लिया है अंधेर तो देखो
वुतोंने दिलमें रहकर दिलको बुतखाना बना डाला।

ऊमा देवी और मिस्टर सैगल

पहिली तरफ **N H 163**

ऊमादेवी—

प्रेम नगर में बनाऊंगी घरमें तजके सब संसार
प्रेमका आंगन प्रेमकी छत और प्रेमके होंगे द्वार

सैगल—

प्रेम सखा हो प्रेम पड़ोसी प्रेमही सुखका सार
प्रेमके संग बितायेंगे जीवन प्रेमही प्राणाधार

ऊमा—

प्रेम सुधासे स्नान करूंगी प्रेमसे होगा सिंगार

सैगल—

प्रेम धर्म है प्रेम कर्म है प्रेम ही सत्य विचार

दूसरी तरफ

सैगल—

तड़पत बीतत दिन रैत
निशदिन बिरहा तोरा सतावे कैसे आवे मोहे चैन
रात कटे गिन तारे ढूंढ़त नैन सांझ सकारे
आवो सुनावो मनके वासी, मधुर मधुर बैन ।

उमादेवी और पी सन्याल

रुखे अव्वल **N H 174**

उमा—

मरूंगी मरूंगी ऐसखी निश्चय मरूंगी
मन मन प्राणका ऐरी सखी मैं नाहीं मोह करूंगी

सानपाल--

प्रेम सखी है जीवन अमृत अमृतसे फिर क्यों क्यों डर जाना.

उमा---सानपाल--

(पाठक इस रेकार्डको नं० N H 174 की जगह N H 164 पढ़ें)

उमा सन्याल—

प्रेम नगर की रीति यही है जीते जी मर जाना।

रुखे सानी

बसन्त ऋतु आई आई-फूल खिली डाली डाली
कुन्ज कुन्ज कोयलिया बोले, दादुर पपीहा मोर
नाचत करत शोर हृदय सुखमें डोले।

पहिली तरफ

H 11331 h

प्रेम-कहानी सखि, सुनत सुहावे।
चोर चुरावे माल-खजाना,
पिया नयनकी निंदिया चुरावे।
प्रेम-कहानी सखि, सुनत सुहावे।
डाकू चलावे लोहेका भाला,
पिया नजरियाके तीर चलावे।
प्रेम-कहानी सखि, सुनत सुहावे।
प्रीत-नगरकी रीत निराली,
जो मर जाये, अमर हो जावे।
प्रेम-कहानी सखि, सुनत सुहावे।

दूसरी तरफ

प्रेमकी नैया चली जलमें मोरी,
छोटीसी नैया चली जलमें मोरी।

प्रेमका सागर, प्रेमकी नैया,
प्रेम मुसाफिर, प्रेम खेवैया,
प्रभु बिन मोरा कौन रखैया ?
सोच करे तू क्यों अति भोरी ?
ये नैया कभी न गली जलमें,
मोरी छोटीसी नैया चली जलमें।
मोरी प्रेमकी नैया चली जलमें।

चार तरफ़ छाया अंधियारा,
सूझत नाहीं, दूर किनारा,
थर-थर कांपे मन मतवारा।
क्यों इतनी मनकी कमज़ोरी ?
ये नैया हमेशा पली जलमें।
मोरी छोटी सी नैया चली जलमें।
मोरी प्रेमकी नैया चली जलमें।

उमा, सैगल, पहाड़ी

पहिली तरफ H 264 h

प्रेमकी हो जय जय-जीवन है अब सुखमय
भाग हुवा उदय फिर खोया चन पाया ॥
आशाके फुल खिले हिरदेसे हिरदे मिले
एक है प्राण दो काया ॥

वियोगकी रातको भोर भई फिर सुरीए
ने रूप देखाया ॥
मिलनका शुभ दिन आया ॥
प्रेमने मनकी गंगा जमुना को सुख संगम
पे मिलाया ॥
धन्य धन्य वह रहना जिसने प्रेमका नित गुन
गाया ॥

दूसरी तरफ

ये कूचके वखत कैसी आवाज मेरे कानों
में आ रही है
ये क्या आंसु हैं ये क्या कशिश है जो
मुझको वापस बुला रही है
बिछे हुए हैं जमीं पे मोती शुआऐ बादल
से छन रही है
फिज़ाऐ रनगीं है ऐसी दिलकश जो मुझको
वापस बुला रही है
परिनदे शाखों पे गा रहे हैं हवाऐ झूला
झुला रही है
उन्हींमें कोइल की कूकभी है जो मुझको
वापस बुला रही है
छुटा जो काटोंसे अपना दामन तो बिरहके
दरिआने पैरथामे
शजरकी हरशाख सरनगूं है नसीम सहरी
बुला रही है

श्रीमती हीरा बाई

कहरवा　　　　पहिली तरफ　　　　H 299 h

मोरे सैयां गये परदेस, ननदी बोली न बोलो।
जबसे गये मोरी सुधहू न लीन्हीं, कबहूं न भेजो संदेस
ननदी बोली न बोलो।
प्रीतम बसे पहाड़पर, हम जमुनाके तीर।
अबके मिलना कठिन है कि पांव पड़ी जंजीर।
जों मैं ऐसा जानती, प्रीत किये दुःख होय।
नगर ढिंढोरा पीटती, प्रीत करो ना कोय।
ननदी बोली न बोलो।

दादरा　　　　दूसरी तरफ

कैसे रहूंगी विनु सैयां सेजरिया,
जाग जाग नित रैन बिताऊं
आस जोहत मोरी बीति उमरिया
कैसे रहूंगी विनु सैयां....
तेरी जुदाईके सदमें जो सहा करते हैं,
रोज़ो शब आठ पहर आहो बका करते हैं
शोलए इश्क जो सीनेमें उठा करते हैं
हिज्रमें तेरे ये हर वक्त कहा करते हैं—
कैसे रहूंगी बिन सैयां....

प्रेम पियासे विनती करत हूं,
काहे मोसे फेरी नजरिया,
कैसे रहूंगी बिनु सैयां....

श्रीमती निहारवाला

H 242 h

पहला रूख़

मतवारे तोरे नैना राम जिया तरसे
इन नैननमें जादू भरा है
और मोह लीयो मन मेरा राम जिया तरसे
सेवक पियाके नैना रसीले
नैनन बीच समायो राम जिया तरसे

दूसरा रूख़

नैयना वालेने मारी नजरिया
तड़पत बीते मोहे सारी दिन रतियां
आके डालो तुम मेरे गले बईंया
मधसे भरी तोरी तिरछी नजरिया
काहे मारी हे मैका कटरिया
सेवक पिया तुम भारी निठूरईयां
काहे बोलत नाही मोसे बतियां

पहिली तरफ H 307 b

पिया, मन-भावनी रंगीली तोरी अखियां।
कजरारी अनूप, नैना चञ्चल हैं,
जिया ललचावनी, रंगीली तोरी अँखियां।
पिया, मन-भावनी रंगीली तोरी अँखियां।
अमृत हलाहल मधमें डूबीं,
अति छबि सोहनी, रंगीली तोरी अँखिया।
पिया, मन-भावनी रंगीली तोरी अँखियां
'चक्र' पिया दरशनकी प्यासी,
रस बरसावनी, रंगीली तोरी अँखियां।
पिया, मन-भावनी रंगीली तोरी अँखियां।

दूसरी तरफ

हां री, सजनवालेसे लागे हैं—नैन।
गज़ब किया, तेरे वादे पे एतबार किया,
तमाम रात क़यामतका इन्तज़ार किया।
तेरी निगाहके तसव्वरमें रात-भर काटी,
लगा-लगाके छुरीको गलेसे प्यार किया।
हां री, सजनवालेसे लागे हैं नैन।
इश्ककी बरछी जिगरपर मारी,
नाहीं परत मैका चैन दिन रैन।
हां री, सजनवालेसे लागे हैं नैन।

गजल पहली तरफ H 11347 h

हम उनके वास्ते यूं जां निसार करते हैं,
वोह मेरे सामने दुष्मनको प्यार करते हैं ॥
निराले ढंगसे दिलको शिकार करते हैं,
निगाहके तीर कलेजेके पार करते हैं ॥
सवाले वस्ल पे कुछ इस तरहसे रुठे हैं ।
वो सुनते ही नहीं मिन्नत हज़ार करते हैं ॥
न जाने आज भी किस-किस पे ढायेंगे आफ़त
इलाही खैर हो वो फिर शिंगार करते हैं ।

गजल दूसरी तरफ

दिल छीन लिया मेरा, उस सांवरी सूरत ने ।
जख्मी मुझे करडाला, उस माधुरी मूरत ने ॥
आंखों से उतर आया है दिलमें तेरा नक्शा,
वे खुद हमें करडाला, उस शोखकी उलफत ने ॥
जो जलवा देखने को फिरते हैं प्रेम दर दर ।
मौका न दिया लेकिन, बद बख्तिये किस्मत ने ॥

पहली तरफ H 283 h

मार डाला नयनवा चलाए के रे
जुलफें हैं काली काली गालों पे लालो
अवहां मार डाला नजरिया मिलाए के रे—मार····
इशक़ में रंग नया लाइ हैं उलफत तेरी ,,

मेरे काबू मे नहीं रहती तबीयत मेरी ,,
आपके हिजर में ये हो गई हालत मेरी ,,
अबतो पहचानी भी जाती नहीं सूरत मेरी ,,
अवहां मारडाला घूंघटवा हटाए के रे—मार⋯
चाल चलत मतबारी नयारी
अबहां मारडाला पलकिया चलाए के रे—

दूसरी तरफ

नामानूं नामानूं नामानूं रे मोहन तोरी बतीयां नामानूं रे।

तुमतो करते हो दिल लगी दिल की।
क्या मिटाओगे बेकली दिलकी॥
दिलके जमनवामें नैया चलावे--

नाचरह वे नाचरह वे नाचरह वे रे—मोहन⋯⋯⋯

लगी है दिल में लगन दिल की लगी ऐ मोहन।
खिलादे दिलकी कली दिलमें लगी है मोहन॥
आधी आधी रतिया में बनसिया बजावे।
नाऐबे नाऐबे नाऐबे रे मोहन तोरी सेजिया पर ना ऐबेरे
अभी है कची कली दिल को दूखाया न करो।
तुमें हमारी कसम दिलको जलाया न करो॥

नामानूं नामानूं नामानूं रे--अब मिली है अखिया नामानूं रे
मोहन तोरी⋯⋯

श्रीमती अंगूरवाला [कालो]

दादरा　　　　**पहली तरफ**　　　　H 322 h

देखो मेरे तीरे नज़रका निशाना,—
मुश्किल है यारोंको दिलका बचाना।
नहीं है सुरमा यह, बारूद है दुनालीमें---
पलीता खूब है रोशन, ये सुर्ख जालीमें—
चितवनसे घायल है सारा ज़माना,
देखो मेरे तीरे नजरका निशाना।
भरी हैं गोलियां, पुतलीका एक बहाना है,
निगाहें फैर हैं, आशिकका दिल निशाना है।
नाँज़-ओ नखरेसे दिलको लुभाना,
देखो मेरे तीरे नज़रका निशाना।

कहरवा　　　　**दूसरी तरफ**

दरस दिखाय जा एक बार तो—
यहाँ आयके, अरे कन्हैया, हाँ हाँ—
बारी जवानी, प्रेम दिवानी,
विरहके लागे पौन बान,
मदन सतावे मोहे,
तपन बुझाय जा एक बार तो—
यहाँ आयके, कन्हैया, अरे हाँ हाँ—
नयन-वानकी चोटसे, घायल मोहे कर दीन,

रैन दिना तड़पत हूं, मैं जैसे जल बिन मीन।

('बारी जवानी, प्रेम दिवानी' इत्यादि)

दरस दिखाय जा, सूरत दिखाय जा,

गलेसे लगाय जा, एक बार तो—

यहाँ आयके, अरे कन्हैया, हाँ हाँ

पहली तरफ़ H 11337 h

तुम्हारे हिज्रमें, एक दिन हमारी जान जानी है,

मिटा देंगे किसी दिन अपनी हस्ती, दिलमें ठानी है

तुम क्या जानो, उल्फत क्या है!

दिल क्या है, जिगर क्या है!

अभी कमसिन हो, बचपन है, अभी बाक़ी जवानी है,

तुम्हारे हिज्रमें एक दिन, हमारी जान जानी है।

निशाने-क़ब्रको भी, ठोकरोंसे तुम मिटाते हो!

न कर पामाल, तेरे आशिकोंकी ये निशानी है।

तुम्हारे हिज्रमें एक दिन, हमारी जान जानी है।

दूसरी तरफ़

तक़ाजा रोज़को, नाहककी ये तकरार रक्खी है,

उठो, ये सर है मेरा, और ये तलवार रक्खी है।

कभी होगा इधरको भी गुजर रश्के मसीहोंका,

ये मयत इसलिये अब तक सरे बाज़ार रक्खी है।

तक़ाज़ा रोज़का, नाहककी ये तकरार रक्खी है।

किसीके काकुली मिज़गां ओ अबरूका तसौवर है,

कहीं खंजर कहीं बरछी कहीं तलवार रक्खी है।
तक़ाजा रोज़का, नाहककी ये तकरार रक्खी है।

बेलारानी [बनारस]

होरी पहली तरफ H 5000

मोहे दे दे दान घुंघटवारी
घूंघट खोल गुलाल मलन दे,
मुख चूमन दे प्यारी।
घर तजौं, बर तजौं, नागर नगर तज़ौं,
बंसी बट न तजौं, काहू पै न बरजैहौं।
बावरे भये हैं लोग, बावरी कहत मोकौं,
बावरी कहेसे मैं काहू ना लजै हौं,
कहैया सुनैया तजौं, बाप और भैया तजौं,
मैया तजौं, दैया तजौं, पै कन्हैया नाहिं तजिहौं।
दान लिये बिन जान न देइहौं,
अबकी फाग हमरी पारी,
मोहि दे-दे दान घूंघटवारी।

होरी दूसरी तरफ

तू तो राधे बनो श्याम, हम नन्दलाला।
मोर मुकुट मोरे सिरपै सोहे, हाथ बँसुरिया गले माला,,
तू तो राधे बनो श्याम, हम नन्दलाला।

बाजी गोपाल बाँसुरी, परी प्रेम-फाँसुरी,
दृगन हुलास आस री, चित चारु तानमें ।
चली गयन्द-गामिनी, मनो सरुप दामिनी,
मनोज कुञ्ज कामिनी, कला-निधान ध्यानमें ।
परी प्रताप बेल जाल, पावती न नन्दलाल,
भामिनी भई बेहाल, मयनके बिथानमें ।
शरीर ना सँवारती, सुनयन नीर ढालती,
हरी हरी पुकारती, हरी हरी लतानमें ।
मोर मुकुट मोरे सिरपै सोहे, हाथ बँसुरिया गले माल,
तू तो राधे वनो श्याम, हम नन्दलाला ।
पाँव पैजनी पीताम्बर पहनो, कर चूड़ी, बेंदी भाला ।
रामदास कहै जिया नहिं मानत, मिल खेलो गोपी ग्वाला ।
तू तो राधे वनो श्याम, हम नन्दलाला ।

पहली तरफ   H 5010

मैं बुलबुल चंचल नारी मतवाली जोबनवाली ।
सुन्दर सूरत तेज नजरिया जादू भरी है कटारी ॥
आशिक़ देख तड़प मर जावें चाल चलूं मतवाली ॥
प्यारे प्यारे नयन तुम्हारे सेव लाल रुख़सारे ।
चाहनवाले लाखों फिरते इश्क हमें है मारे ॥
मैं बुलबुल चंचल नारी ॥०

दूसरी तरफ

खड़ी रहो खड़ी रहो मेरी जान कलकत्तेवाली ।
सोनेकी थाली में जेवना परोसूं
खाले खिलाले मेरी जान कलकत्तेवाली ॥
झझड़े घड़ामां गंगाजल पानी ।
पीले पीलाले मेरी जान कलकत्तेवाली ॥
फूलन निवाड़ी की सेजिया बिछाई ।
सोले सुलाले मेरी जान कलकत्तेवाली ॥
लौंग इलाइची का बिड़वा लगैहों ।
रचले रचाले मेरी जान कलकत्ते वाली ॥

मिस तारा अमेचर [बनारस]

पहली तरफ H 5002

खड़ी रहो. खड़ी रहो, मेरी जान दुपट्टे वाली ।
तेरी गलीमें आना रे जाना, मुफ्तमें हुए बदनाम ।
माथे पै टीका, कानोमें वलिया,
मोतियोंका है ललकार, दुपट्टे वाली—
गलेमें दाने, हाथोंमें बाले,
पायलका है झंकार, दुपट्टे वाली—
पतरी कमरिया, बारी उमरिया,
नयनोंका है चमकार, दुपट्टे वाली ।

दूसरी तरफ

कौने बहाने गोरी जाय गलियनमें ।
गोरीका यरवा बजजवा छोकड़वा,
हाथ नैनु लिये आय गलियनमें ।
कौने वहाने गोरी जाय गलियनमें ।
गोरीका यरवा रंगरेजवा छोकड़वा,
हाथ चुनरिया लिये आय गलियनमें ।
कौने बहाने गोरी जाय गलियनमें ।
गोरीका यरवा दरजिया छोकड़वा,
हाथ चोली लिये आय गलियनमें ।
कौने बहाने गोरी जाय गलियनमें ।
गोरीका यरवा हलवइया छोकड़वा,
हाथ पेड़ा लिये आय गलियनमें ।
कौने बहाने गोरी जाय गलियनमें ।

मिस अंगूरलता

दादरा पहिली तरफ U H 11734

जौवन फोंका खाऐ समलीआ—मोरे प्यारेको देदो खबरिया
बिरहाकी अगनी तनमे लगि है हमसे न सहियो जाए
किस रसिआकी नजर लगि मोरि पतली कमर वलखाऐ
मोरे प्यारे को...........

नदी किनारे जल भरने को चलि मैं गागर उठाए
जन्नत पियासे नजर लगी मोरी पतली कमर वलखाए
मोरे प्यारे को...........

दूसरी तरफ

ठुमरी

वैसे मनकी लगीको कहुं चोलीमें अंग न समाऐ
मुए जोवनपे आया बहार चोलिमें अंग न समाए
ऊँचे महलबा छैला रहत है नीचे अंगना हमार
करके इशारा हमको बोलावे मनको हमार लोभाए
एकतो आई है रूत वसन्तकी दुजे चाहा अपने कन्तकी
कन्त नहीं और बिरहा जलाए निन्द भी हमको सताए
छैला बोलाके पास वठाया भोजन कराया मजेदार
छेर झपटसे हमको सतावे जोवनको कैसे लुटाए
कैसे मनकी लगीको कहुं..........

मिस मुन्नी जान

U H 11735

पहिली तरफ

नाच

पतली कमरिआ लचक जाएगी
देखो झटको न पटको लचक जाएगी
मोरि पतली.........
वहींआं न पकरो जिआको सम्भालो
नाजुक कलैंआ मुरक ज।एगो
मोरि पतली.........
तुम तो बेदरदी व आकुल पिआहो
चोली अनमोली मसक जाऐगी

मोरि पतलि............

राह घाटमें छेर करत हो

जलभरी गगरी छीलक जाऐगी

मोरी पतली.......

नाच **दूसरी तरफ**

पिआ पेयारे न माने मनाऐ हारी

मनाऐ हारीरे मनाऐ हारी

औरोंके सङ्ग पीआ हंसत बोलत हैं

हमसे न बोलें बोलाऐ हारी—पीआ ......

जबसे परी वेदरदीके पाले

रतीआ नजागे जगाऐ हारी—पीआ........

दोहा—जो चमनसे गुजरे तु ऐ सवा तो ये कहना वुलवुले जारसे

नलगाना दिलको गुलों से वह जुदा नहीं हैं खारसे

इतवहे गंगा उत बहे जमना

जन्नत पिया संग में ठारी---पीआ...

मिस मामिया थिन

गजल **पहिली तरफ** U H 11737

जो ये वार फरकत उठाना परेगा।

थकीं है मुझे जहर खाना पड़ेगा।

रही आग युहीं जो उलफतकी दिलमें

मदीनेका सेहरा बसाना पड़ेगा

नतीजा यही होगा उलफतका उनके

तहे तेग सरको झुकाना पड़ेगा

दिखाए जो वो नकाबेमें अपना जलबा
तो फिर दिलका मुसकिल बचाना पड़ेगा
मोहबत में जन्नन शिकायत अवस है
नया रोज सदमा उठाना पड़ेगा

गजल **दूसरी तरफ**

जब सितम ईजाद करते हैं जमानेके लिए
मुझको पहिले ढूंढ़ते हैं आजमानेके लिए
नाजो अनदाजो हया शोखी वा गमजे यारडाल
बस एही दो यार हैं दिलके लोभानेके लिए
जिनकी सूरत देखनेको उमर भर तरसा किए
बाद. मुरदन आए वो आंसू बहानेके लिए
सच अगर पूछो तो बस काफी है एक तिरछी नजर
आशिके नाशाद की हसती मिटानेके लिए

राजमनीबाई कलकत्ता

H 5011

गजल **पहली तरफ**

बिगड़कर दफेतन कोई सितम मुझपर न ढा देना।
तेरी नजरोंने सीखा है हँसा देना रुला देना ॥
जला दो शौक़से दिलको जलाकर खाक कर डालो।
मगर मुमकिन नहीं दिलसे मुहब्बतको मिटा देना ॥
मुहब्बतकी मुहब्बत है, अदावतकी अदावत है।
निगाहे पुर गजबसे देखकर फिर मुस्करा देना ॥

मुहब्बत है न रहमत है, परस्तिश इश्क भी करना ।
जहां जलवा किसीका देख लेना, सर झुका देना ॥

गजल **दूसरी तरफ**

साक़ीसे हमको इश्क है मैख़ाना चाहिये ।
मरनेके बाद कूचाये जानाना चाहिये ॥
दिल मुबतिला है, अरसासे जुल्फोंमें आपकी ।
ज़ख्मी न हो समझके सुलझाना चाहिए ॥
बस्तीमें तेरे वहशीका लगता नहीं है दिल ।
फ़स्ले बहार आई है वीराना चाहिए ॥
तुर्वतको मेरे कहते ठुकराके नाज़से ।
कम्बख्त इसका नाम भी मिट जाना चाहिए ॥

सहगल, पहाड़ी सन्याल और राजकुमारी

पहली तरफ II 11332 h

ओ दिल रुबा कहांतक जुल्मो सितम सहेंगे
ओ दिल रुबा कहांतक !
किताबे इश्कमें लिखी हैं और ही बातें
किताबें इश्क़में लिखा हैं और ही बातें !
ओ इश्क़के दीवाने, ओ हुस्नके परवाने !
हम भी तो सुनें आख़िर, क्या हैं तेरे अफ़साने ?

जब दास्ताने-उल्फ़त, आशिक बयां करेंगे,
फिर आँसुओंके दरिया हर आंखसे बहेंगे !
ओ दिलरुबा, कहां तक !

मुझे यक़ीं है, मेरी मुहब्बतमें,
तुम भी सदमे उठा रही हो।
इधर मैं आंसू बहा रहा हूं,
उधर तुम आंसू बहा रही हो।
ओ दिलरुबा कहां तक जुल्मो-सितम सहेंगे !

दूसरी तरफ

घिर कर आई बदरिया कारी,
घिर कर आई बदरिया कारी।
बरसन लागीं बूंदनियां,
और पवन चलत मतवारी, कारी।
घिर कर आई बदरिया कारी,
घिर कर आई बदरिया कारी।
आवो सखि, जमुना-तट जायें।
आवो सखि, जमुना-तट जायें।
बंसी बजावत, दिलको लुभावत,
हमको बुलावत, कुञ्ज-बिहारी।
घिर कर आई बदरिया कारी,
घिर घिर आई बदरिया कारी।

मिस्टर सैगल

गन्धारी तेताला पहली तरफ H 27 lr

झूलना झुलावो री अम्बवा की डारी पे
कोयेल बोले रामा, कुक कुक जिया ले
नन्हीं नन्हीं बुन्दनया पड़त फौहारे
अबहुं न आये बालमवा ॥

होली चाचर दूसरी तरफ

होरी हो ब्रजराज दुलारे,
अब क्यों जाये छूपे जननी ढिग आवो बाहनवारे
क्या तो निकस के होरी खेलले क्या मुखसे कहो हारे
जोर कर आगे हमारे।
बहुत दिननसे तुम नहीं मोहन,
भाग हो भाग पुकार ले
अब तुम देखो खेल फाग की
पिचकारनके फौहारे।
चले बहु हो कुम कुम न्यारे।
होरी हो ब्रजराज दुलारे।

भजन (पूरण भक्त) पहली तरफ H 59 h

राधे राणी वांसरी दे डारो न बंसरी मोरी रे।
काहेसे बजाउं राधे काहेसे में गाऊँ रे,
काहेसे में लाउं गय्यां चराये रे,

मुखसे बजाओ कान्हा कण्ठसे गाओ रे
लठियासे लाओ गय्यां चराये रे
जावन्सी में मोरे प्रान बसत है वाही बन्सी
गइ चोरो रे।

भजन दूसरी तरफ

भजु मैं तो भावसे श्रीगिरधारी।
हृदेमें अब धुन है कृष्ण नामकी प्यारी,
मिथ्या है ममता मिथ्या है क्षमता,
मिथ्या सकल संसार,
भव भय भंजन जन मन रंजन सकल कष्ट दो टारी
भोग विलास माया चाहुं न दिलसे कृष्णका
नाम एक भाया।
कृष्ण ही कृष्ण हैं मनके अन्दर, दोउ चरणो
पे बलिहारी।

पहली तरफ II 156 h

दिन नीके बीते जाते हैं सुमरन कर पिया रामनाम
कौन तुम्हारा कुटम्ब कवीला यह सब मतलब
का है हीला
जीते जीके नाते हैं
लाख जो दास भगतके आया बड़े भाग्य
मानुष तन पाया।
कुछ भी नहीं करी कमाई--फिर पाछे पछताते हैं;

दूसरी तरफ़

अवसर बीतो जात प्राणी तेरो अवसर बीतो जात
इस कालकी हेरा फेरी में
साठ मिन्ट गुजरे गया घण्टा चौबिस में दिनरात।
पल पल करके क्षण बीतत है, इक आवत एक जात
प्राणी अवसर बीतत जात,
छे ऋतु मिलकर वर्ष होत है एक ऋतु में दो मास
मास मास में तीस दिवस है गई सन्ध्या आई प्रभात
बालकपन गया खेल कूद में जोवन युवती साथ
वृद्ध भयो कुछ बन नहीं आवे काँपत तेरो हाथ,

पहली तरफ़ H 193lr

लग गई चोट करेजवा में हाये रामा
नैनों के तीर मोहे मार गयो सैयां—लग गई
आन अचानक मैं नहीं जानु रे
घायल करके सिधार गयो सैयां—लग गई

दोहा

कुछ माजरा सुनाता हुं मैं हुस्नो इश्कका
लैलाका एक आशके दिवाना कैस था
बादे फनाथा दोनों का मदफन जुदाजुदा
लेकिन वे दोनों कब्रों से आती थी यह सदा
लग गई चोट

गोरपे मजनु के जा पुछा किसीने यह सुख़न
याद कुछ लैला कि अब भी बाकी है ओ खस्तातन
आह ठण्डी भरके बोला खींचकर मु से कफन
लग गई चोट

दूसरी तरफ

लाख सही अब पी की बतियां एक सही न जाय
जाये रहें सोतनघर निसदिन हमरा जी कलपाय
नयना लाल कपोलपे अनजन चाल भई मतवारी
रात कटे किस वैरन के घर कौन सौतन भरमाय

पहली तरफ H 241h

यह तसररुफ़ अल्लाह अल्लाह तेरे मयख़ाने में है
अक्ल की सब पुख्ता कारी तेरे दीवाने में है
मय परस्ती का मज़ा जब है कि साक़ी कह उठे
मयमें वह मस्ती कहां जो मेरे मस्ताने में है
साक़ीये रोजे अज़लकी वह निगाहे मस्त मस्त
आज हम रिन्दों के इस टूटे से पयमाने में है
सल सबिलो कोसरो तसनीमकी मौजे बहार
या खिरामे यारमें या अपने पयमाने में है

दूसरी तरफ

नुक्ताचीं है ग़मे दिल उसको सुनाये न बने
क्या बने बात जहां बात बनाये न बने
मैं बुलाता तो हूं उसको मगर अए जज़बए दिल

उसपै बन जाये कुछ ऐसी कि बिन आये न बने
बोझ सरसे वह गिरा है कि उठाये न उठे
काम वह आन पड़ा है कि बनाये न बने
इश्क़ पर जोर नहीं है यह वह आतिश ग़ालिब
कि लगाये न लगे और बूझाये न बने

पहली तरफ़ H 325h

बालम आय बसो मोरे मनमें ।
सावन आया, तुम ना आये,
तुम बिन रसिया, कुछ ना भाये ।
मनमें मोरो हूक उठत, जब
क़ोयल कूकत वनमें ।
बालम आय बसो मोरे मनमें ।
सुरतिया जाकी मतवारो,
पतरी कमरिया उमरिया बारी ।
एक नया संसार बसा है.
जिनके दो नयननमें ।
बालम आय बसो मोरे मनमें ।

दूसरी तरफ़.

दुखके अब दिन बीतत नाहीं ।
सुखके दिन थे, एक स्वपन था,
अब दिन बीतत नाहीं मोरे ।
दुखके अब दिन बीतत नाहीं ।

ये सब सहरों के चन्दे हैं ये हीरसे हवसके ऊनदे हैं
हमतो सैलानी वन्दे हैं—हम प्रीत की रीत कहा जाने
दिल जंगल ही में बहलता है यहां हुसन पर इश्क़ मचलता है
यहां प्रेमका सागर चलता है—यहां प्रेमका सागर चलता है
परदेशी प्रीत कहा जाने बनवासी मीत कहा जाने
हम ऐसा गीत क़हा जाने खिलजाए जिससे दिलकी कली

कौंची कव्वाल

दादरा **पहली तरफ** U H 160

सदा तौर वेतौर होता रहा, नया रंग दुनियां बदलती रही
न बदला हसीनों का तरजे सितम, ज़माने की हालत बदलती रहीं
तिरछी चितवन न मुझको दिखाया करो
दिल पै हँस हँसके विजली गिराया करो
शोर है आलम में के तुम दर्दे दिलकी हो दवा
मैं भी मरता हूं दिखा जावो मसीहाई जरा
कभी लेने खबर भी तो आया करो
तुम अभी कमसीन हो क्या समझो जमाने की हवा
किसको कहते हैं भला और किसको कहते हैं बुरा
सबकी नज़रों में तुम न समाया करो

मालकौस **दूसरी तरफ**

जुल्म भी ढ़ांये चलायें खन्जरे वेदाहसी, फर्जे उल्फ़त हो
अदा सरमें मुबारक बाद भी

हाले दिल सुनता नहीं कोई तो नाले क्या करूं, वागवां वेजार है
मुफसे खफा सय्याद भी
क़त्लके बदले लगाया अपने सीने से मुझे, देखकर हालत मेरी
खुद रो दिया जल्लाद भी
नामवर दोनों हैं लेकिन मेरे अफ़साने से कम, दासतां मजनूं की
देखी किस्सए फरहाद भी।

हबलु कव्वाल

पहली तरफ U H 162

तुझे ज़ालिम ! तेरी तिरछी नज़र को तीर कहते हैं
तेरे ही हुस्न को सब हुस्ने आलमगीर कहते हैं
तेरी बातों की शैदाई तेरी तक़रीर कहते हैं
यही हर वक़्त हरदम आ के दिलगीर कहते हैं
जो सर तनसे जुदा करदे, उसे शमशीर कहते हैं
किसीने नाज़ुकी देखी कोई पुतला कयामत का
कोई ज़ालिम कोई कातिल कोई फितना कयामत का
परी की शकल है कोई कोहेहूर तिलाअत का
हसीनोमें है नकशा एक से एक अच्छी सूरत का
मगर जो दिल में घर करले उसे तसवीर कहते हैं
नज़र जो ये लबालब अश्के हसरत दीदये तर में
मजा जब है कि सौदायी मोहब्बत भी रहे सरमें

तस्सवरने मजे ने चैन से बनाये थे घर में
अगर आशिक हैसच्चा तो न जाये कुवे दिलवर में
वह खुद आ जाये इसको इश्क़ तसवीरकहते हैं

दूसरी तरफ

ऐसा न हो जो गैर के पहलू में जाये दिल
रूसवा हो जो कि मुझसा किसी से लगाये दिल
बैठे वो नाज से मेरे पहलू में तो कहा
देखो कहीं न दिल ये मेरा चोट खाये दिल
धमकी कभी है वस्लकी बोसों पै है आताब
कमबख्त नाज उनका यह कबतक उठाये दिल

मास्टर बदरउद्दीन

मजाकिया पहली तरफ U H 11720

न जाया करो यारो रन्डी के घर पर।
हज्जाम उसतरे से हजामत बनाता है॥
सावन पानी लगते ही सरमुंडा जाता है।
रण्डीके उसतरे में मगर यह कमाल है।
दाढ़ीके साथ नाक भी जड़ से उड़ाता है॥
न जाया करो
रण्डी से अपने जो कोई दिल को लगाता है।
आंसूका पानी पीता है और जूते खाता है।

जबतक है पैसा सेठ बहादुर कहलाता है ।
पैसा जो हुआ खत्म तो रण्डीका यह हुकुम आता है ।
मीयां तबला मजीरा बजाया करो
जरा हुक्का भी भरकर पिलाया करो
यारो रण्डीके घर पर न जाया करो ।

मजाकिया **दूसरी तरफ**

बुढ़िया हो गई लचक तोरी नाहीं गई रे
अरे वाहरे लंगूर जरा दूर दूर दूर
फ़क़त दुम की कसर है फ़क़त दुम की कसर है
न चेहरा है रौशन न मुखड़े पे रौग़न
जैसे गुलशन तेरा उजड़ाया हुआ

पहली तरफ U H 11760

भर-भरके जाम पिला बहार आई ।
साक़ी शिताब सागरे वहदतका जाम दे,
रोशन दिमाग़ करके, शमांका जो काम दे,
खुश-रंग हो गुलाबी, और खुशबूका काम दे,
हों मस्त होशियार, वो कौशरका जाम दे ।
पहुँचे न जिसके लुत्फको, आबेहयात भी,
तहज़ीबके ख़िलाफ न हो, एक बात भी ।
भर-भरके जाम पिला, बहार आई ।
ज़ाहिद ये दे बताके वो मयख़ाना किधर ?
वहदतकी मय भरी है, वो खुमखाना है किधर

शीशा कहां पे रक्खा है, पैमाना है किधर ?
रोशन किया जहांको, वो काशाना है किधर ?

ऐ काश, कोई ये तो बता दे, किधर है वो ?
ले जाय हाथ थामकर मुझको, जिधर है वो।

भर-भरके जाम पिला, बहार आई।

पीरे मुग़ा बनाके बैठाओ नहीं हमें,
जल्वेकी आरज़ूमें रुलाओ नहीं हमें।

दोज़ख़के ख़ौफसे भी डराओ नहीं हमें,
रिन्दोंके जमघटेसे उठाओ नहीं हमें।

'जन्नत' शराब ऐसी पीओ, जिससे काम हो,
दुनियांमें तज़किरे हों, फलकपर भी नाम हो।

भर-भरके जाम पिला, बहार आई।

दूसरी तरफ़

प्रेम ही अन्दर, प्रेम ही बाहर, प्रेम ही जगने गाया रे;
प्रेमकी काया, प्रेमकी माया, प्रेमका भेद न पाया रे।
प्रेमकी सूली मनसूर चढ़ा, और सरको कटाया सरमदने,
प्रेमने देखो कैसे-कैसे सबको नाच नचाया रे !
आदमी जब आदमसे बना, फिर आदम कहांसे आया रे ?
प्रेम ही जब रंगमें आया, क्या-क्या रंग दिखाया रे !
'रब्बे अरनी' कौन था बोला, 'लन्तरानी' किसने कहा ?
परगट करके प्रेमको 'जन्नत' आप ही शोर मचाया रे !

मास्टर अल्लाह दत्त

गजल **पहली तरफ** U H 11722

तू जो शीरी तो मैं फरहादसा दीवाना बनूं
तू अगर शमा बने तो मैं तेरा परवाना बनूं
मस्त हूँ इश्क में और सरमें भरा है सौदा
तू अगर लैला बने मैं तेरा दिवाना बनूं
इश्क़में शैख़ो बरह मनका नहीं है झगड़ा
बुते काफिर तू बने मैं तेरा बुतखाना बनूं
लबे मांशूकसे मिलनेका तरीक़ा है यही
तू अगर शीशा बने मैं तेरा पैमाना बनूं
है अजलसे दिले "जन्नत" का तकाजा यह ही
यह तो मुमकिन ही नहीं मैं तेरा बेगाना बनूं

गजल **दूसरी तरफ**

आया है याद मुझको गुजरा हुआ जमाना
गुल कारयां चमनकी और मेरा आशियाना
बुल बुलका सुब्हो हरदम गुल्शनमें मू धुलाना
वह तालियां बजाना और साथ मिलके गाना
आई है याद मुझको अब उनकी दिल नवाजी
हंस हंसके पियार करना मुझको गले लगाना
आजाद कर दे अब तो अय कैद करनेवाले
"जन्नत" तो वे गुनाह है अब क्यों इसे सताना

युनीवरसल पार्टी

दादरा **पहिली तरफ** UH 11732

कानोंमें बाली डाली छल्ले हैं पोर पोर
गालों पे लाली छाई जोबनका जोर शोर
वादे सबा यह जाकर घर घर पुकार आई
बोतल के काग खोलो फसले बहार आई
फसले बहार में यु ज़ुल्फे शबाब हो
पहलू में दिलवर हो ओर जामे शराव हो
बातें हैं भोली भोली पियारी अदायें
क्यों न आशक के दिलपर बिजली गिरायें
आंखें मतवाली उसकी और है जवानी
क्यों न हो जाये दुनिया उस पर दिवानी

गजल **दूसरी तरफ**

चल रही है यूँ हवाये दर्दे दिल
चारसू फैली ववाये दर्दे दिल
राहते दिलकी जुलैखा के लिये
एक यूसुफ थे दवाये दर्दे दिल
इबने मरयम हों कि याकूबो खलील
सब के सब थे मुबतिलाये दर्दे दिल
हजरते मूसा भी कोहेतूर पर
ढूंढ़ने आये दवाये दर्दे दिल

तुझको "जन्नत" क्यों दवाकी फिक्र है
जबकि सब हैं मुबतिलाये दर्दे दिल

उस्ताद फैयाज खां

पहली तरफ

H 249 h

स्थायी

राग टोड़ी (मीयांकी)

गरवा मैं सङ्ग लागे मीत पीहरवा
आनन्द भईलवा मोरे मंदरवा

अन्तरा

सगरी रैन मोहे जागत बीती
भोर भए फल पाईला
फुलवन सेज बिछाऊं मोरे अंगना
रहस रहस गर डारुंगी हरवा

दूसरी तरफ

परज

मन मोहन बृजको रसिया
जात हतो मैं तो बृजकी गलियां
मुरली बजाये मेरो मन मोह लेत
देखी सरस सांवरी सूरत
ललच रह्यो है मेरो जिया

सुन धुन दिल बीच
लाग रही बे कलियां

पहली तरफ H H 1

मैं कर आइ पिया संग रंग रलीयां
आली जात पन घट के घाट
एक डर है मोहे सास नन्द को
दूजे दोरनियां जेठनियां सतावे
करी हें हमरी वात
मैं कर आइ............

दूसरी तरफ

मोरे मनदर अबलूं नहीं आये
क्या असी चूक परी मोरी आली
परेम पिया विन कल न परत है
कौन सौतिन भरमाये
मोरे मन्दर............

फक्रे सरहद प्रो० मिराँ वक्स

बेहाग **पहली तरफ** U H 11739

देखो सखी कनहैया रोकत डारो छैल
पनीआ भरन को मैं कैसे जाऊं मोरी आली

जमुना जल भरन जात थी
आगे से मिला यो ननद के प्यारे शाम
देखो सखी·······

दरवारी कानड़ा दूसरी तरफ

घूंघट के पट खोल तोह राम मिले
आससे मत डोरलेरी घुंघट के·······
कहत कवीर सुनो भाई साधु—
झूठे वचन न वोल—घुंघट क ·······

मास्टर छोटे खां (वनारस)

दादरा पहली तरफ II 5007

मालिनिया अलवेली नवेली चली नैना नचावत।
हाथोंमें गजरा आंखोंमें कजरा,
सुन्दर नार अलवेली नवेलो चली नैना नचावत।
जस जस जोवना ऊंचे उठत है,
लचकत आवे अलवेली नवेलो चली नैना नचावत।
मालिनिया अलवेली नवेली चली नैना नचावत।

दादरा दूसरी तरफ

नजर लागी ववुआ तोरे वंगले में।
जो मैं होती वनकी कोइलिया,

चहक रहती बबुआ तोरे बंगलेमें ।
जो मैं होती चम्पा चमेली,
महक रहती बबुआ तोरे बंगलेमें ।
जो मैं होती सावन भदहुआ,
बरस रहती बबुआ तोरे बंगलेमें ।

मास्टर गुलाम मोहम्मद गामा

मजाकिया पहली तरफ H 11346h

इस दर्दे दिल ने तो मेरी लुटिया ही डुबा दी ।
उल्फ़त ने अब तो जान भी आफत में फंसादी ।।
एक तो अपना माल खिलाना,
और फिर उस पर नाज़ उठाना ।
चकमा देकर चल दिया लेकर,
पूरी करदी बरबादी ।। इस० ।।
समझते थे इसे तो हम,
कि है ईमान का पक्का ।
हजामत कर गया मेरी,
मुझे बतला गया धत्ता ।।
चटाई बोरिया कम्बल,
चुराकर मेरा ले भागा ।

निकाला मेरा दिवाला।

नहीं अब जिस्म पर लत्ता ॥

कैसा है यारो उलटा जमाना,तुम ऐ ज़ाकिर दिल न लगाना,

हम आशिक़ बनकर होगये फक्कड़, दौलत इज्जत अपनी गंबादी ॥

इस दर्दे दिल ने ०॥०

मजाक़िया **दूसरी तरज़**

भरा है दफ्तर मेरे अमल का, गुनाह भी है, शवाब भी है ॥

किसीसे छीना, किसीको सौंपा, गुनाह भी है, शवाब भी है ॥

किसी कि कुंडी किसी का सोंटा, किसी की थाली किसीका लोटा,

हर एकका करता हूं वोझ हल्का-गुनाह भी है शवाब भी है ॥

किसीको चकमा किसीको झांका, किसीको छोड़ा किसीको फांसा ॥

इसे रुलाया, उसे हंसाया, गुनाह भी है शवाव भी है ॥

जो एक का दिल हुआ है नालां तो दूसरा दिल हुआ है शादां,

हुआ वरावर हिसाव अपना—गुनाह भी है शवाब भी है ॥

मिस क्षेत्रबाला

मिस रेणूबाला

मिस दुर्गारानी

मिस चेत्रबाला

पहली तरफ

Q S 2003

साजन नेम धरमसे बोल
एक तो कांटा प्रेमका लगा दूजे लागे नैन
तीजे सौतिनका सामना मोरा जिया न पाये चैन ॥

मोरे साजना
लगाते गर तुझसे हम न दिलको उठाते सदमे न ऐसे हरगिज़
न खाते रंजो मलाल इतना न बढ़ता दर्दे जिगर ये हरगिज़
प्यारे आओ न दिल दुखाओ करो न अब ठठोल
नेम धरमसे बोल

दूसरी तरफ

बचे रहियो मारत हूं नैना बान, मोरी जुलमी नजरिया
करेगी परेशान
पलकें हैं मोरी तीरकी गांसी भंवें बनी हैं कमान
बचे रहियो ।
गोरे गोरे मुखके ऊपर अति छवि देते हैं पान
असलमें पिया तोरी देखी चतुराई अब न करो तुम गुमान
बचे रहियो ।

मिस निहारवाला

गजल — पहिली तरफ — Q S 2013

कहां गयोरे मोसे नैना मिला के।
नैना मिलाके जियरा लुभा के॥ कहां···
वदनमें थरथरी चेहरे पे मुरदनी छाई।
पड़ा है गशमें इसी तरह एक तमन्नाई॥
न तन वदन की खवर है न जोशे रानाई।
जो होश पहरोंपर आया तो यह सदा आई॥
दिमाग़ कहता है होता हूं अव मैं सौदाई।
ख्याल कहता है होवे न उसकी रुसवाई॥
फ़िराके यार में जाहिर है जान पर आई।
तड़प तड़प के यह कहता है उनका शैदाई॥
कहां गयोरे·······

दूसरी तरफ

कोई शमा बना कोई परवाना बन गया।
मैं शौके दीदे यारमें दीवाना बन गया॥
दोनोंही जलवागाह है उस वे न्याज़ की।
काबा बना कहीं कहीं बुतखाना बन गया॥
क़िसमतसे वादे मर्ग जो गरदिश उलझ पड़ी।

ग्रामोफोन मास्टर
सेनोला रेकार्ड

मिस दुर्गा रानी

Q S 2007

पहली तरफ

गागर ना भरन देत तेरो कृष्ण माई री।
हंस हंस मुख मोर मोर गागर ढरकाई॥
घूंघट पट खोल देत सांवरो कन्हाई री।
गागर न भरन देत तेरो कृष्ण माई री।
पी न आये गुजर गईं रतियां।
अगरचे ईद है दिन और शबे बरात है रात।
ज़माने भरके लिये चशमये हयात है रात॥
किसीके वास्ते ऐशो खुशीकी बात है रात।
मगर हमारी शबे ग़म के आगे बात है रात॥

दूसरी तरफ

पी नहीं आये गुजर गईं रतियां।
अजलके आनेकी बारी है इंतेजारकी शब।
कि जान भी हमें भारी है इन्तेज़ारकी शब॥

हज़ार तरहकी ख़्वारी है इन्तेजारकी शब।
तड़प तड़प के गुज़ारी है इन्तेज़ारकी शब॥
पी न आये गुजर गईं रतियां।

पहली तरफ़ Q S 2024

पिया बिन जिया जाय कल न पड़त हाय हाय
हूं बे क़रार बिना दिलदार परवरदिगार हाय हाय
आओजी आओ दरस देखाओ जिया न जलाओ
दिल दुखाओ
तेरे फ़िराक़में जाती है जान धीर न धरत हाय हाय

दूसरी तरफ़

जिया घबराये पिया नहीं आय हिया चैन नहीं पाय
एरी कोयलवा बावरी आधी रैन न कूक
तेरी भोली कूकसे उठत करेजे हूक
प्राण तन छोड़े निकसु ही जाय
पिया बिन जिया चैन नहीं पाय
काहे पपीहा लेत है पिया पिया कर प्रान
मेरा तो उसके हेतमें लगा है पलछिन ध्यान
प्रान तन पीतम सु नहीं आय
पिया बिन जिया चैन नहीं पाय

जामे हयात टूटके पैमाना बन गया ॥
साक़ीने जामे नूरसे इसहाके वादा ख़ार ।
वह मय पिलाई आजकि मस्ताना बन गया ॥

QS 2030

पहली तरफ

तुम्हारे चेहरेको गुलरूह गुलाब कहते हैं,
तुम्हारे हुस्नको सब महताव कहते हैं।
छीन लिया है जिया,
मोरे मन पिया पिया,
विरह की लागी तोरे बान ।
रंग रंगीली, नयना रसीली
जवानीकी निशानी, बाज आई ज़िन्दगानी,
ये दुनियां फ़ानी फ़ानी ।
छीन लिया है जिया, मोरे मन पिया पिया ।

दूसरी तरफ

ख़ुदाके वास्ते—'डालो नक़ाब'—कहते हैं,
लगे नज़र न कहीं, हाँ जनाब कहते हैं ।
छिन लिया है जिया, मोरे मन पिया पिया ।
सैंय्यां तुम्हारे बिन, सूनी सेजरिया ।
पैयां पड़ूं तोरी, पैंयां पड़ूं तोरी ।
सैयां तुम्हारे बिन सूनी सेजरिया ।
तोरे दरस बिन, मोरे पियरवा, कल न पड़त दिन रैन,

जबसे लागे तोसे नयना, मोर गयो सुख चैन ।
दिल लेना, छिप जाना,
तड़पाना, तरसाना,
हाय हाय--सैयां तुम्हारे बिन सूनी सेजरिया ।

कुमारी अमिया सरकार

पहली तरफ QS 2039

मैं गिरधर के बलहारी ।
काम लजावन रूप लुभावन सूरत प्यारी प्यारी ॥ मैं गिरधर
बाँके छबीले नैना रसीले चाल चलत मतवारी
प्रीति में वाके एरी सखी मैं तन मन धन सब वारी वारी ॥ ,,
खेल में वाके संग सखीरी बीती उमरिया सारी
जीता जब गिरधर को-जीता हारी तो अपने हारी ॥ मैं गिरधर
डरसे हृदय थर थर काँपे देखके रैना कारी
बिरहा की मारी रो रो कहत हूं ठारी वाकी द्वारी ॥ गिरधर

दूसरी तरफ

दरस बिना दूखन लागे नैन ।
जबतें तुम बिछुरे पिय प्यारे, कबहूं न पायो चैन ॥ दरस बिन····
सबद सुनत मेरी छतियाँ काँपे, मीठे लागे बैन
एक टकटकी पंथ निहारूं भई छमासी रैन ॥

दरस बिना.......

बिरह-बिथा कासो कहूं सजनी, वहगई करवट ऐन

मीरा के प्रभू कबहु मिलोगे दुख मेटन सुखदैन ॥

मिस सरजू

पहली तरफ QS 2001

कल न पड़त विन श्याम, कैसे करूं बिसराम ।
सूनी लागी मोरी धाम, घेरी आई बदरी ॥
आई सावन की बहार पड़े वुन्दन फूहार करें मुरला
पुकार घेरी आई बदरी ।
सखीं पिया नहीं आये मोरा जिया धबड़ाये, करूं कौन
उपाय घेरी आई बदरी ।

दूसरी तरफ

आये सखी न पिया परदेसी, बरखा की जात बहार रे ।
लागा अषाढ़ वुमण्ड आये बादल पानी की पड़त फुहार रे ॥
सबके सजन घरहीमें आये आया न वह दिलदार रे ।
बरषा की जात बहार रे ॥

मिस सरजू और मिस्टर सत्या

पहिली तरफ   Q S 2026

औरत—प्रीत की जग में है गुलकारी सबसे न्यारी मेरे सजन
मर्द—दिन रैन की दुख से एरी सनम सुन्सान पड़ा है सारा चमन
औरत—प्रीत की रीत से सींचे इसको फल यदि खाना होय
मर्द—खोना जिसे हो हृदय अपना इसी क्यारी में खोय
औरत—प्रेम की मदिरा दोनों पियेंगे उलफ़त के फल खायेंगे।
मर्द—इस फुलवारी की है कली तू तुझपर जान लुटायेंगे
दोनों—शादमां शादमां रंग रलियां मनायें गीत उलफतके हम गायें

दूसरी तरफ

औरत—देखो आंधी चलत झकाझोर मनो पिया चले आओ
मर्द—तुम से दुख दूर होगा बलाओ —
औरत—हां हां जी मेरे मनहर पिया आओ   देखो.......
औरत—तुझपर प्रीतम प्यारे अपना तन मन धन कुरबान करू
मर्द—जैसे भौंरा फले कंमल पर मैं तेरा परवाना बनूं
औरत—हां
मर्द—जी हां
औरत—देखो आंधी
औरत—आ मेरे प्यारे तेरे गले में डालूं प्रेम की माला
मर्द—सदा सुहाग में फूल ए प्यारी जैसे चमन में लाला
दोनों—हम हों बुलबल तू गुलजार बागे उलफत में हो वहार

कुमारी लीला दास गुप्त

पहली तरफ Q S 2027

रे मन मुरख जनम गंवायो
कीर अभिमान विश्य रस राच्यो श्याम सरन नहीं आयो
यह संसार फूल सीमर को सुन्दर देख भुलायो
चाखन लाग्यो रूई गई उड़े हाथ नहीं कछु आयो
कहा भयो कबके मन सोचे पहले नहीं कमायो
कहत सूर भगवन्त भजन बिनुसिर धुन धुन पछतायो

दूसरी तरफ

समझ देख मन मीत प्यारे आशिक होकर सोना क्यारे
रूखा सूखा गम का टुकड़ा फीका और सलोना क्यारे
पाया हो तो दे ले प्यारे पाय पाय फिर खोना क्यारे
जिन आंखम में नींद घनेरी तकिया और बिछौना क्यारे
कहत कबीर सुनो भाई साधू सीस दिया तब रोना क्यारे

मास्टर नन्तू

पहिली तरफ Q S 2036

तुम मेरी राखो लाज हरी
तुम जानत सब अन्तरजामी करनी कछु न करी

तुम मेरी........

औगुन मोसे बिसरत नाहीं

पल छिन घरी घरी

सब प्रपञ्च की चोट बाँधकर

अपने सीस धरी तुम मेरी.......

दारा सुत धन मोह लियो हो सुध वुध सब बिसरी

सूर पतिन को वेग उधारो अब मेरी नावो भरी

तुम मेरी..........

दूसरी तरफ

भज ले प्यारे मन मंदिर में शिवशंकर का नाम

शिवशंकर का नाम प्यारे परमेश्वर का नाम भज ले.....

काशीसे संबन्ध न राखो द्वारका से काम

ज्ञान लगा कर ध्यान करो तो मनमें मिलेगा राम भज ले..

माता पिता कोऊ संग न जावे ना जावे धन धाम

दिया लिया ही संग चले और अन्त में आवे काम भज ले...

मास्टर सन्तोष

पहिली तरफ Q S 2014

भजो मन राम चरन सुखदाई।

जिहिं चरननसे निकसी सुरसरी शंकर जटा समाई

जटा शंकरी नाम पड़ेव है त्रिभुवन तारन आई ।
सोई चरनन सन्तन जन सेवत सदा रहत सुखदाई
तुलसी दास प्रभु महिमा गावत सोइ परम पद पाई
भजो मन राम ......

दूसरी तरफ

अखियां हरि दरशन की प्यासी ।
देखन चाहत कमल नैननको निश दिन रहत उदासी ।
केसर तिलक मोतियनकी माला वृन्दावनके वासी ॥
काहुके मनके कोऊ न जानत लोगनके मनहाँसी ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन लैहैं करवट काशी ॥
अखियां ..

पहली तरफ

Q S 2028

आई सुघर ब्रज-नार होरी खेलन, हरिसों ।
मग इठलाती, रस बरसाती, गाती राग बहार,
आई सुघर ब्रज-नार होरी खेलन, हरिसों ।
एकसे एक जोवन मदमातो, करे सोलह सिंगार,
आई सुघर ब्रज-नार होरी खेलन, हरिसों ।
पकड़ श्यामको रंगमें बोरत, केसरिया रंग डार,
अबीर गुलाल लाल भई भद्रा सुरमती नन्द-द्वार ।
आई सुघर ब्रज-नार होरी खेलन, हरिसों,
मग इठलाती, रस बरसाती, गाती राग बहार ।

दूसरी तरफ

होरी खेलत हैं गिरधारी !
मुरली चंग बजत है न्यारो, संग जुवती व्रज-नारी।
होरी खेलत है गिरधारी।
चन्दन केसर छिड़कत मोहन, अपने हाथ विहारी,
भरि-भरि मूठ गुलाल लाल चहुं देत सबनपे डारी।
होरी खेलत हैं गिरधारी।
फाग जो खेलत रसिक सांवरो, बाढ़ेउ रस व्रज भारी,
मीराके प्रभु गिरिधर मिले, मन-मोहन लाल विहारी।
होरी खेलत हैं गिरिधारी।

सेनोला होली पार्टी

पहली तरफ Q S 2029

—'ओ हो ! पण्डितजी, महफिल तो खूब सजाई है।'

—'आप ही जैसे प्रेमियोंकी दया है। आइये, इधर ही निकल आइये।'

—'ए भइया, कौन हौऔ हो, तनी गोड़वा समेट लौ ! आवत-जात आदमीके ठोकर लागेला हो।'

—'हाः हाः हाः ! मर्दवा हई का हमार गोड़ तोड़के बाय ! हमार गोड़में तो सुघर खड़ाऊं रहल,—जेकर होई, तेकर होई।'

—'भाई खड़उँवा केहू मार ले गइल होई ! पैरिया तो वाय। उठ्ठ, देखौ, बाईजी आ गइलीं, अब नाच होई।

—'पंडितजी, आदाब !

—'आइये, आइये बाईजी आइये, बड़े अच्छे समय पहुंची।'

—'हाय हाय, कैसन बढ़िया बाईजी हई, बुझायला कि इन्दर का अखाड़ाकी सब्बज परी उतर अइलीं हईं। देखः देखः हमराके खूब प्रेमसे घूर-घूरके देखत हईं। हे भइया, तनी घुसुक जा हो, हमराके अगुआ बैठे दौः !'

—'अबका हो, पांचों उगरिया घीमें, और सिर कड़ाहीमें।'

—'बाईजी, आप गाना शुरू कीजिये।'

गाना

नसीमे सुबहने पिचकारियाँ शबनमकी खोली है,
चहकती हैं चमनमें बुलबुले,–होली है होली है !
आज खेलब हमहुं होरी, राजा, तोहके लेके ना !
आँचल बीच अबीर राखूं, पिचकारी बीच रंग,
सैयां संगे होरी खेलूं, पीऊं, पिलाऊँ भंग।
आज खेलब हमहुं होरी, राजा, तोहके लेके ना ! (जायद)

दूसरी तरफ

छ र र र र र—

—'अरे, डाल दे, डाल दे, डाल दे ! भागा भागा !'

—'छोड़ दे, छोड़ दे, छोड़ दे, होली है, होली है, होली है !'

गाना

हलुआ-पूड़ी कोई उड़ाये, कोई बरफी खाये,
नत्थू बुढ़ऊ सोना पीटें, बुढ़िया भागी जाय।
आज होली है, आज होली है, आज होली है !
तबला बाजे, वायलिन बाजे, और बजे मिरदंग,
डेढ़ टांगके बाबू नाचे, जैसे ढोंग कुलंग !
आज होली है, आज होली है, आज होली है !
सेठ दिवाला मारे जाये, कर-करके अलसेट,
पेड़ू नीचे लटका जाये, बोरे जैसा पेट।
आज होली है, आज होली है, आज होली है !
मधुआ खूब चढ़ाकर लाला, गिर गये नाली बीच,
नौकर-चाकर दौड़े आये, हो गये खिच्चम-खीच।
आज होली है, आज होली है, आज होली है !
सररर सररर,—पुश्ते घाटकी काई,
खटमल बाबू दौड़े लागे, टूट गई चरपाई।
आज होली है, आज होली है, आज होली है !
कुप्पा जैसे मुंह फुलाये, भंटा पांड़े सोयँ,
करवट जैसे-जैसे लेवें, पेट बोले पोयँ।
आज होली है, आज होली है आज होली है !
होरी, होरी खेलन सब मिल-जुल सड़कपर होरी !
कादा भी खेले, कीचड़ भी खेले, टाने पकड़ बरजोरी,
होरी, होरी खेलन सब मिल-जुल सड़कपर होरी !

भाँग भी पीये मधुआ भी पीये, बकबकमें हो झकझोरी,
होरी, होरी खेलन सब मिल-जुल सड़कपर होरी !
अगड़ममें बगड़म बगड़ममें सगड़म, नालीमें मूंड़ी दे बोरी,
होरी होरी खेलन सब मिल-जुल सड़कपर होरी।

पंडित बिजे शुकल फिलम स्टार

पहली तरफ़

QS 2017

अचल सुहाग भरी।
जागरी जग उजागरी रूप सुगुन सागरी
नागरी सुधा गागरी........ ॥अचल ॥
ललितलता तू गूंजत तुलसी सूर कल कूजत
केशो हरिचन्द पूजत रम्य समन बागरी
नागरी सुधा गागरी........ ॥ अचल ॥
अच्छर तौरतनारे सुन्दर सरल संवारे
वेद ग्रन्थ विस्तारे माधो सुख मागरी
नागरी सुधा गागरी........ ॥ अचल ॥

दूसरी तरफ

प्रेम में बसते हैं भगवान।
प्रेम द्वेष नहीं राखत मनमें, समझत एक समान ॥ प्रेम ॥
प्रेमही सो रवि शशि ग्रहतारा, चमकत गगन महान ॥ प्रेम ॥

प्रेम विभोर मो पिक मैना, गावत मधुरी तान ।। प्रेम ।।
प्रेम मगन योगी सन्यासी, धरत प्रभुका ध्यान ।। प्रेम ।।
प्रेम हेत अवतार लेत प्रभु, करत भगत कल्याण ।। प्रेम ।।
गीता वेद पुराण सार यह, प्रेम हो सांचो ध्यान ।। प्रेम ।।
जन हित कारन लखि ईश्वरने, कीना प्रेम प्रदान ।। प्रेम ।।

पं० लाडली प्रसाद शर्मा

पहली तरफ

Q S 2005

उमन्ड घंघोर छाए चहुं ओर
पवन झकझोर चल रही
सुन सखी पिया विन, बिजली चमक रही मन डरत
दादुर झींगुर करत शोर
कुन्जन वोलत कोयेल मोर
कुंवर श्याम भए कठोर
सौतनके पग पड़त सुन सुन जिया जरत ।

दूसरी तरफ

डारो डारो कदमकी डार
हिन्डोरे आज झूले राधा प्यारी
आवेंगे आवेंगे वनवारी
छवि देखनको चलो वृजनार

गगन घटा घेरी आई कारी चमके
चपला हूं डरावे पवन चलत पुरवाई
झका झोर नन्हीं पड़त फुवार ।

सेनोला कामिक पार्टी

पहली तरफ

Q S 2008

बीबी घसीटन—चश्म बद्दूर अभी मेरा सिन ही क्या ? पचास साल की अपटुडेट सुहागिन हूं। सुफेद वालोंमें सियाह चेहरेकी रौनकने मेरे हुस्नमें चार चांद लगा दिये हैं लेकिन शादी हुई तो ऐसे शौहरसे जो कमानेके नामसे तूफान मेलकी तरह भकभका उठता है और अड़ियल टट्टूकी तरह क़दम जमाकर जनटिलमैंनकी दाढ़ीकी तरह चिकना मुकना जवाब देता हैं कि जमीं टळद जमां टळद मगर बन्दा नमी टळद, कद क्या है ताड़ है गोया हिमालिया पहाड़ है ।

मिआं खूसट – कहो बीबी घसीटन किसे हिमालिया पहाड़ बना रही थीं आखिर कुछ बताओ तो सही ?

बीबी घसीटन—तुमको तुमको हिमालिया पहाड़ बना रही थी आखिर कुछ काम करोगे या यूंही जिन्दगी तमाम करोगे ।

मिआं खुसट—देखो बीबी घसीटन मेरे चन्डूले सरपर जूतियाँ तक मार लेना मगर हिमालिया पहाड़ न बनाना वरना मूंगेर, बिहार और पटनाके ज़लज़ला शुदा इलाकेके लोग सुन पायेंगे तो मार मार कर मेरा कचूमर निकाल डालेंगे फिर तुम किसे नखरे दिखलाओगी आख़िर यतीम कहलाओगी।

बीबी घसीटन – तेरे मरनेसे मैं लावल्द हुंगी या यतीम ?

मिआं खुसट हां लावल्द लावल्द मैं भूल गया था अच्छा इन बातोंको जाने दो और कुछ खानेको दो या आज भी कुडकुड मुर्गीकी तरह हांडी सेंक रही हो ?

बीबी घसीटन—खाओगे क्या जूती ! जमानेकी हालत देखकर मुर्दे क़बरोंसे निकलकर मेहनतके वर्कशापमें काम करने लगे चूहे हाथीसे दंगल लड़कर रोटी छीनने लगे मगर तुम्हारी वही कुकडूंकूं अफ़सोस मैं मुश्किलमें हूं।

गाना

मिआं खुसट—मानो मानो मानो जी प्यारी बतियां।

बीबी घसीटन—जा जा नहीं देखाओ तू घतियां यह बतियां सूरतियां।

मिआं खुसट—आओ प्यारी तोहे गरवा लगा लूं अब न मोहे तरसाओ।

बीबी घसीटन—अजी जाओ जाओ।

मिआं खुसट--आओ प्यारी तोहे गरवा लगा लूं अब न मोहे तरसाओ।

बीबी घसीटन—दूर हो काफूर हो पेट तेरा तन्दूर हो।

मिआं खुसट—मैं जो जाऊँगा पछताओगी दूल्हा कहां मुझसा पाओगी।

बीबी घसीटन—निकल निकल इधर कुचल अब न मचल हां।

मिआं खुसट--मानो मानो ....

दूसरी तरफ

मिआं खुसट – आख़िर क्या करूं तेरे वास्ते अपनी जान देदूं

बीबी घसीटन—तो क्या मैं भूकी रहकर जिन्दगी गुजार दूं। तू तो लोगोंकी चीजों पर हाथ मारता और रंग रलियां मनाता है यहां भूक से मेरा दम जाता है अरे मिट्टी के ढेले अगर काजिये शहर के पास किसी ने नालिश करदी तो बेभाओ की पड़ेगी। तेरी सारी शोख़ी भूल जायेगी।

मिआं खुसट—अर ररर चुप रह मेरी सर परस्त बीबो चुप रह तू न घबरा अगर क़ोई दावा करेगी तो बंदा जुर्म से साफ़ इन्कार करेगा।

बीबी घसीटन—मगर काज़ी साहब बज़रया मिस्मरेज़म ग़ायब शुदा चीज़ों को मंगवालेते हैं, वह खुद गवाही देगी और तेरी एक न चलेगा।

मिआं खुसट—बम्मारा है फिर तो पौबारा है प्यारी जब वह चीज़ ही मौजूद होगी दावेदार को थमा दूंगा और खुद साफ बच जाऊंगा।

बीबी घसीटन--बातें तो खूब आती हैं मगर कमाने के नाम से बोटियां कांपती है।

मिआं खुसट—अरे मेरे दादा के पोते की बीबी क्या करू बहुत सी जगह काम की तलाश में गया अकसर मुक़ामात पर गर्दन में हाथ डालकर निकाल दिया गया। कहीं भंगियों के झाड़ू भी खाया मगर खुदाका शुक्र है कि उसने अवतक इज़्ज़त बचाया प्यारी। अगर मेरे सुलतानुललहम तोंदका मसअलय तख़फ़ीफ हल हो जाये तो ईं जानिब अलैहित तोंद की वहादुरी देखना हर वक्त हापड़ के पापड़ मथुरा के पेड़े तुम्हारे चपाती नुमा मुंह और खिरकी नुमां दांतों के झरोकों से आम दो रफ्त शुरू कर देगा।

वीवी घसीटन—अच्छा प्यारे मलाल न करो तुम मेरी बातोंका ख़याल न करो जबतक तुम तंदुरुस्त न होगे मैं सिलाई करके ख़र्च चलाऊंगी और तुम्हारे आराम का ख़याल रखूंगी।

गाना

बीवी घसीटन—मेरे बुढ़े खुसट तुम पर वारी वारी जाऊं।
मिआं खुसट—प्रेम में तोरे बीवी घसीटन जान मैं घिसाऊं।
बीबी घसीटन—काले काले गाल उजली जुलफ़ोमें चमकाऊं।
मिआं खुसट—गड़ वड़ झाले गरम मसाले देदेके मचाऊं।
बीवी घसीटन--मैं अलवेली तू अलवेला जोड़ी अछी पाई।
मिआं खुसट--सूरत भी है मिलती जुलती जैसे बहन भाई।
बीवो घसीटन--मेरे बूढ़े खुसट तुझपर मैं वारी वारी जाऊं।

—

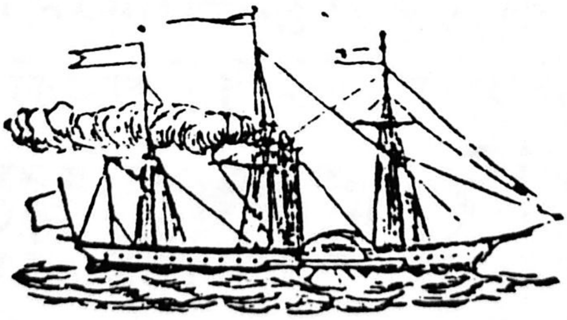

हमारे यहां से हर किस्म के ग्रामोफोन, रेकार्ड, व वाद्ययन्त्र मुकाबलतन कम कीमत पर मिल सकते हैं। सूचीपत्र मुफ्त तलब करें। बाहर के आर्डर खास कर बड़ी सावधानी से बुक किये जाते हैं। एक बार ज़रूर अजमायश कीजिये।

विनोद बरन सेन एण्ड ब्रदर्स

३७५ अपर चीतपुर रोड

कलकत्ता।

ग्रामोफोन मास्टर

ट्वीन रेकार्ड

आश्चर्य मई दासी

देहाती — पहली तरफ — F T 3715

चोली मैंली भइ तोरी–पीयु से क्या कहुं गोरी।
इहीं पियावा सईयां के-लिजिये है तो के अकेल
एक न सुनिये विपदा तोरी–कर जो लाख झमेल
लेके जीहे में बरजोरी–पीयु से कहा कहुं गोरी।
सांइ नगर से आइ ऐ हो-लेके सुन्दर चोली
मेली कर डारयो अब झन्क्त ही वन के भली
छोड़ो माया की, डोरी पीयु से क्या कहुं गोरी
नियम धर्म के रीठा अपने मन बगिया में वो
वह रीठे से नैन नदी के निबल में चोली धो
मानो बात सखी मोरी पीयु से क्या कहुं गोरी

देहाती — दूसरी तरफ

सइयां गवनवां कराये लिये जाये मोका
मेके से डोलिया कन्धे के लिये जाये मोका

कर लो सखी भेंट आना न होवी
माँ वाप के वही वेगाना न हो वेठी
भेजा है मुझ को यार ने पेग़ाम दीद का
रोये न कोई मेरे लिये दिन है ईद का
जाने की धुन लगी है मुलाकात हो चुकी
हट जाओ वक्त अभी नहीं गुफ़तो शनीद का
कर लो सखी भेंट आना न हो वेठी
मां वाप के देश वेगाना न हो वेठी
माता पिता छुड़ाये लिये जाये मोका
किस के जमाल ने मुझे वेहोश कर दिया
वारे ग़मओ अलम से सबक्दोश कर दिया
पेशो नज़र है कौन यह क्यों कर वताऊं मैं
कुछ कह के आने वाले ने खामोश कर दिया
साक़ी पिया की मैं वल्हारी जाऊं
चूमूं चरणवा हृदय लगाऊँ
धरी चद्रिया उड़ाय लिये जावे मोका ॥

मिस हेमनलिनी

पहली तरफ FT 3716

चलो वगिया में ऐ गोइयां हिंडोला लगायें
घिरा है बादर तानें वर्षा की सुनायें
फूटी कली सब फूल भई, भंवरे लहराने लगे

घूम घूम लेने लगे वांस
कितनी अच्छी है घड़ी देखो गुल लाला
देने लगा भर भर के प्याला
चमन वाले हैं मसरूर गोईयां
खुशी का है जलसा बाग में–आज हम रचायें....

दूसरी तरफ

मन को लुभाय गयो परदेसी बलमा
हिज्र में तेरे तड़पत हूं यार
सूरत दिखादो मोहे छतिया लगालो मोहे
मीठी बतियां करके जिया लेगयो परदेसी बालमां
इक हम हैं आप पे जो दिल निसार करते हैं
एक आप हैं कि जो गैरों को प्यार करते हैं
खुदारा जाके सबा कहदे उस सितमगर से
लबों पे दम है तेरा इन्तजार करते हैं
आन के छतियां लगालो परदेसी बालमा

मिस अखतरीजान (मेरठ)

पहली तरफ F T 3767

नाला करने से वह बेदर्द खफा होता है।
चुप जो रहता हूं तो दर्द और सिवा होता है॥
जिसने छेड़ा है तेरी जुल्फ़ को होगी वह हवा।

मुझसे वरहम अवस ऐ जाने वफ़ा होता है ॥
क़हर है जोशे शबाव उसपे यह रफ्तार ग़ज़ब ।
जिस तरफ जाते हो एक हश्र बपा होता है ॥
बन्दाये हुस्न हूं करता हूं मैं सिजदा साकी ।
जिस जगह यार का नकशे क़फे पा होता है ॥

दूसरी तरफ

चमन में नीम शगुफ्ता कली है क्या निकली
कि बन्द शीशे से कोई पर्स अदा निकली
मेरे ख्याल में बेकार इल्तेजा निकली
हया गई भी तो शोखी तेरी बला निकली
क़बूल होके जलाओ दिल न मेरा
बुरी भी जो ज़बान कही दुआ निकलो
अलग अलग जो किये दफन लाश के हिस्से
शहीदे नाज की तुर्बत जुदा जुदा निकली
हुआ मलाल जो दिलसे निकल गई हसरत
कि बावफा जिसे समझे थे बेवफ़ा निकली
मेरी लहद पे किसी ने जो हाल दिल पूछा
दहाने गाह से एक आह की सदा निकला

नाच — **पहली तरफ** — F T 4146

तोरे नैना रसीले हैं यार जादू से भरे
ठारी अटरया जोहूं डगरया, आओ बलम तुम पे जाऊं निसार

तोरे.........

तुम बिन मोहे सिंगार न भावे, कौन मोरे जोबन की देखे बहार

तोरे.........

लागूं मैं पय्यां बिदेश न जाओ, मारो न अब मोहे बिरहा कटार,

तोरे.........

नाच　　　　दूसरी तरफ

हाय तेरी तिरछी निगाहों ने मारा,

चाक सीना है दिल पारा पारा, हाय.........

अदा से देख लो जाता रहे गिला दिल का,

बस इक निगाह पे ठहरा है फैसला दिल का,

वह जुल्म करते हैं मुझ पे तो लोग कहते हैं,

खुदा बुरे से न डाले मुआमला दिलका,

हां तेरी.......

चैन आता नहीं, हिज्र भाता नहीं,

रंज जाता नहीं ए दिल आरा,

हाय तेरी.......

मिस बिनापानी

पहली तरफ　　　　F T 3768

मेरी नीची नज़र फितना साज है।

दाम मेरी यह जुल्फे दराज है।

नाम मेरा है कितना आरा
परी जमाल हूं उठती हुई जवानी है।
नजर है तीरे अदा तेग़ अस्फहानी है ॥
वह आबदार है तेग़ वह रवानी है।
कि मौज बहर भी गैरत से पानी पानी है।
जिस की जानिब किया इशारा।
बस अदम को वह कह कर सिधारा ॥
उफरे क्या तेज शमशीर नाज़ है

दूसरी तरफ

पीतम प्यारे न जाओ लगाके मोसे प्रीत रे प्रीतरे।
उठती जवानी माने न जोबन।
छांड़ चले तुम मोरी अटरया ॥
फरी नज़रया कैसी है यह—रीत रे रीत रे
सूना किये हुये जाते हो आंगन।
कल न पड़ेगी तुम बिना साजन ॥
मोका अभागन कर चले कैसे हो। सेत रे सेत रे।
लागूंगी पय्यां मान लो बतयां।
पूजूंगी सय्यां तुमरी सुरत्यां ॥
गाऊंगी लाके साकीसे प्रेमी गीत रे गीत रे

गजल | पहली तरफ | F T 3830

आंखों २ में जो दिल साफ़ उड़ाये कोई
किस पै चोरीका फिर इलजाम लगाये कोई !

वोह दिया दरद ने पैहलूमें तपनेका मज़ा
दिल यह कहता है मुझे और सताये कोई !
फलक भी उठती जवानीके नहीं छिप सकते
यह तो उभरेंगे उन्हें लाख दबाये कोई !
हम तो इतने ही सहारे पे उसामा जी जायें
आस झूटी ही तस्ली की बन्धाये कोई !

गजल **दूसरी तरफ**

हिजरकी शब ख़ातमा फिलफौर मेरा हो गया
सुबेह होनेसे वहुत पहिले सवेरा हो गया !
कूऐ जानां हमसे छुट जाना यह थी दुशवार बात
जब मिली फुरसत तो झटपट एक फेरा हो गया
देखना आरीज़ प उनके जुलफ़ तो विखरी नहीं
यक वयक दुनियांमें यह कैसा अन्धेरा हो गया
मुनजिर तोफान किशती खुआवरों देखा किये
नुहे चोंको रात गुज़री अब सवेरा हो गया

मिस तारामती

दादरा **पहली तरफ** F T 3891

मैंना बोल गई चिड़ियाको काग लिये जाय, मैना बोल रे प्यारे...
पीतलका लोटा कुएं में गिरा जाय
मौरे पानीका पिलैया पूरबको चला जाय, मैना वोल रे....

प्यारे तवेकी रोटी तवे पे जली जाय
प्यारे बाजरेकी रोटी ततैया लिये जाय
दौड़ो रे लोगो मुमानी भागी जाय, मैना बोल रे……
प्यारे दिया मांगे बत्ती और बत्ती मांगे तेल
अंखी मांगे निदिया जोबनवां मांगे खेल, मैना बोल रे …

दादरा दूसरी तरफ

चंचल नदिया बंसी डूबत नांही
बन्सी वाले बन्सी डूबी
लगाए कांटा मछली लागत नांही
जब बुइयां ने पंजन पहनी
सुसराजी बोलें घुघरू बाजत नांहीं
घूंघट वाली घूंघट पट खोलो
लगाए नैना जिया मानत नाही
बिरह हमारी रो रो हारी
मोरे सय्यां काहे आवत नाही

सूरत जान

गजल पहली तरफ F T 3821

दिल लगानेका नतीजा मिल गया। हाथसे बैठे बिठाए दिल गया
हो गया शौके शहादत जब सिवा। सरके बल मैं कूचाये कातिल गया

दोस्तीका उनकी यह अन्जाम है। दिल्लगी ही दिल्लगीमें दिल गया।
नूर हाथ आया न वह जा करम। रोते रोते खाकमे में मिल गया।

गजल **दूसरी तरफ**

रुखसारको बुर्केमें छुपाना नहीं अच्छा।
दिल देखने वालेका दुखाना नहीं अच्छा॥
बेकसको निगाहोंसे गिराना नहीं अच्छा।
दिल अर्श खुदा है इसे ढ़ाना नहीं अच्छा॥
हर रोज पये सैर जो जाते हो संवरके।
यह याद रहे तुमको जमाना नहीं अच्छा॥
ऐ नूर ना रो आवरू घट जायगी तेरी।
यूं खाकमें मोतीको मिलाना नहीं अच्छा॥

ज्वाहर बाई

दादरा **पहली तरफ** F T 3966

काहे तोड़ो जोबन निबवा साजन कच्चे न तोड़ो
हां वालम कच्चे ... .
बाली उमरिया बुध लड़कइयां,
काहे सिताओ कर जोरो—हां ....
आंखके रास्तेसे तुम दिलमें उतर आओ पिया
गैरके घर क्या करोगे अपने घर आओ पिया

जान फ़रशे राह कर दूं तुम घर आओ पिया
हां घड़ी भरके लिये आओ मगर आओ पिया
बालम रोदूँगी—हां बालम रोदूंगी—काहे ……

दादरा **दूसरी तरफ**

कहां लेके ज्हय्यो राम हो जुलमी नैना रे—कहाँ……
सोनेका पिंजरा रूपेकी मैना, उड़ गई मैना तके दोनों नैना-हो जुलमी
पीतम तुम मत जानियो कि तुम बिछुड़त मोहे चैन
दिया जरत है रैनको हिया जरे दिन रैन—कहां……..
फाँस भी आशिकके दिलकी है अजब कम्बख्त फांस
रह गई तो जान ली निकली तो रुसवाई हुवी—कहां…. ….
सजन सकारे जायेंगे कि नैन मरेंगे रोय,
विधना एसी रैन कर कि भोर कभी न होय—कहाँ ……

मिस पदमारानी

नाच **पहली तरफ** **F T3854**

प्यारे २ जोबनवा पे जाऊ मैं निसार
लगे सीनेमें दो फल नारंगी अनार—प्यारे ……
गोरे २ गाल, फूलकी मिसाल, नैनोंमें
जादू है, अब्रू दुधारी कटार………….
हाथ अँगड़ाई में क्युं उठनेसे रुक जाते हैं

क्या खबर सीने पे क्या देखके शरमाते हैं
हाय मेरी रेशमकी चोलिया मसकी जाये
मोरी उठती जवानी पे अर्श पिया आशिक हुवे हैं हजार—प्यारे

नाच दूसरी तरफ

जोबन उभरे निगोड़ी चोली मसकी
मोरी पिया प्यारे दिन आये बहारके
जुल्फ नागन सी गाल गोरे २, मोरे नैना है मधके कटोरे
मोसे तन्ही न सोया जाये सेज फूलोंकी मिस्ले खार........
मेरी जवानीके दिन भी अज़ाबके दिन हैं
हर एक कहता है मुझसे हजाबके दिन हैं
खुदारा सीने पे आंचल सम्भाल कर चलिये
कहीं नज़र न लगे यह शबाबके दिन हैं
जोबन उभरे..........

नाच पहली तरफ F T 4337

सय्यांसे नीक लगत मैका सखी री देवरिया
मोरे हृदय आन बसी वाकी प्यारी सुरतिया
मैं लाख उसे समझाती और अपने पास बुलाती
वह तो एसो निठुर निरदई, आवे न मोर सेजरिया
भोली सूरत वाला मूरख बात करत शरमाये
कैसी करूं अब मानत नाहीं, छतियां मैका लगावत नाहीं
अर्श पिया मोहे चाहत

नाच दूसरी तरफ

लचके डोले पतली कमरिया, सौ २ धरा बल खाए
बिजली जैसे चमके नजरिया जिसपे गिरे जल जाये
लेके चली है सरपे गगरिया
रोके है बालम बीच डगरिया
जाये कैसे जल भरनेको अलबेली घबराये (लचके डोली)
चलो जमना किनारे जाए
मिल जुलके छेड़ मचायें
है एक सरापा मस्तीका दिल सबका लौटा जाये

मिस किरनशशी

पहली तरफ FT 3841

नैनाकी बरछी संवरियाने मारी हाय मोरे राम
। लागी चोट हृदयमें कारी हाय मोरे राम
पनियां भरन पहुंची जमना किनारे मैं भोरे २
सुध बुध उड़ा ले गये वन्सी धारी हाय मोरे राम
ड़ा हुई वह भवें गैरते कमां कहिये,
मज़ाको तीरे नज़र नोक बे गुमां कहिये।
नशीली आंखें हैं उलफतके मैकदे साकी
नजर को होशरुबा वहरे आशिकां कहिये
रूप दिखाके मन हरलीनो बावरी मोका अस करदोनो
घर तजके फिरती हूं मारी मारी हाय मोरे राम

ग्रामोफ़ोन मास्टर

मिस बीना

दूसरी तरफ

मोहनी सुरतिया दिखा गयो श्याम गुय्यां
मीठी मीठी बतियां सुना गयो श्याम गुय्यां
जाती रही मैं तो अपनी डगरिया, छल कीनों मोसे लड़ाके नजरिया
हाय मोरी मतिया फिरा गयो श्याम गुय्यां
छब इक नजर दिखाके फिर घाटपर न आये
वह श्याम बन्सीवाले लेने खबर न आये
जमनाके तीर ठाड़ी छोर तक रही हूं
अस भूल बैठे मैंका अबतक इधर न आये
हृदयमें राखूं वाकी सूरत, पूजूं मैं साकी मोहनी मूरत
सपनेमें सूरतिया बता गयो श्याम गुय्यां

नाच **पहली तरफ** F T 4125

तोरी मद भरी अंखियां मारत हैं हिरदे में बरछी तान,
नैनन मे कजरा सोहे कजरे में जादू वान, तोरी मद भरी
उठती जवानी लाल गुलाबी जोबना छीने प्राण, तोरी
मिस्सी जमाये होंट पर तह परचा भयो बंगला पान⋯तोरी
अदायें तेगे नजर तीर दीलनवाज आंखें,
बनाये शैदा हजारों को हों जो बाज आंखें
निकाब डाल ले चेहरे पे ए कमां अबरू,
बपा करें न कहीं हशर फ़ितना साज आंखें
नैनन में कजरा सोहे ⋯⋯

नाच दूसरी तरफ

सपने में आकर सय्यां ने मोको दरस दिया कल रात रे २
सेज पे आये जान के भोली, देह दबोचन करके ठठोली
बहियां पकड़ मसकाए चोली, खुल गई गोरी गात रे २
मिन्ती भी कीनी कर भी जोरे, कहत रही मैं बात सुनो रे
अर्श पिया परू पैय्यां तोरे, देखो कमर बल खात रे

मिस बिब्बो

मजाकिया पहली तरफ F T 3981

हरी मिरचें ततैय्या ज़ालिम न डालो रे
वाह सय्यां रे देखीं तुम्हारी जुल्फें—अरे वाह सय्यां रे
मेरी जुल्फें बिगड़ गईं रे वाह सय्यां
वाह सय्याँ रे देखा तुम्हारा कजरा—मेरी डोरी बिगड़ गई वाह सय्यांरे
वाह सय्यां रे देखा तुम्हारा बीड़ा-मेरा लाखा बिगड़ गया वाह सय्यांरे
वाह सय्यां रे देखा तुम्हारा झांसा-मेरे बच्चे बिलख गये वाह सय्यां रे
हरि मिरचें ....

मजाकिया दूसरी तरफ

चना जोर गरम बाबू मैं लाया मजेदार—चना जो ......
मेरे हरे बाप की डंडी-उसपे नाचे लक्ष्मी रंडी
तबला खटके हैं सारंगी-रुपये दे रहा फिरंगी—चना ......

चना कैसा जंटलमेन-इसपे बड़ी घड़ी और चैन,
सिगरट पीवे लालटेन – चना
चना क्या खावेगा तेली-उसकी तेलन है अलबेली,
उसने कच्ची घानी पेली, उसकी कच्ची है हथेली—चना…
चना क्या खावेगा सेठ, उसकी सेठानी को पेट,
वह तो गई पलंग पे लेट-चना…
चना क्या खावेगा मोना-उसपे नहीं अनाज और दाना
उसकी जोरू देवे ताना उसने सुबह घाट पे जाना-चना…

दादरा **पहली तरफ** F T 4047

मोरी छल्ला सी क़मर नाड़ा झब्बेदार लय्यो, लय्यो नाड़ा…
मथरा जी को जय्यो तू लड्डू पेड़ा लय्यो, खिलय्यो नाड़ा….
मेरठ जी को जय्यो तू सोडा वाटर लय्यो, पिलय्यो नाड़ा….
बम्बई जी को जय्यो तू साड़ी जम्पर लय्यो, बंधय्यो नाड़ा….
आगरे को जय्यो तू लाल मसहरी लय्यो, सुलय्यो सुलय्यो….
अपने साथ, नाड़ा….

दादरा **दूसरी तरफ**

मैंने बार वार समझाया लैश मत पहना करो
जब ओढ़ी लैश की टोपी, गांव को जाने लगे
मालनिया ने गैल किया जदवा खड़े खड़े सोचा किये
जब डाली गले गल बय्यां, शक में पड़े, मैं ने बार…
जब ओढ़ी लैश की टोपी, कुएं को जाने लगे

भिस्तनी ने गैल किया जदवा खड़े २ सोचा किये, मैं ने····
जब ओढ़ी लैश की टोपी, ताल को जाने लगे
धोबन्या ने गैल किया जदवा, खड़े खड़े सोचा किये,
मैं ने बार बार·······

गजल **पहली तरफ** F T 4094

आये जिगर में आग लगाई चले गये
दे कर हमें वह दागे जुदाई चले गये
चाही थी हम ने उन से तजल्ली की बंदगी
तनहाइयों की दे के खुदाई चले गये
मस्तों को मैकदे में भी आया नहीं करार
वहशत सी उनके जी में समाई चले गये
आये मरीजे इश्क का वह हाल पूछने,
बैठे जरा से आंख चुराई चले गये,

गजल **दूसरी तरफ**

अपनी किसमत का बुलंदी पे सितारा न हुवा
जिस पे कुरवां हुवे वह शोख हमारा न हुवा
खूब तकदीर से तदवीर को जोड़ा हम ने
जाम वहदत का सनम खाने में तोड़ा हम ने
शोमिये बख्त से काबे को छोड़ा हम ने
न हुवा हाये इधर बुत भी हमारा न हुवा
इश्क की चोट ने सीने से उभरना चाहा

रूह ने अज़्म इधर मौत का करना चाहा
हैफ तकमील महिब्बत में जो मरना चाहा,
तो यह मरना भी रक़ीबो को गवारा न हुवा
इश्क में चैन न पाया कभी हमने दम भर,
लाख दरमां किये पर उन का हुवा कुछ न असर
हश्र पर छोड़ ग़में दिल का मदावा सरवर,
मौत से भी दिले बीमार का चारा न हुवा

"नरगिस"

F T 4048

मंढ़ा **पहली तरफ़**

काहेको ब्याही बदेस—लखी बावल मोरे
हम तोरे बाबल बेलेकी कलियां
घर घर मांगी जाए—रे लखी बावल........
हम तोरे बाबल जङ्गलकी गऊआँ
जिधर हकें हक जाए—काहेको ब्याही............
हम तोरे बाबल जङ्गलकी चिड़ियाँ
जिधर उड़ें उड़ जाए—रे लखी बाबल.........
ताक़ भरा मैंने गुड़योंका छोड़ा
छोड़ा सहेली साथ—रे लखी बाबल..........
मंढ़ेके ऊपर डलक बिराजे
देखे राजा रा—रे लखी बावल..........

डोली दूसरी तरफ

कहार कहो डोली उठाए कहार
अरे मैं हूं भोली नार—कहार............
बावलके घर छूटा रहना
पहन चली हथ रसका गहना
सङ्ग सहेलियों से ले कहना
खुश अपनोंमें रहना सहना
मुझे न देना बिसार—कहार कहाँ ......
मां अब काहेको रोती हो
जानको रो रो कर खोती हो
क़िस्मतसे मजबूर है दुनिया
हिज्रसे यह भरपूर है दुनिया
दर्दका है संसार—कहार ......
नाजोंसे था मुझको पाला
दूर बदेसी अब कर डाला
छूटा यह घर बार............

ताराजान, गदग

कानडा पहली तरफ F T 5187

जानकी राम तेरी छबी मनमें।
बस गई रे।

अजब छबीली राम रंगेली।

सदारङ्ग गायन पायो ॥ १ ॥

ठुमरी — दूसरी तरफ

जावो २ नाही सैंया, पड़ूं मैं तोरे पैंया।
हां २ करत तेरी बिनती करती हूं।
इतनी अरज मोरी मान लो रे सैंया ॥ १ ॥

मिस ज़रीना

दादरा — पहली तरफ — F T 4096

मलमलमें बदन मोरा चमके,
कोई देख न ले साजनवा, मलमल
मोरा बाला जोबन चंदासा झलके,
मोहे छूओ नहीं हटो दूर प्यारे,
इसे मैला करो नहीं मलमलके,
म ल म ल में.......

तुम्हारे इश्कमें जीको जलाये बैठी हूं,
भड़क रही है जो आतिश दबाये बैठी हूं,
हयाने मोहर लगा दी है आरज़ूओं पर,
जो दिलमें आता है दिलमें छुपाये बैठी हूं,
रिम झिम २ मेहा बरसे कोयल कूके बिजली चमके,
म ल म ल में.......

दादरा **दूसरी तरफ़**

मेरी उठती जवानी पे आइ बहार
नया जोबन पे आया निखार, मेरी.........
कोयलकी कूक उठी, जिगरमें हूक उठी
नहीं है पास पिया, पास नहीं है पीतम मोरा कैसे कटेगी बहार
अबर है मोना है लेकिन मेरा दिलदार नहीं
खाक पीनेका मजा आये अगर यार नहीं
कोई गमखार मिले खबर यार मिले
हाये दिलदार मिले, प्यारे गम नसीब हूं मैं इश्ककी बीमार,

मिस महजबीन "नाज"

नाच **पहली तरफ़** **F T 4149**

लागा करेजवामें तीर मैं कासे कहूं,
उभरा जोवना मदभरे नैना, अबरु दोधारी कटार,
आँख मिला, दिलको लुभा, मोरा चैन लूट लिया,
तन मन धन वारूं पिया,
लागा करेजवा में.........
अजीब तौर हसीनोंने इखतियार किया,
उसीकी जान ली जिसने कि दिलसे प्यार किया
निगाहे तीरे नजर अपनी कज अदाई से,
उन्होंने ताईरे दिलको मेरे शिकार किया,
लागा करेजवामें तीर मैं कासे कहूं,

नाच दूसरी तरफ

में नाजुक नार चाल मेरी देखो मतवाली,
फैशन से हूं मैं आला, फैशनसे जोबन बाला
शरमाये जाये मेम सारी सबसे हूं मैं उंच,
आशिक मेरे तड़पे जब मारूं मैं तिरछी आंख,
हजारों चाहनेवाले मुझे लुभाते हैं,
बजाके सीटी वह मोटरको लेके आते हैं,
(सीटी और मोटरकी आवाज)
मैं हूं बेजार इन बाल मूंछ वालोंसे,
जरा मैं रूठी कि कदमों पे सर झुकाते हैं;
हैं मेरे चाहनेवाले निराले मतवाले, (हैं कौन ?)
वह देखो दाढ़ी वाला, वह देखो चश्मे वाला,
वह तुर्की टोपी वाला, (है कहां ?)
यहः यहः यहः फैशनसे हूं मैं........

मिस सीतादेवी

नाच पहली तरफ F T 4150

झूम झूम झूम पिया जाऊँ तोरे बलिहार
गरवा लगालो मोहे प्यारे बलमा अब न करो इनकार
जा जा तोसे नाहीं बोलूं जिनहार
उमंड उमंड मोरा जिया घबरावे, मिनती करूं दिलदार

ना ना ना पिया उलफतमें कैसी तकरार
गमसे किसके हो गये पारा, दुनिया है आंखोंमें खार
अबरार दिलमें समाया है प्यार

नाच **दूसरी तरफ**

सूरत जेबा अँखियां प्यारी मुखड़े पे तोरे खाल सिंगारी,
चितवन तेरी बरछी कटारी जुलफे मुसलसल कारी कारी
हुस्न पे तेरे चाशनी देखी लब हैं शीरीं शहद गुफतारी
ठुमक ठुमक गोरी पायल बाजे ठुमक ठुमक चले चञ्चल नारी,
बज्मे जहांकी शोख हसीना अंगुश्तरी यह गुलका नगीना
चमनमें शाहिद गुल है नाजो अदाका तू है सफीना
रूप तुम्हारा मन मोहन है फूलोंका बुरका मुख पे हो डारी,
नैनोंकी देखा अबरार जादू चलती नहीं प्रेम कटारी,

मिस सत्यावती

जोगिया **पहली तरफ** **F T 4182**

जिया पावे नहीं चैन उन बिन
निस दिन तड़प तड़प रहे व्याकुल
कासे कहों यह बैन उन बिन
जाय कहो कोई प्यारे बलम से
नैन नीर झर झर बरसे
तोरे देखन को जियरा तरसे
नीर बहत दोनों नैन उन बिन

दादरा — दूसरी तरफ

नैनों का मारा भाला हाय राम
अदा व नाजो करिश्मा दिखाके लूट लिया
फरेब देके बुला के फंसा के लूट लिया
छवी दिखला के रूप बता के, नैनों का मारा भाला हाय राम
दिले हजो ने मोहब्बत की चोट खाई है
ग़मे फिराक़ ने लूटा अरे दोहाई है
पास बुलाओ, अब न रुलाओ, कोई नहीं सहारा, हाय राम
न कोई यार न पुरसान रंजो मातम है
न कोई मूनिसो गमख्वारहै न हम दम है
मुझ से दुखी का तेरे सिवा कौन है पूछने वाला हाय राम

मिस आशालता

नाच — पहली तरफ — F T 4336

बोलो पियो कहां मिले, सुख मोरा गयो,
भूले हो क्यूं मुझे जियरा दुखे
तुम हो मोरे प्यारे काहे को तड़पावे,
तुमरे बिरह में कल नहीं पड़े मेका
कोयलिया कूके जाओ लाओ सजनी
पपीहा २ कहे बोले पियो की बोली,
सूनी पड़ी हैं पिया मोरे मन की टोली.

हाय पिया कहां गये पता नहीं मिला
मैका देख रे सखी री,

नाच

दूसरी तरफ

मेरे प्यारे बोलो मोहना आओ न सुनो ना मोरी बतिया
मेंह बरसन लागे जिया नाहीं माने माने
दिल और जान जलते हैं जैसे दिया मेरे प्यारे........
कुछ नहीं सूझे सुन तो लो मेरे मन की
देखो धड़के जिया कोई नहीं साथी संग की
पढ़े हैं रंजो दरद के पाले, कौन हमें अब दुख से निकाले
कैसे कहेंगे बोलो बोलो........

मिस सन्तोश कुमारी

नाच

पहली तरफ़

F T 4267

प्रीतम जाओ न अब मोरे हाए मन को लुभाके
मन को लुभा के मोरे दिल को चुरा के
प्रीतम जाओ न अब मोरे........
लागूं मैं पय्यां तोरीं अब न सताओ,
दासी को अपनी अब न रुलाओ
आओ २ प्यारे बालमा मानों हां हमारी बतियां
जाओ मोरा अब जिया न जलाओ,

जाओ सौतनिया को गरवा लगाओ

प्रीतम जाओ·······

नाच

दूसरी तरफ

हटो मोहे न गरवा लगाओ, तोरी मिनती करूं पडूं पय्यां पिया

जाओ वहीं जहां रैन गंवाई, जाके संग तुम प्रीत लगाई

जान गई तोरी चतुराई

हटो भी जाओ बड़े तुम तो बे मुरव्त हो

तुम्हारा दिल तो है पत्थर का खाक उल्फत हो

हमेशा बात तो करते हो दिल जलाने की

हमीं से कहते हो तुम बानिये शरारत हो

हटो जाओ न मोहे गरवा लगाओ

मिस्टर एच० सी० शोमी व कुमारी रेबा शोमी

भजन

पहली तरफ

FT 4104

मेरे श्री कृष्ण करम, श्री कृष्ण धर्म, श्री कृष्ण तन मन प्रान

सब से न्यारे प्यारे श्री कृष्ण जी नैनों के तारे समान

सुख दुःख सब श्री कृष्ण माधव, कृष्ण ही आतम ज्ञान

कृष्ण कंठ हार आंख के काजर कृष्ण हृदय में ध्यान

श्री कृष्ण भाशा श्री कृष्ण आसा मिटाये प्यास वह नाम

स्वामी, सखा, पिता, माता, श्रीकृष्ण भ्राता बन्धु सन्तान

भजन दूसरी तरफ

आकुल व्याकुल ढूंढत फिरू, शाम तुम बिन रहन न जाये,
तुमरे कारण सब कुछ छोड़ी प्रीत न छोड़न जाये,
क्यों तरसाओ अंतरयामी
आओ मिलो कृपा करो स्वामी
नींद नहीं रैना दिन नहीं चैना
बिरहा की आग जलाये

मास्टर यूसफ व मिस इकबाल

मजाकिया पहली तरफ E T 4092

गाना

सय्यां नगन नारंगी जैसे मोरे दोनों जोबना,
ओ छय्यो राम छय्यो
आंगन टूटे मस्ती से सूनी से, बिन प्यारे अवतो मोरा
जिया जाये।
फूंके मोरा तन मन ओ छय्यो राम छय्यो राम

धोबन--हे भगवान का करूं इस निखट्टू मरीयल टट्टू महरारो संग मोरा विवाह भवा है, जो कामका न काज का बैरी अनाज का, दिन भर खटिया पर पड़ा २ अठलावत है, गाहकन के कपड़े बेच कर ताड़ी उड़ावत है खाय के तो

दिन मा छः छः बेर खात है और कमावे के नाम से जयो जात है यह देखो एंडत भवा एही तरफ आवत है

धोबी—अरी ओ टकन्वा की महतारी, अरी ओ टकन्वा की महतारी,

धोबन--का है का हैं चिल्लावत है

धोबी—अरी कुछ पकाये है ला खाय को दे,

धोवन--हूं बहजरो अस हकूमत से खाना मांगत हो जस कमाई करके धर गये रहियो

धोबी—अरी ससुरी जानत नाहीं अब पुराना जमाना बदल-गवा कलजुग आये गवा अबतो महरिया कमावत है और मनसवा खावत है, देखो तमामन मेमया, रेलमा, जेलमा, गोदाममा, नोकरी कर कर के लाखन रुपया लावत है, और साहब बहादर मजे मा मोटर उडावत है,

धोवन--यह कहो सराओ तबहीं काम काज से जियो चुरावत हो अगर अस मन मा बसी है तो काहे नाहीं मेमया व्हाह लावत हो,

धोबी—पर तोसे पीछा छूटे जब तो दोहर महरिया करावे,

धोवन--तो दहजराव के नाती घर से निकस जाओ बड़े वाप के पुतवा हो तो मेमिया करके दिखाओ,

धोबी---अच्छा ले तो में अभइ ने चला जात हूं

धोबन—जात हो तो पर यह तो बताओ कावली खां का पजामा बेचकर जो ताड़ी उड़ाये रहो उ का का प्रबन्ध किये हो

धोबी---में का जानूं, मोर जाने ठेंगा, तुंही वई से निपटो,

शेर खां---खो अमारा कपड़ा किदर है लाओ दो

धोबन--खान साहब अबही धुले नाहीं

शर खां---खो क्यूं नहीं धुला, क्या अम पैसा नहीं देगा, पिदर सोख्ता अम अवी लेगा,

धोबन--(अब का करूं, इस इस कावली वंदर को तिरया चरित्र दिखाऊं) अरे राम राम खां साहब कस वात करत हो, सच बात तो यह है, कि मैं का तुमरी सकल वहुत नेक लगत है, तो अगर कपड़ा धो कर दे दिये हों तो फिर यह प्यारी सूरत देखिये कहां मिलहीं

शेरखां--तो क्या तुम :अम से मोहब्बत करता है, खो तुमारा मेरबानी है, जो तुम अमारे ऊपर में जाहिर किया जो माशूक मन वल्ला चबा अल्ला अम वी तुमारा ऊपर मरता है।

धोबी---यह देखो सुसरी महरिया तो खसम्बा के साथ भागे का तप्यार है, रह तो जा सुसरी अभहीं सब का घाट से बुलाय लात हूं और मारे डंडन के तुम दोनों का भेजा गिरावत हूं।

धोबन--तो मोर प्यार असकोनी जतन करो के हम तुम एक संग रह कर मजा उड़ाये बरैठा के कबजेसे निकस जावें

शेरखां--खो क्या मुशकिल की वात है, तुम अमारे साथ काबुल चलो अम तुम को शहजादी बनायेगा अगर वह शैतान का

बच्चा उधर आयेगा तो देखेगा अम गुस्सा से उसका पसली तोड़ेगा डंडे से उसका सर पोड़ेगा।

धोबन--तो प्यारे खान साहब एक बात कहूं मनिहो

शेरखां--खो जान मन कयु नहीं मानेगा जरूर मानेगा

धोबन--तो सुनो मारे विवाह महतारी के लिये दो सो रुपया देदइयो ताके वह कोनो काम काज करके बाकी उमरिया बितावे।

शेरखां--यह लो दो सो रोपया अब तो अमारे साथ चलो

धोबन--जरा देर तुम यहीं ठैरो, मैं यह रुपया अपनी महतारी को देकर अबहें आवत हूं।

धोबी---अरे हरवा दोड़ो २ मोर महरिया को काबली खान भगाये लिये जाता है

(सब मिलकर मारने की आवाज)

शेरखां—रहम करो ओ धोबी बई रहम करो काये को मारता है

धोबी – काहे सुराऊ हमारी महरिया को भगाय लिये जात रहो

शेर खां—अस्तग़फरुल्लहा काफिर बच्चा काहे को जूट बोलता है अम सब औरतों को अपना माई बहन समझता है

सब—काहे रे राम चरनवा तोह तो बड़ा पाजी है काबली खान पर झूटा अलजाम लगावत रहे (सब का जाना)

धोबी—अरी वाह री टकन्वा की महतारी तोई तो खुब तिरया चरित्र दिखाये ला मैका रुपया दे दे

धोबन– वहजरो तो का वाप का रुपया है जा मेमिया से मांगो

धोवी—मोर प्यारी तोरे गोड़ लागी-गंग करिया अब कबहूं झगड़ा न करहीं ला रुपया मैका दे दे

धोबन—अच्छा अगर यह रक़म लेने का है तो पहिले एक बरहा सुनाओ।

धोबी का गाना

हे गंगा मय्या तोपे बाठा चढ़ाऊं।
धोबनिया से कर दे मिलनिवा ॥
हे काली मय्या तोपे बाठा चठाऊं।
कर दे ······ ······ ॥
न मोरे पैसा का लेके जय्यो समनवा राम
हे काली मय्यां ······ ··· ।
कृपा करो मोहे ममिया मिलादो एसा करो कोई जतनवा राम
हे सोतला मय्यां ······················ ।

अब्दुल रज़ाक कव्वाल

गजल | पहली तरफ | F T. 3718

हाय दिल हाय दिल हाय दिल हाय दिल
क्या करे गर किसीपर तो आ जाय दिल,
चाटपर चोट पैहम न क्यों खाये दिल,

ठोकरें मुझको दरदरकी खिलवाये दिल,
खुद मेरा होके और मुझको तड़पाये दिल,

हाय दिल हाय दिल हाय दिल हाय दिल,

शक नहीं शोक दिलदार उलफत है एक
दिल लगाना नहीं हैं मुसीबत है एक
इश्क कहते हैं जिसको क्यामत है एक
हुस्न वालोंपर यारों न अजाये दिल

हाय दिल हाय दिल हाय दिल हाय दिल

वज़म खूंवामें माईल न जाया करो
अपनी राहोंमें कांटे न बोया करो
कहना मानों खुदारा न ऐसा करो
चोट तीरे नजरकी न खाजाय दिल

हाय दिल हाय दिल हाय दिल हाय दिल

गजल — दूसरी तरफ

मर जायेंगे पर हम कभी नाला न करेंगे
सर देगे मगर यारको रुसवा न करेंगे
वो परदा नशीं थे उन्हें आखोंमें छुपाया
अब इस पे वह मचले है के परदा करेंगे
सरकाके कफन मुंह मेरा देखा तो यह बोले
जी उठो खुदारा तुम्हें छेड़ा न करेंगे
लो शौकसे अब काट लो हाजिर है यह गर्दन
इस खूनका हम हश्रमें दावा न करेंगे

गुलाम हुसेन कव्वाल

गजल **पहली तरफ** **FT 3720**

तुम्हारे सिवा कोई प्यारा नहीं ! यह दिल अब तुम्हारा हमारा नहीं
न आये न आपे बुलाये हमें ! मगर इनको यह भी गवारा नहीं
मुहब्बतमें अये दिल सहारा न ढूंढ़ ! समुन्दरका कोई किनारा नहीं
जरा देखिए मेरे दिलकी तरफ ! इन आंखोंने क्या तीर मारा नहीं
पुकारे किसे मस्त वेकस तेरा ! सिवा तेरे कोई सहारा नहीं

गजल **दूसरी तरफ**

पिया मैं वारी वारी मुंहसे बोल बोल
मैं हूं दरशन की भूखी मुखड़ा तू खोल खोल
काशीके घाट मां बृन्दाके माट मां
ढूंढ़त फिरी मैं तोहे कल न पड़त मोहे
गाल भी गोरे गोरे बाल जाके काले काले
नैना रसीले जाके प्रेम रस वाले पियाले
पिया मैं वारी-वारी मुँहसे कुछ बोल बोल
तेरे फिराकमें जीना दुशवार है
कासे कहूं मैं दुखिया जिया न माने मोरा
पिया मैं वारी वारी.......

पी० एम० मिस्त्री और पी० पिठावाला

पहली तरफ FT 5190

(टेलीफोनकी घन्टीकी आवाज)

रामसिंह—हैं ये टेलीफोन कैसा आवा है, अगर शेयर बाजारका होये तो शेठजीके बारा बजे शेरनके भाव घट गये तो शेठजीका उब्बा गुल होईये, शेठजी ओ शेठजी।

रूपचन्द—कोई होवीयो क्युं मारो माथो खावे है, थारेको खबर नहीं के मैं सारी रातको जागीयों हुं ?

रामसिंह—परन्तु सेठजी आपका टेलीफोन टेलीफोन आवा है।

रूपचन्द—पुस कौन है और कोंही केवे है।

रामसिंह—अलो—कौन ? मुफतचन्द सेठके मुनीमका भवा सेठसे कहूं के शेर वजार झोला खावत हैय

रूपचन्द—बझार झोला खाए है, तो खाने दे, मारे कोभी उंगरा झोंका आवे है।

रामसिंह—अलो का कही ? शेयर काट डालने या नहीं पुछवुं ?

रूपचन्द—अरे रखनेका होवे तो राखे नहीं काट डाले ? रांडका मारी उंघ कोंय बिघाड़े ?

रामसिंह—अलो सेठजो तो सो गवा। अलोका कही बझार बेठ गवा एक शेयर पिछे सो रुपए कम हो गवा अच्छा शेठ उठीये तो कहे देते अभी सेठको जगायके

फुजल होलीका नारियल कौन खाये ?

ओ टेलीफोन सुसुर तने तो गजब कर दिया

गाना

टीरीरींग—टीरीरींग शेठजी ये टेलीफोन बाजे

शेअर बजारें चढ़ उतर है न इनई जागे

खोट खाके घर आंये शेठ नोकरके बाजे बार

शेठजीको देख शेठजी वने ठण्डे गार

कर जोड़ कहूं किरतार हम किसकी दाद मांगे

भरती पर चढ़ती चड़ती पर भरती रोज घन्टी वाजे

सिफतसे रुपया वहोत कमावे खननन वो बाजे

भई वाजे वो गाजे ये टेलीफोन बाजे

दूसरी तरफ

शमीम—वतनसे कर्ज लेकर बम्बई आये तो यहां हम टकेके तीन तीन बिकने लगे।

नवीन—तो दोस्त कहीं मुलाजिमत तलाश करो,

शमीम—भाई कहां जाऊँ ? सब जगे फांदा है। छापाखानेमें प्रिंटरोंकी नाटक और फिल्म कम्पनीमें एक्टरों की शफाखानेमें कम्पाउन्डरों की, मारकेटमें नौकरों की और रइसोंके यहां मोटर ड्राइवरों की तीन २ महीनों की तनखाह चढ़ी हुई है।

नवीन—तो कुछ बेपार करो।

शमीम—इसमें भी फांदा ! बेपारी कहते हैं कि लोगोंके पास पैसा नहीं है। इसलिये बेपार मंदा है।

नवीन—ऐसा है तो वापस वतन चले जाओ।

शमीम—ये और भी मुश्किलका फांदा है। वापिस जानेके लिये किराया कहाँसे लाऊँ ?

नवीन—तब क्या इरादा है।

शमीम—इरादा बहुत कुछ है। मगर दोस्त लोग मेहमान नहीं रखते होटल और घरवाले एडवांस पैसा मांगते हैं चौपाटीके बेंचपर पुलिस वाले सताते हैं। अब तो आखरी इरादा है।' या तो फ्रांटियर मेल या तो यरोडा जेल बाकी है तो सब फांदा ही फांदा है।

*** गाना ***

नोकर कहाँ जाके रहेना सब जा पगारका फाँदा।
शौकसे मैं बम्बई आया है घर बार कारे फाँदा।
लाज होटल वाले भी यहां पहले रुपये मांगे।
तीन तीन महीने पगारके शेठ डीपौज़िट रक्खे।
धन्दा कहांसे ढूंढू लाये उधार का फांदा।
खरड पटीमें दिन गुजरते शामको थक जाते।
वतनमें क्यूं कर जा सकूं मैं भाडे का फांदा।
नहीं मोरे अब पास पैसे हैं देने दारका फांदा।
सात जोडते दस टूटे हैं चलनेका फांदा।
सब जा पगार का फांदा।

प्रोफेसर नारायन राव व्यास

तीलंग **पहली तरफ** **F T 5090**

दीनानाथ अब बाल तुम्हारी पतित उधारन
ब्रद जानके बिगर लेहूं संवारी
बालापन खेलमें खोयो, युवा विषय रतमाते
बृद्ध भये बुद्धि प्रकटो मोको दुःखित पुकारत साते

मालकोस **दूसरी तरफ**

आये रघुवीर घेर लङ्क देश अवध मां
सङ्ग सखा अङ्गद, सुग्रीव और हनुमान
रहस रहस गावत युवती—जग बन्धन विधान
देव कुसम—बरखत धन जाके रहे नभ विमान

मास्टर अबदुल रजाक कव्वाल

कव्वाली **पहली तरफ** **F T 3892**

वे मांगे हुए मिलते सागिरको यही देखा
साक़ी सा सखी दाता हमने तो नहीं देखा
इक नक़शकी हस्तीमें सब जेरे नगीं देखा
बुतख़ाना जहांपर था काबा भी वहीं देखा
ए रूह तह मदफन क्यों जाके फिर आई है
इतना तो बताती जा उसको भी कहीं देखा

मयखानेसे उठनेका ग़म हमको नहीं लेकिन
हसरत है तो इतनी साकीको नहीं देखा
आहे दिले मुजतिरने कुछ ऐसी हवा वदली
वे पर्दा तुझे हमने ओ पर्दा नशीं देखा !!

कव्वाली दूसरी तरफ

कहां सुनी है अभी तूने आसमां फरियाद
ज़मी हिलाके उठे हमनेकी जहां फरियाद
कभी हरममें कभी दैरमें पुकार मची
तेरी तलाशमें की है कहां कहां फरियाद
ज़मीन काँप गई चर्ख थर्रा उठा
निकल गई थी मेरे मुंहसे नागहां फरियाद
कोई तो हो शबे फुर्कतमें जिससे दिल वहले
इलाहो दर्द हो हम दर्दो हम ज़बाँ फरियाद

—

पं० बालकृष्ण

F T 3893

भजन पहली तरफ

कृष्ण भज कृष्ण भज कृष्ण भज कृष्ण भज
दीन दुखियों अनाथोंका जो नाथ है
सुख दुखमें जो सदा साथ है
कौन है कृष्ण है द्वारकानाथ है

लौ लगा उसके चरणोंमें मायाको तज
कृष्ण भज कृष्ण भज ......
नाथ गोकुलमें बन्सी बजाते रहे
नित नई अपनी लीला दिखाते रहे
रास जमना किनारे रचाते रहे
तुम तारी थीं अहल्या उबारा था गज
कृष्ण भज कृष्ण भज ....
अपनी जीवनकी घनश्याम जब शाम हो
ध्यान में तू ज़बान पर तेरा नाम हो
सबके गिरते ज़बां राम ही राम हो
मरते मरते कहूं कृष्ण भज कृष्ण भज... ....

भजन **दूसरी तरफ**

ऐ श्याम मुरारी गिरधारी बतलाओ तो कब आओगे
प्राणोंसे प्यारे भारतका कब आकर कष्ट मिटाओगे
सुन टेर द्रोपदीकी धाए—नन्दा वन सेवा कर आए
भगतोंके हितको फिर कब तुम औतार धार कर आओगे
हर ओर अधर्म अनिती है न है घर्म कर्म न प्रीती है
अज्ञानी बने भारतवासी कब आकर ज्ञान सिखाओगे
वो मीठी तान मुरलिया की फिर कब सुननेमें आयेगी
वो ज्ञान सिखा अर्जुन वाला कृष्ण कब हमें सुनाओगे

भजन **पहली तरफ** **F T 3968**

भज मन नारायण. नारायण, नारायण, नारायण,
कहत तुम्हें सब संकट हारी-गिरवर धारी कृष्ण मुरारी
यही नाम सब को पारायण, नारायण भज मन नारायणं
भव सागर से तारन हारे, भक्त जनन के पालन हारे
जप मन हरी हर नारायण, नारायण भज मन·······
हे जगत बंदन दीन दुख भंजन-तुमरी शरण कृष्ण तन मन
तुम ही दुख निवारायन, नारायण, नारायण-भज मन····

भजन **दूसरी तरफ**

दरशन दीजो नंद दुलारे, श्याम मुरारी आजा, नटवर
गिरधारी आजा
गीता का ज्ञान सुनाजा, भूलों को राह बताजा
राधा रमन प्यारे, मुरली मोहन प्यारे
प्रेम की बन बन प्यारे, मुरली बजा जा,
प्रेम बंसीधर अब फिर बजादो आन कर,
ईर्षा और द्वेष भगवन फिर मिटादो आन कर
सांवरे इकबार दासों को दरश देना प्रभू
हम दीन हैं हम दीन हैं हमारी भी सुध लेना प्रभू
कस मिटय्या आजा—यशोदा के छय्या आजा
चीर बढ़य्या आजा—कृष्ण प्यारे—दरशन दीजो·······

दीन मोहम्द कव्वाल

FT 3969

कव्वाली **पहली तरफ**

जमाले यार दिल में आ कि मैं मख्मूर हो जाऊ
नशे में चूर होकर बे पिये मखमूर होजाऊं
मिलूं मिल कर जमाले यार से क्युं दूर हो जाऊं
तमन्ना है कि जलकर मैं भी मिस्ले तूर होजाऊं
फनो फिन्नार से मैं नूर हो जाऊं
छलकते हैं तोरी महफिल में साबिर जाम़ वहदत के
कि जिनके पीते ही उठ जाते हैं गफलत के सब परदे
हुआ मालूम कि दिल ही मेरेमें आप हैं रहते
अता हो मुझ को भी एक जाम साकी मैं तेरे सदके
कि जिस के पीते ही मैं चूर से मख़मूर हो जाऊं
इधर वह और उधर मैं बीच में परदे हैं चिल्मन के
शुआये हुस्न की किरने नजर आती है छन २ के
किसी को करती है घायल अदाये नाज तन २ के
मेरे दिल पर लगे हैं तीर लाखो शोख चितवन के
जहाने जख्म कहते हैं कि मैं नासुर हो जाऊं

कव्वाली **दूसरी तरफ**

यह तू ने आज क्या निगाहे यार कर दिया
बिमारे ग़म को और भी बीमार कर दिया

साक़ी की चश्मे मस्त ने सरशार कर दिया
मैखार जो न था उसे पैखार कर दिया
हम ने छिपाई लाख मुहब्बत न छिप सकी
आँखों ने रो के यार से इजहार कर दिया
बादे सबा न भूलूगां अहसान उम्रभर
तूने जो बे नक़ाव रुखे यार कर दिया

दुरग विज्य सिंह काली वरमन

F T 3857

भजन — पहली तरफ

मोरे अखियन के भूखन गिरधारी
एरी सखी वल २ जाऊं छवीली छव पर अती आनंद सुख
परम उदार चित्र चिंतामनी दरस परस सुख कारी
अतुल स्वभाव तनिक तुलसी दल भावत सेवा भारी

भजन — दूसरी तरफ

राम नाम सुखधाम सुमर रे
जनम मरन के बंधन छूटे पूरण होवे सब काम
दान हरी भजन मोसे नहीं होवे फिर २ जनम—राम नाम ··
प्रभू का नाम जपो रे तुम लागे नहीं कुछ दाम,
राम नाम से मोक्ष पद पावे
जो होवे निष्काम-राम नाम········

इमाम बख्श कव्वाल

गजल **पहली तरफ** F T 3646

कभी दिल कभी मैं जिगर देखाता हूं,
कभी उनकी जालिम नज़र देखाता हूं।
उन्हें जब सरे रह गुजर देखाता हूं,
तो दुनियां इधर की उधर देखाता हूं।
यकीनी बह बुत आज गुस्से में आया,
दो आलम को जेरो ज़बर देखाता हूं।
न जानूं यह आंखे किसे ढूंढती हैं,
किधर जारहा हूं किधर देखाता हूं।
दमें नज़ा मुमताज़ किन हसरतों से,
वह मेरी मैं उनकी नज़र देखाता हूं।

गजल **दूसरी तरफ**

गज़ब के वार थे तीरे निगाहे नाज़ कातिल के
जिगर को छेद कर तोड़े हजारों आबले दिल के
कहा यह सारबां ने किस से बातें हैं यह ऐ लैला
छुपी है रुह मजनूं क्या किसी कोने में महमिल के
जमी तेरी गली की दादगर को यूं दिखाऊंगा
जिगर था चूर ? इस जा यहां टुकड़े मिले दिल के
सरे बज़मे सुखान मुख्तार तुमने क्या गजल पढ़दी
कि दिल जाते रहे हाथोंसे इक महफिल की महफिलके

मोहम्मद बक्श खां

होली पहली तरफ F T 3826

मानो मानो जी छैल नन्द लाल
भुरक मोरी अंगिया भिजोय डारी ऐसी पिचकारी मारी
भीज गई सारी रंग डारो न गुलाल
तू तो भयो निपट निडर ऐसो नटखट झटपट
गात कुब्रज मुख मोरत एरी ऐसी होली खेली
मोसे कीनी बरजोरी देखो नाचे दे दे ताल—मानो२ जी
अब घर कैसे जाऊं सास लड़ेगी देखत हैं बृजबाल
हसन भाग ब्रज धूम धाम से रंग की पड़त फुहार
बदन पर केसर बोरी, ऐसी कहा मान
तुहारी गिरधारी देखो मदन गोपाल—मानो मानो जी

होली दूसरी तरफ

बंसी वाले से खेलूगी होरी—मोहे रंग में करी झिक झोरी
दही मेरो खाय मटकिया फोरी लाज शरम सब तोरी
बरज रही बरजोरी नहीं माने नाहक बहियां मरोरी
बाजत ताल मृदंग, झांझ डफ तान लेत चित चोरी
चंद्र सखी भज बाल कृष्ण जब चिरंजीव रहो ये जोरी

ट्वीन ड्रामेटिक पार्टी

मजाकिया **पहली तरफ** F T 3840

गाना कचूमर का—हमारा बाला जोबन देखो माको मारो न नैना हमारी कोली छाती इन वातों से डरती है— वल्ला हजारों मरते हैं इस नोक पलक पर फ़िदा हैं लाखों चेहरेकी झलकपर करोड़ों ने जपी माला है माथे की तिलक पर, बुतोंकी खिड़की झीड़की सुन कर फिर भी कहते हैं वल्ला। हमारा…

मिरच तोड़–देखा जो चिड़िमार को आता है ऊंट पर
बुल बुल उचक के बैठ गया सूखे ठोंठ पर
भई वह मौहल्ला वालों के कहने से मैं ने भी एक कमसिन औरत से दिल लगाया है। खुदा की कसम उसी रात को जलजला आया। सुबह को दुमदार सितारा निकल आया। दोपहर को बाज़ार में गाड़ी लड़ गई। शामको मोहल्लों में जंग छिड़ गई। रात को इस कदर बारिश हुई कि मेरे इश्क का जनाज़ा ही बह गया। सुबह उठ कर क्या देखता हूं कि आगरे का किला फ़तह हो गया।

लगी तौसिन इश्क की टाप रे, अरे बाप रे बाप रे

कचूमर--यह क्या बक रहा है, मुवे जगादरी बंदर ?

मिर्चतोड़—कौद प्यारी कमूचर, कुछ नहीं मैं जरा वजीफा पढ़ रहा था।

कचूमर—मगर वाजीफे में औरतों का क्या जिक्र।

मिर्चतोड़—नहीं प्यारी मैं तो यह दुआ मांग रहा था कि तरक्की और हो दुनियां में यारब हुस्न वालों की।

कचूमर—अरे रहने दे रहने दे तरक्की होने से कीमत घट जाती है।

मिर्चतोड़—बात तो पते की है, ज्यादा पीटने से ढोलकी फट जाती है।

कचूमर—अवे तूने कहीं नौकरी भी की या रस्ते भूले हुये गीदड़ की तरह अवारा फिरा करता है।

मिर्चतोड़---प्यारी हिन्दोस्तान में तो ग़दर हो रहा है, मैं नौकरी करने किधर जाऊं।

कचूमर---अच्छा तेरे बाप दादा क्या पेशा करते थे।

मिर्च तोड़—बाप बाप ! हा, हा, सुबहान अल्ला बाप तो खाजा सरा थे।

कचूमर---यानी हिजड़े तालिय्मं फटकारा करते थे।

मिर्चतोड़---और दादा जान तो उन से ज्यादा शान के आदमी थे।

सुबहान अल्ला, सुबहान अल्ला, वह तो बंदर नचाया करते थे।

कचूमर--यह पेशा तो हबीब अल्ला है।

मिर्चतोड़--और न करे तो लानत अल्ला है।

कचूमर--तो तुम भी डुगडुगी बजाया करो और बन्दर नचाया करो। हाथ में मुट्ठी भर चने।

मिर्चतोड़—प्यारी बन्दर वालों के पास तो पूरा पूरा जोड़ा होता है यहाँ एक ही वन्दरिया के लिये कितने दिनों से कन्धे पर इश्क का जाल डाल कर फिरते हैं, मगर वह इतनी वड़ी चालाक है कि पास भी नहीं फटकती। हाथ पावों कैसे उसको दुम भी नहीं अटकती।

कचूमर—हत तेरे की अब समझ गई

मिर्चतोड़—समझ गई। माशा अल्ला माशा अल्ला वड़ी समझदार हो लाओ इसी बात एक गर्मा गर्म-वे-वाव पेश सीन-हे-वोसा।

कचूमर—चल हट मुये में नहीं देती।

मिर्चतोड़—देखो यहां देदो तुम्हारा नाम कचूमर और मेरा नाम मिर्च तोड़ है, यह इश्क के वावर्ची का मिला हुवा जोड़ है।

कचूमर—वाह जोड़ तवे खूब मिलाया।

मिर्चतोड—और इधर देखना कचूमर का नाम सुनते ही कितने आदमियों के मुंह में पानी भर आया।

❀ गाना ❀

प्यारी तोरी उठती जवानी पै जादू व्यानी पै यह जानो
जिगर है निसार ।
एक छैला रंगीला रसीला नुकीला है क्यों न करू
उसको प्यार ॥

दूसरी तरफ

लेमूनिचोड़—सोने की चिड़िया उड़ गई कैसी-हत तेरी तक़दीर की ऐसी तैसी सारी फ़ितरत ख़ाक में मिल गई शरत करूंगा फिर न ऐसी कैसे मुंह दिखाऊंगा अब मैं जाकर निकल गई आई थी जैसी...... यारो यह तो यही मसल हुई-कि मरता क्या न करता ।

तदबीर से दे दुख तोड़ फोड़ कर, और मारे बहुत से तीर निशाने में जोड़ कर, हल्दी मिर्च लगाके पकाई हजार बात, आखिर को भागना पड़ा लेमूनिचोर कर ।

मिर्चतोड़—आदाब फेकता हूं-चचा हाथ जोड़ कर ।

लेमूनिचोड़-भाई यतीम खाना आगे है ।

मिर्चतोड़—मगर ग़रीब खाना तो यही है ।

लेमूनिचोड़-अच्छा समझ ले कि यही है मगर तू है कौन ?

मिर्चतोड़—मैं आज कल पैसे से तंग दस्त हूं ।

लेमूनिचोड़-पैसे से तंग दस्त हो तो जाओ बेटा जामा मस-ज़िद पर जाकर भीख मांगो या टाकी में फालतू में खड़े होकर हो जाओ मालाकर यहां क्या लेने आये हो।

मिर्चतोड़े—यह पुराना गिद्ध तो बड़ा बादी मालूम होता है अच्छा बेटा.......जी मैं आपकी तारीफ़ सुनकर आया हूं।

लेमू निचोड़--हाँ तारीफ सुनकर आया लेमू निचोड़ने।

मिर्च तोड़—जी हाँ सरकार नौकरीका रिश्ता जोड़ने।

लेमू निचोड़ - नौकरी—अबे तू काम क्या जानता है।

मिर्च तोड़--काम—हा हा हा कहिए तो ज़मीन आसमानके कुलाबे मिलाकर ताला लगा दूं।

लेमू निचोड़—भई वाह वाह वाह ?

मिर्च तोड़—कहिये तो जितनी चिड़िया शामको दरख्तोंपर चह-चहाती है सबको उड़ा दूं।

लेमू निचोड़—सुबहान अल्ला सुबहान अल्ला और

मिर्च तोड़ - और कहिये तो मार मार कर आपका कचूमर निकाल दूं और कहिये तो खुदाकी क़सम ... ...

लेमू निचोड़--अबे चुप, कहिये तो के बच्चे—बोल तनख्वा क्या लेगा ?

मिर्च तोड़—पाँच और पाँच

लेमू निचोड़—दस

" बस

" तेरा नाम

" मिर्च तोड़

" बापका नाम

" सरफोड़

" मांका नाम

मिर्च तोड़—घर फोड़ लेमू निचोड़— यह तो पजावे का पजावाही बिगड़ा हुआ है-इसका नाम मिर्चतोड़ और मेरी लड़कीका नाम कचूमर—अल्ला ही आबरू बचाये। नहीं तो घरमें औंने पौने हिसाब बराबर। क्यों भई अगर मैं तेरा नाम मिर्च तोड़से शुखाचट कर दूं तो।

मिर्च तोड़—और मैं अगर जूतोंसे तेरी खोपड़ी सफाचट कर दूं तो ?

लेमू निचोड़--अबे यह गुस्ताखी कैसी–निकल तेरे नौकरकी ऐसी तैसी।

मिर्च तोड़--वाह वेटा--पहले तनखुवाह क्यों तै की थी अब तो तेरे वाप दादाको भी नौकर रखना पड़ेगा।

लेमू निचोड़—ओ यह नौकर है या मारवाड़ीका खाता जो बात वातमें उचक कर टैंटवा दबाता है ओ मियां वह सामने शेरकी खाल टंगी है--जिसे कल मैंने मारा है। उतार कर धूपमें डाल देना।

मिर्च तोड़—शेर और आपने मारा होगा।

लेमू निचोड़--नहीं तो क्या तुम्हारे वापने मारा होगा।

मिर्च तोड़-अबे रहने दे गीदड़के बच्चे तू और शेर मारे--चल हट किनारे।

लेमू निचोड़--वाह वेटा अगर सबको ऐसे ही नौकर मिला करे तो सेठ साहूकार चोरोंसे मुलाकात करनेके बहाने बहुत जल्दी जहाममें चल दिया करें (शैरकी आवाज) या

अल्ला शेर--मैं हो गया ढेर--अबे मिर्च तोड़ क्या तू भी क्या कचौरियां मिर्च तोड़ने लगा औह कचूमर क्या तू भी सिर्केमें भीग गई। शेर..........

पहली तरफ FT 3863

सनावरका गाना:--

मेरी उठती जवानी करती दीवानी, ठुमक ठुमक ठुमक मेरी चाल
जिसको देखूं दूरसे दीवाना बने--मेरे उभरे जोबनका निशाना बने
मिलाऊँ, लुभाऊँ, नजर मिलाऊँ--घायल बने बेहाल....मेरी ..

उई ए तोबा--यह मरदूए भी कैसा चालाक होते हैं। इन्हें प्यार करनेके क्या २ तरीके याद होते हैं, जिसको देखो आशिक, जिसको देखो लट्टू या अल्लाह मुहल्ला क्या है दुनिया भरके आशिकोंका अखाड़ा बना हुआ है। मगर मेरा दिल भी एक जवान पर लट्टू है। जब उसका नाम लेती हूं तो कलेजा हाय २ बल्लियों उछलने लगता हैं--मगर वल्लाह अब्बा भी अजब उल्लूके पट्ठे हैं। जहां देखा कि दोनों अकेले है इकट्ठे हैं बड़े गुस्सेमें पहुंचे, क्यूं तू इसके पास क्यूं आई। अदबसे चुप रही वरना यह कह देती कि यूं आई अब आये मेरा प्यारा और कहे इकबार गुड-नाइट।

(गुल आता है)

गुल--मोहब्बतका चिड़ीमार आ गया सरकार गुडनाइट।

सनोवर--ओहो मेरी जान आज तो आप आये ऐसे भेसमें, हर

रोज सादे और आज फुल ड्रेसमें, क्या जीत कर आये डियर रेस वेसमें ।

गुल—यह मिस्टर गुल और जीतकर आये--मैं और किसी धन्धेमें ठीक उतरूं हो ही नहीं सकता--क्यूं कि हिज मैजस्टी कातिबे तकदीर, के-सी-आई-एक्स-वाइ जैड मेरी तकदीरको घड़ते वक्त कुछ ऊंघ गये होंगे ।

या आके गुस्सेमें जरा फूल गये होंगे
किस्मतमें ऐश लिखनेहीको भूल गये होंगे ।

सनोवर—तो फिर मुझसे शादी करके मुझे कौनसा सुख दोगे ?

गुल--इसके लिए यह मैंने एक नाटक लिख मारा है इरादा है कि इसको कम्पनीमें चमकाऊं और पैसे कमाऊँ ।

सनोवर—ओहो, हो, हो, यू और ड्रामेटिस्ट, औथर-आई सी ।

गुल—देख प्यारी यह नाटक क्या है—खुदाको कसम चैक है चैक, अगर स्टेजपर निकलते ही हिन्दुस्तानकी चूलें न हिला दे तो उस रोज़से मैं शाइरीका धन्धा छोड़कर सीधा फ़रिश्तोंकी विलायतमें चला जाऊँ ।

बड़ी मुश्किलसे इक शेरका मज़मूं टटोला हैं,
यह नाटक राजा इन्दरकी क़सम एक बमेका गोला है।

सनोवर—अगर ऐसा है तो में खाट तेरी तू मेरा 'खटमल है।

(सनोवरका बाप आता है)

बाप—सुना—लड़कीको अंग्रेज़ी पढ़ानेका यही फल है जहाँ मैंने बाहर क़दम धरा कि यह गुल व सनोवरका जोड़ा मिला

मगर आज यह जैकी कोगनका भतीजा बनके आया है ज़रा छुप कर तो सुनूं यह पढ़ क्या रहा है।

गुल–उफ़! इस तमाशेमें मैं जो पार्ट करनेवाला हूं—वह बड़ा जनून है—यानी मेरे करैक्टरका नाम खूनी है।

बाप—बस तो इधर अल्लाह २ है।

सनोबर—मगर इस ड्रामेका प्लाट क्या है ?

गुल—यानी मैं एक जंटलमैन लफंगा एक कन्जूस बापकी इकलौती बेटीको चाहता हूं।

बाप—मैं सब समझता हूं बेटा मैं सब समझता हूं।

गुल—और उस लड़कीका बाप इसलिए मुझसे दुम कटे कुत्तेको तरह नाराज है—समझी यह है इसका प्लाट।

बाप—बस तो उलट गया मेरी खोपड़ीका टाट।

गुल—अगर लड़कीका बाप मुझसे शादी नहीं करेगा तो उफ, मेरा भेजा गरम हो जाएगा—फिर तो मैं खुले बाज़ारोंमें देखने वाले हज़ारोमें उस मलऊनका ऐसा नैचुरल खून करूँगा कि देखनेवाली पब्लिक क्लैप्सपर क्लैप्स (Claps) देगी, फूलोंके हार और मैडलोंके अम्बार लगा देगी।

बाप–लो यह मेरा खून करेगा—और लोग इसे मैडल देंगे–उल्लू का पट्ठा अबे तू मुझको मारेगा अबे क्या ऐसी धांदल है, लटक जायगा बेटा खून करनेका यही फल है।

सनोबर—मगर उसकी लाश कहां जायेगी लाश।

मिस मुन्ननबाई

गुल म्यो अस्पतालकी कचरा गाड़ीमें या ज्यूरी हाउस की अलमारी में।

वाप—लो उल्लूका पट्ठा मुझे प्लेगका चूहा समझता है—जो जूरी हाउस में भेजता है।

सनोवर—और खूनकी तरह करोगे यह तो वताओ।

गुल - देखो घवड़ाना नहीं--मैं वरावर खून करके वताऊँगा।

सनोवर—यह क्या, कोट और साफा ज़मीनपर क्यूं धर दिया ?

गुल—यानी यह तेरा वाप है।

वाप—अरे एक वाप तो यहां पहिलेसे मौजूद है--यह दूसरा किधर से तवल्लुल हो गया।

गुल—और यह वादशाही रोव फैशन एवल जुब्वा, सैंकड हैंड औथेलो अपने सुसरेका खून करना चाहता है।

सनोवर--सवव ?

गुल--सवव यह कि उसने अपने दोस्तोंके सामने सड़े हुये आमकी गुठली मेरे मुँहपर मारी और अपनी लड़कीकी शादी से इन्कार किया था--हां यह कलय छुरीसे ज्यादा तेज है—चलेगा (लाइट वन्द करके फोकस देना) अव मैं ज़रा चमकूं तो (रिहरसल करता है)

वाप--चमक वेटाचमक।

गुल--सोरहा है, वेहोश हो रहा है--उफ डवल उफ--सीनेमें कीना मुँहपर पसीना, पांवमें जोना, वग़लमें :हसीना, वहुत जिया और अव जियेगा तो भुट्टे भूनेगा--मरेगा, अभी मरेगा खंजर

उफ खंजरका एक वार तेरा पेट भरेगा--हत तेरे की दहशत वहशत, मारे खौफके सारा खून सूख गया, रिहरसल खलास

सनोवर--तो तमाशा पास।

वाप—हत तेरा सत्यानास—अरे कोई दौड़ो पुलिस वालोंके पास इसीने मेरा खून कर दिया—हाय मैं मर गया मर गया।

सनोवर—अब्वा अब्वा एक बात।

वाप—चुपे बदजात।

गाना

वाप--ओ पाजी आया जी आया आज हाथ बच्चा जी

गुल—दो दिल राजी तो क़ाज़ीकी क्या दरकार है.... ओ पाज

सनोवर—वावाजी, वावाजी हमसे हो जावो राजी,

वाप—चुप--रे लुच्चोंकी वसतीका यह सरदार है

गुल—यह पोती में पोता शादी कर दो ना दादा जी

वाप—जूतोंसे शादी होती है, उल्लू खब्ती पाजी

सनोवर--वावाजी वावाजी

वाप--हां जी हां जी

पहली तरफ FT 3776

तोबा तोबा ला होल वला कुव्वता इल्ला बिल्ला-वाजारमें पञ्जा टेकना दुश्वार हो गया है। बाहर निकलते ही ये लोग ऐसे देखते हैं जैसे मैं कलकत्ते के चिड़ियाखानेका कोई जानवर हूं या अफरीकाका कोई वन्दर हूं दूकानदार दुकानें छोड़ २ कर मुझे देखनेके

लिये सड़कोंपर जमा हो जाते हैं। मोहल्लेके लौंडे मुझे आता हुवा देखकर खूब तालियां बजाते हैं, भटउ उड़ाते हैं मगर यह सब हमारा अखबार "अल्लटप्पू" की शोहरतका नतीजा है वरना यह मूंह और मसूरकी दाल। अभी कल मैंने मिस बिजली नामकी एक बलग़मी औरतसे शादी कर ली है वरना वह तो तुम्हारी जानकी कसम ज़हर खानेको तय्यार हो गई थी। हैलो मिस्टर चरकटे अखबार का प्रूफ तय्यार हैं ?

चरकटे--अजी प्रूफ कहांसे तय्यार होगा। अभी वरकी ख़बरें तो दस्तयाब ही नहीं हुईं।

एडीटर—तुम आदमी हो या पाजामा इतने दिनोंसे दफ्तरमें क्या झक मार रहे हो ? वर्क़ी ख़बरें भी नहीं बना सकते हो। अमां लिख दो जापानमें एक ख़ौफनाक ज़लज़ला आया सैकड़ो मकान उलट गये। तीन सौ औरतें बेवा चार हजार मर्द यतीम हो गये। हिमालिया पहाड़ फट गया क़ब्रस्तान उलट गया। मुर्दे क़ब्रोंसे निकल २ कर रेलवे वर्क शापमें भरती हो रहे हैं। नरबदाका पुल टूट गया। अन्धेर नगरीके स्टेशनपर पसिंजर ट्रेन मालगाड़ीसे टकरा गई। चौपट पुरके नवाब साहब बम्बईमें जेब कतरते हुए पकड़े गये। हिन्दुस्तानमें मर्द व औरतोंका जंग होने वाला है। हवाई जहाज़से चीलकी शादी हो गई। यही सब वर्क़ी ख़बरें हैं, लिख दो।

चरकटे--मगर यह तो सब झूठ है।

एडीटर-अरे तो भले आदमी वर्की खबरें सच ही कौनसी होती हैं?

विजली—हालो मिस्टर ऐडीटर—गुडमारनिंग।

एडीटर—ओ माइडियर डारलिंग गुड मारनिंग। हाउ-आर-यू ?

विजली-आइ एम कुइट बैल थैंकयू।

एडीटर—थैंकयू, थैंकयू, चरकटे! मिस्टर वह जमनादासकी दुकान से जो कल मिस साहिबाके लिये साड़ी लाये थे वह कहां है?

चरकटे--वह देखिये आपके टेबिलकी दराजमें रखी है। मगर उसने कहा है कि जबतक उसके दाम ना भेज देना इसे इस्तेमाल ना करना।

एडीटर—अबे बनारसी दास भी उल्लूका पक्का पट्ठा है। अबे औरत और साड़ी कहीं इस्तेमाल की हुई मालूम हो सकती है। अच्छा डार्लिंग अब एक गरमागरम बोसा मेरी हथेलीपर धर दो।

विजली--उई सब देख सुन रहे हैं।

एडीटर--यह देखने सुनने वाले कौनसी बात उठा रखते हैं।

* गाना *

जुलफें हैं तेरी काली नागनसी ज़हरीली।
आंखें मिट्टीको प्याली चाल तेरी मतवाली २
सूरत भोली भोली गालों पे तेरे लाली
चितवन तेरी निराली कोई वार गया ना खाली २
नैनोंका तीर मारा सीनेमें दिल हमारा
घबराके यह पुकारा जालिमने मारा।

दिखलाके एक नज्जारा खंजर चला दुधारा
किया दिलको पारा पारा कोई नहीं है चारा २

दूसरी तरफ

मुस्तहसिन--उफ़ ग़जब सितम क़हर जहर फ़रेब धोका झूठ सरासर झूट सफ़ेद झूट सिया झूट, जर्द झूट,लाल झूट बड़ा झूट। कहां है एडीटरका बच्चा निकालो बाहर उसे खा जाऊंगा कच्चा।

एडीटर--या इलाही खैर। अजी हजरत हुआ क्या आप तो बहुत घबराये हुये मालूम होते हैं—

मुस्तहसिन--अबे घबराऊं कैसे नहीं, घबरानेका बच्चा एक तो अखबारोंमें झूठी खबर छाप दी और फिर ऊपरसे पूछता है कि घबराये हुये क्यों हैं।

एडीटर--अजी बन्दा परवर कैसी झूठी खबर?

मुस्तहसिन--यह देख इधर!

एडीटर--ओ हो हो हो! तो क्या आपहीका नाम जनाबअली शेख़ मुस्तहसन है।

मुस्तहसन--और नहीं तो क्या तेरे बापका नाम अली मुस्तहसन है। अबे तू कुलंगकी औलाद है।

चरकटे--हां हां जाने दीजिये। मिस साहेबाके सामने उनकी इज्जत किरकरी हो जायगी।

एडीटर--अजी आप इतने गरम क्यों होते जा रहे हैं। अगर आप नहीं मरे हैं और मैं ने झूठ मूठ आपके मरनेकी खबर छाप दी तो इसमें कोई हरज़ नहीं हुआ।

मुस्तहसन--लीजिए सारी दुनियाके सामने मेरा जनाज़ा निकाल दिया और फिर कहता है कि इसमें कोई हरज नहीं हुआ!

एडीटर--हां हां जनाब कोई हरज नहीं हुआ। अखबार तो घरका है। यह लीजिये मैं कल सुबह आपके दोबारा पैदा होने की खबर छाप देता हूं! चलिये बराबर हो गया।

मुस्तहसन--अबे कल मैं मर गया। कल फिर पैदा हो जाऊँगा। मगर आज मैं कहां हूं।

चरकटे--अपनी मांके पेटमें।

मुस्तहसन--चुप।

एडीटर--चलो अच्छा हुवा जो ध्यान हुआ।

चरकटे--सुनिये मारूं घुंसा निकले मुंसा।

रात भर सोया नहीं दिलरुबा तेरे लिये।
लुत्फ यह रोया नहीं बे वफा तेरे लिये॥
चीरते फाड़ते छतको मेरे नाले निकले
सुवह हम जेल मुकद्दस के हवाले निकले
चोटें भी खाऐं जूते भी खाऐं।
नौकरी छूट गई बे वफा तेरे लिये॥

मजाकिया पहली तरफ F T 4093

वसीम - रेस २ यह वह मनहूस शौक है जो लाख का घर खाक कर देता है रेस कोयलों की तिजारत है जिस को दलाली में हाथ और मुंह दोनों काले होते हैं अफसोस जिस दिन से मैं इस जान लेवा मरज में मुब्तला हुवा सारी दौलत दौड़ते हुवे घोड़े की तरह पास से निकल गई अब तो यह नौवत है कि सुसराल में बीवी की रोटियों पर गुजर कर रहा हूं मगर फिर यह हालत है कि जब कभी रेस कोरस आंखों के सामने आजाती है सीने में शौक का समुन्दर लहरें मारने लगता है आज "नारायन कप" की दौड़ है जेब में एक पाई नहीं क्या करूं क्युं कर शौक के परदे में किस्मत आजमाई करूं ठीक है चलूं और अपनी नेक बीवी को धोका देकर उस के जेबरात को उड़ा लाऊं और उन्हे बेच कर अपना शौक पूरा करूं बीबी बीवी

हसीना—क्यु २ खैर तो है

वसीम—बीवी बड़ी खुशी कि बात है कि मैं अभी २ होटल में नाश्ताकरने गया था इत्फाकिया रेस के जाकी से मुलाकात हुवी बेचारे को मेरी मुफलसी की कहानी सुन कर रहम आगया और वायसराय कप का फलोक धोड़ा बतला दिया ।

हसीना—आग लगे तुम को और तुम्हारी रेस को बाप दादा की तमाम जायदाद रेस और सट्टे बाजी में हार कर दाने २

को मोहताज हो रहे हो मकान तक रहन पड़ा है अब मेरे पास रहा ही क्या है जो में तुम को दूं अब अगर रेस खेलना चाहते हो तो मुझे बेच कर रेस खेलो

वसीम—नहीं २ बीबी आज तो तुम जरूर मेरी मदद करो बस थोड़ा जेबर देदो मुझे काफी उमीद है कि यह घोड़ा जरूर आयेगा फिर हमारा सारा दलिद्र कट जायेगा

हसीना—अरे अकल के दुशमन अब भी आंखें खोल और इस अंधे शिकार से तोबा कर याद रक्खो रेस वह सेराब है जो देखने में पारस पत्थर और छूने में ४४० वोल्ट का एलैक्ट्रिक करन्ट

वसीम—कुछ भी हो मैं तो जरूर खेलूंगा क्यु जी यह तकिये के नीचे २ रुपये के नोट किस के रक्खे हैं

हसीना—यह तो वालिद साहब ने बच्चों के कपड़े बनाने को दिये हैं

वसीम—तो बस मैं इन्हीं को लिये जाता हूं

हसीना—अगर तुम यह रुपयों को ले जा कर रेस में हार दोगे तो मेरे बच्चोंका कपड़ा कहां से बनेगा

वसीम—मेरी जाने बला मैं तो अब रेस कोरस को जाता हूं

हसीना—अफसोस ! ले गये बच्चो के रुपये भी ले गये या अल्लहा तू इस जवारी बाज शौहर को नेक तौफीक अता फरमा

गाना

दीना नाथ करो उपकार करदो नय्या पार
ग़म के भंवर में आन फंसी हूं मोहे उबारो आन के प्रभू

तोरे करम की आस है मुझ को करदो बेरा पार

दीना नाथ करो उपकार नय्या पार

दूसरी तरफ

मोटर वाला---रेस कोरस रेस कोस (घंटी की आवाज मोटर का चलना)

वसीम---बांध के ! बांध के

अस्सलामालेकम क्युं भाई वसीम कौनसा घोड़ा खेलोगे

वसीम--यार नसीम मुझे तो किस्मत से एक जोकी ने तर्वा रेस नम्बर १५ का फलोक घोड़ा बतलाया है उसी को खेलने का इरादा है (घंटी की आवाज़)

मोटर वाला---रेस कोरस उतरिये रेसिगं गाइड, टरफ गाइड, मारस टप मारलंड टप

फकीर १---इस गरीव को एक पैसा दे दे बच्चों को खा कर दुहा दूंगा

, २---वावा इये अन्धेर होते इवारी फैयशा दाए बाबा वोयला नम्बर घोड़ा आसवे बावा

नसीम---आओ यार जलदी चलो देखो घोड़े बाहर आगये रेस शुरू ही होने पर है

वसीम---क्या तुम टिकट लेने जा रहे हो लो यह २० रुपये के नोट दो विन्न, और दो प्लेस, नम्बर पंदरह पर खेल देना

नसीम---लाओ क्यु जी यह तुम ने नोटों पर दस्तखत क्यु कर दिये

विलियम---यह मेरी आदत है

नसीम---वाह खूब उल्लू सीधा किया अब नसीम के नोट तो जेब में रखता हूं और अपने रुपये से १५ नम्बर खेलता हूं अगर घोड़ा आगया तो उसके नोट वापिस करके जीत की रकम खुद रखूंगा और अगर घोड़ा हार गया तो गया वल्लह क्या चाल सूझी है अब तो चित भी मेरी पट अर ररर रेस छूटने ही पर है

सब—तीन नम्बर, तीन नम्बर, तेरी मोर शीरा जोइन पांच नम्बर बैलीटन कमआन जोकी

वसीम---वह मारा १५ नम्बर बिन्न आगया अब तो एक हजार से कम क्या मिलेगा अरे यार कहां थे टिकट लाओ

नसीम---क्या बताऊं किसमत पर खुदा की मार कमबख्त हजूम के मारे टिकट ही न मिल सका लो अपने नोट

वसीम---है क्या कहा, टिकट न मिल सका नोट वापिस लेलूं अफसोस बाद मुदत के जो चांस लड़ा तो टिकट मिल न सका बस मैं समझ गया

तदबीर से किसमत की बुराई नहीं जाती।
बिगड़ी हुई तकबीर बनाई नहीं जाती॥

गाना

रेस में लाखों असीर हुवे ।
हिन्द वाले अमीर फकीर हुवे ॥
यह नहीं लड्डू जो मजे लूटेंगे दांत ।
यह हैं लोहे के चने जो खायेगा टूटेंगे दांत ॥
जब हुई जेब रेस में खाली ।
चेहरे की सब उड़ गई लाली ॥
मुरदे की तस्वीर हुये ।
हिन्द वाले अमीर फकीर हुये ॥

पहली तरफ FT 4193

मलमल---लोग कहते हैं कि जवानी दीवानी होती है, मगर मैं कहती हूं कि बड़ी स्यानी होती है, जवानी का मारा हुआ एक शिकार मुझ जैसी छैल छबीली उमर भर बैठ कर खा सकती है, इसी लिये मैंने डाक्टर आरारोट के घर में नौकरी कर ली है, यह मुवा तो बड़ा पैसे वाला है, बस अब की दिवाली तक इसका भी दिवाला है।

डाक्टर--बेटी मलमल, व्हाट नौनसैंस, यह मैं जल्दी में क्या बोल गया, प्यारी मलमल मैंने कहा आज तो मैदान खाली है।

मलमल---तो मैं क्या करूं ।

डाक्टर--अब कब तक तरसाओगी, आज तो एक बोसे का दान कर डालो,

मलमल---ए वाह मैं क्या कोई ऐसी वैसी हूं।

डाक्टर--यह कौन कहता है, सुनो मैं तुम्हें एक ज्ञान कथा सुनाता हूं, पेटी में कपड़ा बंद रहे तो उसको कीड़ा खाता है।

मलमल---वाह बेटा।

डाक्टर--जिस धन से दान नहीं होता वह धन चौपट होजाता है।

मलमल---चलो रहने भी दो अपनी ज्ञान कथा मुह तो देखो जैसा चूसा हुवा आम, हंसते हो तो मालूम होता है कि गीदड़ को जुकाम होगया है।

डाक्टर- अरी प्यारी मैं भी कभी जवान था, जिस तरफ से निकल जाता था लोग तमाशा देखते थे, और तुम जैसी तो इस तरह मेरे पीछे फिरती थीं, जिस तरह से वन्दर वाले के पीछे महल्ले भर के लौंडे फिरा करते हैं।

मलमल---वाह तव तो तुम पुराने रसिया हो।

डाक्टर- और नहीं तो क्या नया चंडूल हूं।

हम भीं कभी निहाले चमन के बहार थे।

मलमल---चमन तो तुम अव भी हो।

डाक्टर--अपने भी रूप रंग पे कव्वे निसार थे।

मलमल---सच कह रहे हो शक्ल ही ऐसी मुहीब थी,

खंडर वता रहे हैं कि बिल्डिंग अजीब थी।

डाक्टर--देख प्यारी एक वोसा दे दे, मेरा तो चिल्लाते २ गला सूख गया

मलमल--तो पानी लाऊं ?

डाक्टर-प्यारी यह आना कानी छोड़ दो, आओ और बोसा दो।

मलमल-अरे इस बुढ़ौती में तुम्हें शरम नहीं आती।

डाक्टर--काहे की शरम यह तो मोहव्वत की शान है, बूढ़ा हूं मैं तो क्या हुआ दिल तो जवान है।

मलमल—चुल्हे में जाय ऐसा दिल देखते नहीं यह सब देख सुन रहे हैं।

डाक्टर--यह देखने सुनने वाले कौन सी बात उठा रखते हैं आ प्यारी बोसा दे बड़ी भूख लग रही है।

पहली लड़की-हो पापा यह क्या, पापा क्या आया के कान कान का एक्सरे (X-ray) कर रहे हो।

दू० ल०--या गालों की सूजन पर टिंक्चरआइडिन मल रहे हो।

डाक्टर--नो नो बेटी, आया बोलता था कि, हमारे कान में कबूतर फंस गया था, हम उसको देख रहा था।

प० ल०-सिस्टर कान में कबूतर !

दू० ल०-क्या करेगा बेचारा किसी न किसी तरह अपना जी खुश कर लेता है।

प० ल०-आखिर अपना पापा है' अब कुछ न कहना देखो कितना शरमा गया है बन्दर का मुआफिक मुंह निकल आया।

दू० ल०-आया इधर आओ, हम लोग का जिधर शादी होने वाला है, क्या वह जंटलमैंन दमदम कार्नीवालका मालिक है, तुम थोड़ा पता तो लगाओ।

मलमल—बहुत अच्छा मेम साहब।

डाक्टर—अरे इसे कहां भेजती हो, यह बेचारी कहां मारी २ फिरेगी

मलमल—ऊं मैं कोई नन्हीं भोली नहीं हूं मैं सब कुछ जानती हूं।

डाक्टर—हूं, सब कुछ जानती है तो जा हत तेरे बुढ़ापे की ऐसी तैसी आजका प्रोग्राम भी अपसैंट हो गया।

जवानी और बुढ़ापेमें बस इतना फर्क होता है
वह किश्ती पार लगटी है यह बेड़ा ग़र्क होता है

दूसरी तरफ

लेडी नम्बर १—सिस्टर, वह देखो हमारे चाहने वाले दोनों जांगलू आ रहे हैं।

दिया—मेरी यादमें बुते बेखबर तुझे नींद हो न क़रार हो,
मैं तड़प २ के इधर मरू तुझे बेकसीका बुखार हो।

दीपक—तेरे हुस्न पर मेरी दिलरुबा मेरे बाप दादा सब ही फ़िदा।
जो मैं झूठ इसमें जरा कहूं मुझे तेरे प्यारकी मार हो।

लेडी नम्बर १—हैलो माई डियर।

दिया-हैलो माई स्वीट हार्ट।

दीपक—हैलो माई ब्रेक फास्ट।

टल्लू—मेम साहब तीन ठो बाबू आया है, और बोलता है हम डम डम कार्नीवालका मालिक है।

लेडी नम्बर १—अच्छा उनको आनेको बोलो।

दिया—उनको आनेको बोलो तो हमको जानेको बोलो, दीपक क्या लेडियां भी बेवफा होती हैं।

दीपक—नहीं होती वफादार हैं, परन्तु डिसैम्बरके महीनेमें जरा राजा महाराजाके दरशन कर लेती है।

लेडी नम्बर २ डियर तुम लोग थोड़ी देरके लिये हम लोगोंके भाई बन जाओ।

दिया-भाई दीपक क्या सलाह।

दीपक-बन जा यार, आखिर रण्डीके भाई तो हैं आज लेडीके भाई बन जायेगें तो क्या हो जायेगा।

लोभी चन्द--हैलो हम तीन आदमी हैं तो आपका तीसरा बहन कहां है।

लेडी नम्बर १—अभी आता है डाली, डाली।

डाली—आता है आता है; हैलो गुड मोंनिंग।

लोभी चन्द-यह दोनों आपके कौन हैं।

लेडी नम्बर २—यह हमारे भाई।

लोभी चन्द—तो गोया हमारे साले हैं, बड़े खूबसूरत हैं, और तुम्हारा तीसरा भाई।

लेडी नम्बर १—वह अभी पैदा नहीं हुवा है, चुपचाप खड़े रहो मेरे फादर आ रहे हैं।

डाक्टर—अहाहा यह मेरा घर है या महब्बतका अस्पताल है, अरे लोग तोम कौन हो।

लोभी चन्द—हम तीनों आपके दामाद हैं, और यह दोनों आपके बेटे हैं।

डाक्टर-यह कौन नालायक कहता हैं, मेरी स्त्रीने तो लड़कीके सिवा लड़का पैदा हा नहीं किया, बोलो तुम कौन हो।

दीपक-पहिले हम आशिक़ थे, फिर भाई वने अब भगवान जाने क्या बनेगे।

डाक्टर--मेरे वहादुर दामाद, इन दोनोंको जूते मारकर वाहर निकाल दो।

दिया-ठ रो हम खुद चले जाते हैं, अच्छा प्यारी सलाम।

लेडी नम्बर २—जियो बेटा गंगाराम।

डाक्टर-तो दमदम कार्नीवालके प्रोप्राईटर आप ही हैं।

लोभी चन्द-जी हां कानपुरमें जो लाल इमलीका कारखाना है, वह आपहीके दामादका है और वंगाल खाड़ीकी जितनी मछलियां गिरफ्तार की जाती है, उन सबका ठेका मैंने ही ले रक्खा है, और कार्नीवाल तो दिल वहलानेके लिये खोल रखा है।

डाक्टर-(वड़ा मालदार आदमी है, मेरी लड़कियां आरामसे रहेंगी), मैंने सुना है कि आपकी शादी हो चुकी है।

लोभी चन्द-यह कौन उल्लू कहता है, अभी तो मेरे दूधके दांत भी नहीं टूटे।

डाक्टर-अच्छा हाथ मिलाओ।

छिपकली-ठहर जाओ, मुये कमीने मेमसे शादी करने आया है।

डाक्टर-अरे वाप रे बाप यह लठ्ठ महाराज कहांसे आई।

लोभीचन्द-अरी तू कौन है।

छिपकली-तेरी जोरू चलता है या लगाऊं डण्डा, (डांटकी आवाज)

लोभी चन्द-अरे हाय २ बाप रे खोपड़ी गंजी हो गई, डाक्टर साहब यह औरत बिलकुल पागल है।

छिपकली-मैं पागल, तेरा बाप पागल, तेरा दादा पागल, तेरी मा पागल, चल।

लोभी चन्द-ओ मेरी होनेवाली लुगाई गुडवाई।

क्या खबर थी इनकलाबे आसमां हो जायेगा।
यारका मिलना नसीबे दुश्मनां हो जायेगा।

पहली तरफ — F T 4279

पटाखा-प्यारे अनार आज कल मारकेट का क्या भाव है ?

अनार-आलू दो आने, प्याज़ दस आने चुकंदर पांच आना मुरग़ो तीतर, चिड़या, वटेर, एक रुपये में चार चार।

पटाखा-दूर मुये ववरची, तूने तो अपना ही मारकेट का भाव बता दिया।

अनार-अच्छा और सुनो नए फैशन की टीप टाप, सिनेमा का पास और एक वीयर का गिलास देसी परिस्तान का भाव, बीस रुपया मुजरा (गाकर) अंधेरिया है रात पिया रहियो कि जहियो।

पटाखा-चुप २ अम्मां आ रही हैं।

दीमक-अरे यह मुवा फिर यहां मौजूद है, क्यूं जब कलकत्ते के

किसी चायखाने में बिसकुट न मिला तो हमारी नानखताई की तरफ हाथ बढ़ाया।

अनार-अमां नानखताई पर क्या मरती हो तुम्हारो बेटी तो सोने की चिड़या फांसने वाला कम्पा है, इसके गाल, सेब, होंठ जामन, आंखें टिमाचर, अब्रू कांटे, जवान छुरीं गरदन शराब की बोतल है। बड़ी अम्मां अल्लाह रक्खे तुम्हारी बेटी तो फरपो का होटल है।

दीमक-चल मुये निकल मेरे घर से।

पटाखा-अम्मां मैं इसे इस लिये चाहती हूं कि इस की आंखें मेरे मरहूम भाई से मिलती जुलती है।

दीमक-चूड़ैल तू भी इसे चाहती है, ठैरजा अब तेरा निकाह नवाब तगड़म जंग वालिये ठनठनिया से पठा देती हूं। हाय २ जब यह दोनों प्यारो मोहब्बत की बातें करते हैं, तो मुझे अपनी जवानी याद आती है, हाय जवानी हाय जवानी।

अनार-प्यारी यह बुढ़िया तेरे निकाह की बात कर रही है, मुझे यतीम होनेसे बचाना।

पटाखा-तुम घबराते क्यूं हो आने दो शादी का ज़माना, तुम जाओ और एक बुर्क़ा पहन कर आजाओ और मुझ से कहना कि रफ़ू चक्कर, बस मैं तुम्हारे साथ भाग चलूंगी

अनार-बहुत अच्छ मैं अभी बुर्क़ा पहन कर आता हूं।

दीमक-रफ़ू चक्कर, अच्छा मुये घन चक्कर, आतो सही मैं तेरी कैसी ख़बर लेती हूं, अब मै जाती हूं ओर मुये नबाव को

पैट्रोल के कैम्प से टेलीफून करती हूं।

नैरंग-सभा में मस्त कलंदर की आमद आमद है,

परी जमालों के बंदर की आमद आमद है।

चकरम-ऐ लोगो खुदा से डरो, रोज़ा रक्खो, नुमाज पढ़ो, हाये २

यह औरत है या कलकत्ते की रस मलाई।

पटाखा-वड़े अब्बा किस इरादे से आये हो।

चकरम-क्या किसी ने तुझे तहजीव वगैरह की तालीम नहीं दी जो अपने होने वाले शौहर नवाव नहूसत उल्मुल्क दामे इक़-वालहु एक्स वाई जैड को वड़े अब्बाव कहती है।

पटाखा-तो हजूर मुझ से शादी करने आये हैं।

चकरम-नहीं तो क्या तू मुझे सदके का बकरा समझती है।

पटाखा-अच्छा आपके साथ यह दोनों बच्चे कौन हैं,

चकरम-मैंने इन को यतीम खाने से खरीदा है

नैरङ्ग-जी हां हमारे हुज़ूर एक वहुत वड़े यतीम खाने के मैनेजर हैं,

वरकत-जहां सौ २ वरस के यतीम रहते हैं,

चकरम-क्युं वे नालायक़ो तुमने तो कहा था कि हम हुजुर की तारीफ़ करेंगे।

नैरङ्ग-अजी तारीफ़ ही तो कर रहे हैं, सुनिये बेगम साहिबा हमारे हुजुर अपने वक्त के अहमद शाह रंगीले हैं,

वरकत-जी हां जब नादिरशाह लाल किले में घुस पड़ा तो हमारे हुजुर आसावरी सुन रहे थे (कोई तेरे काम न आवे)

चकरम-जाओ मेरी आसतीन के पाले हुवे नेवलो काज़ी साहब की

नकेल पकड़ कर इसी चूहेदान में घसीट लाओ।

पटाखा-अब इसे चकमा देना चाहिये, नवाब साहब आप जायें और एक बुरका पहन कर आजायें मैं आप के साथ चलकर काज़ी साहब के ही निकाह पढ़ालूंगी, मगर यह याद रखना रफू चक्कर।

चकरम-बहुत अच्छा।

सदके तेरी अनवट के ए जलवये जनाना,
औरत के लिये औरत बन जाता है मरदाना
तो रफू चक्कर रफू चक्कर,

दूसरी तरफ़

अनार-मुझे बुरके में समझ कर यार लोगों के मुंह में पानी भर आया, जहां किसी ने छोड़ने के लिये बजाई ताली तो मैंने फौरन बुरके की जाली से एक मूंछ बाह निकाली, सब बोले यह औरत नहीं बिच्छू है बिच्छू देखो कितना बड़ा डंक है, आओ प्यारी रफू चक्कर।

पटाखा-कौन प्यारे अनार चलो प्यारे रफूचक्कर।

दीमक-मैं भी वह दीमक हूं कि दरवाजा चौखट कुछ नहीं देखती, शहतीर के शहतीर साफ कर जाती हूं आज बैटिंग स्ट्रीट की तमाम बिल्डिगें मेरे नाम को रो रही हैं, अब वह मुवा अनार बुरका पहिन कर आने वाला है,

चकरम-प्यारी रफूचक्कर।

दीमक-अच्छा मूये घनचक्कर, आ मेरी सलीपर और इसकी चंदिया का एक एक बाल चुन लेगी (मारती है जूतीकी आवाज)

चकरम-मर गया मर गया, अरे मैं नवाब नहूसतुलमुल्क वालिये ठनठनया हूं शायर हूं, ए बी सी डी हूं, एनडैबल्यु आर हूं, जी आई पी हूं, आर एस टी हूं, अरे मुझपर नहीं तो मेरे खिताबोंपर रहम कर।

दीमक-अरे कौन नवाब,

चकरम-हां वही ख़ाना ख़राब, अफसोस जिन बालोंपर कभी ताज था वही बाल जूतियोंकी नज़र हो गये।

दीमक-हाये हाये नवाब साहब मुआफ करना, मैं अपनी जूतियां वापिस लेती हूं, वह मुवा अनार किधर गया।

चकरम-दीवालीमें छूट गया।

दीमक-और मेरी बेटी पटाखा।

चकरम-ट्रामके पहियेके नीचे धड़से कूद गई।

दीमक-हाये २ उड़ गई मेरी उमर भरकी कमाई।

चकरम-देखिये वह दोनों सेहरा बांधकर वापिस आ रहें हैं।

पटाखा-अम्मां, हम दोनोंने निकाहका रसगुल्ला खा लिया।

चकरम-खुदा तुम्हें गारत करे, मैंने कहा बरखुरदार अपने निकाह नामेमें मेरी भी एक शरत लिखवा सकते हो।

अनार-वह क्या।

चकरम-जब तुम मर जाओ तो यह मेरी पटाखा बेवा होकर मुझ ही से निकाह पढ़वाये।

अनार-मन्जूर ।

नैरंग-होशियार खबरदार काज़ी कुतब मीनारकी सवारी आती है।

चकरम-यहां आनेकी जरूरत नहीं, तुम सब सीधे जहन्नुममें चले जाओ, बेटा नैरंग अब तुम वह गाना सुनाओ जो तुमने रातको दो बजे गाया था।

गाना

फिक्र अफ़यून की न अब ख्वाहिशे वालाई है,
देखिये जिसको वह कोकीनका शैदाई है,
जुल्फ इस शोखने जिसदिनसे कतरवाई है,
आशिकोंमें कोई धोबी तो कोई नाई है,

पहिली तरफ FT4280

काफिरे इशकम मुसलमानी मरा दरकार नेस्त
हर रगे मन तार गश्ता हाजते जन्नार नेस्त
अज़ सरे बालीन मन बरखेज़ ए नादां तबीब
दरद मन्दे इश्क रा दारू बजुज़ दीवार नेस्त

नादिरशा-लाओ लाओ हिन्दुस्तानी महाजनोंको कारूनके मनहूस बेटोंको मेरे सामने लाओ।

मोइम्मा हल करूंगा आज उनकी सूद ख्वारोका
जलाकर खाक कर डालूंगा खाता साहूकारीका
गरीबोंकी कमाई ही घर उनका पाट देती है
यह वह मीठी छुरी है जो कलेजा काट देती है

दोनों—सरकार मुजरा अरज है।

नादिरशाह-लाओ तुम्हारे हिसाबके वहीखाते किधर हैं।

गिरधारीलाल-यह है हुजूर....

नादिरशाह-चुप रहो तुम लोग जानते हो कि हम यहां क्यूं आये हैं?

गिरधारीलाल-हिन्दुस्तानको लूटने आये हैं और क्यूं आए हैं.......
हम क्या जाने अन्नदाता ?

नादिरशाह—हम तुम्हें इन्तजामे मुमलिकत सिखाने आये हैं ?

गिरधारीलाल—आप तशरीफ ले जायें, हम अपने मुल्कका इन्तजाम खुद कर लेंगे।

मुसलमां सिख यहूदी पारसी हिन्दू और ईसाई
हैं सब एक मां के बेटे और आपसमें सगे भाई
जो बिगड़ेगा कोई सब मिलके हम उनको मना लेंगे
जरूरत क्या है गैरोंकी हम अपना घर चला लेंगे

नादिरशाह-नाइत्तफाकीके बोलते हुए पुतलो, अगर तुममें जरा भी मेल होता तो मेरे चालीस हजार सिपाही तीस करोड़ की आबादीको किस तरह फतह कर सकते थे।

दिमाग़ोंसे भुलादी तुमने जब तालीम अकबर की
तो चमकी फतह बनकर हिन्दमें शमशीर नादिर की
मोहल्ले भरको खो देती है अकसर फूट दो घर की
थे जब तुम एक तो पसपा हुई फौजें सिकन्दर की
असर से आज तुम बादे मुखालिफके फसुरदा हो
तुम्हारी वह मसल है अब न जिन्दा हो न मुरदा हो

गिरधारीलाल—अन्नदाता।

रोना है इसी बातका आज हिन्दमें घर घर
यह फूट की जिल्लत है हमें मौतसे बढ़कर
यह कोई भी कह सकता नहीं हम नेक नहीं हैं
इतनी हो बुराई है कि हम एक नहीं है

दूसरी तरफ

नादिरशाह—तो हम तुम्हें उसी कसूरकी सजा देने आये हैं, अगर तुम अब भी एक हो जाओ तो खुदाकी कसम दुर्नियांके किसी फातहाको तुम्हारे मुल्कपर फौजकशी तो क्या आंख उठाकर देखनेकी भी जुर्रत नहीं होगी।

बड़ा मशहूर है किस्सा यह तुमने भी पढ़ा होगा
जहां दो बिल्लियां लड़ जायें बन्दरका भला होगा
खता तसलीम करते हो तो लाओ हक्के नजराना
अदा करना पड़ेगा आज इस गलतीका जुरमाना

गिरधारीलाल—जुरमाना जुरमाना कैसा हुजूर?

नादिरशाह...बेशऊर, जब तुम गरीब किसानोंको दस-दस रुपया देकर सूद दर सूदकी जंजीरोंमें जकड़ कर पचास २ रुपये वसूल करते उस वक्त नहीं सोचते कि इस अनोखी तिजारतका क्या अन्जाम होगा।

तुम्हारा जुल्म और बेकस गरीबोंकी रवादारी
कभी तो सर्द होगी आखरश यह गर्म बाज़ारी

छुपे डाकू हो तुम ख़ामोश है तर्जे जफ़ा कारी
जला देती है घर के घर कर्जकी एक चिंगारी
न जबतक दोगे जुरमाना बला टाली न जायगी
गरीबोंके दुखे दिलकी दुआ खाली न जायेगी

गिरधारीलाल—मगर सरकार हमें जुरमानेमें क्या देना पड़ेगा।

नादिरशाह—बहुत नहीं, सिरफ तीन करोड़ रुपया।

गिरधारीलाल—हैं तीन करोड़ रुपया, हुजूर इतनी तो हमारी औक़ात भी नहीं।

नादिरशाह—महाजनों की औक़ात डाकुओं को मालूम रहती है जवाब दो नहीं तो मुझे रुपया वसूल करने के बहुत से तरीके याद हैं।

गिरधारीलाल—हुज़ूर हम तो बहुत ग़रीब आदमी हैं।

नादिरशाह—मैं तुम जैसे ग़रीबों को अच्छी तरह जानता हूं, लाओ नहीं तो मेरी बेरहम ठोकरें तुम्हारे जिस्म के जोड़ २ को तोड़ कर रख देंगी।

खंजर से कटेंगी समर उमर की लाशें
तड़पेंगीं यहां खून में डूबी हुई लाशें
बोलो अभी फरयाद की कुछ दाद मिलेगी
फिर रहम जो मांगोगे तो बेदाद मिलेगी

गिरधारीलाल—हमारे पास तो हजूर कुछ भी नहीं है।

नादिरशाह—कुछ भी नहीं, सिपाहियो जिस वक्त तक यह तीन करोड़ रुपया देने का इक़रार न करें इन की पीठ पर बराबर दुर्रे लगाते रहो।

बनवारीलाल—दया, दया, अन्नदाता, हम दोनों मिलकर एक करोड़

गिरधारीलाल—नहीं नहीं डेढ़ करोड़ रुपया देते हैं।

नादिरशाह—सिपाहियों, खञ्जर से लगाओ दिले नापाक पर चरके,
इक़रार करेंगे यह अभी मौत से डरके।

गिरधारीलाल—अरे नहीं नहीं अन्नदाता हम सब रुपया अभी अदा किए देते हैं, लीजियए यह तीन करोड़ रुपए के जवाहरात हाजिर हैं।

बनवारीलाल—ले जाओ इस में हमारे बाबा का क्या जाता है, हम यह समझेंगे कि दो नवाबों से सूद नहीं मिला था।
इतनी सी रक़म का हमें ग़म हो नहीं सकता,
धन बढ़ता है खैरात से कम हो नहीं सकता।

नादिरशाह—जाओ चले जाओ।

दोनों —अन्नदाता की जै हो।

* गाना *

यह दिल आपस की सब ना इत्तफ़ाकी रंग लाई है,
कि दोनों भाईयों की पीठ पर गैरों का कोड़ा है,
गुल क्या है ख़ार तक न बचे हाये लूट से
भारत का भाग उजड़ गया भारत की फूट से
हमारे भाइयों ने अपना करमो धर्म छोड़ा है,
जभी तो गैर क़ौमों ने इनको निचोड़ा है,
यह दिल आपस की सब ना इत्तफाक़ी रङ्ग लाई है,
कि दोनों भाइयों की पीठ पर गैरों का कोड़ा है,

मास्टर लच्छी राम

F T 3949

गजल

पहली तरफ

दिल है मुशताक जुदा आंख तलबगार जुदा
खाहिशे वस्ल जुदा हसरते दीदार जुदा
जी जलाने को सताने को मिटाने को मेरे
वह जुदा ग़ैर जुदा चरख सितमगार जुदा
तेग़ो खंजर भी अंदाजो अदा भी जुदा
सर के गाहक हैं अलग दिल के खरीदार जुदा
बाग़ में याद ने उन की मुझे टिकने न दिया
चुटकियां लेने लगे फूल जुदा खार जुदा

गजल

दूसरी तरफ

दौर में ता गरदिशे अफ़लाक पैमाना रहे
हश्र तक साकी तेरा आबाद मैखाना रहे
ए दिले सद चाक क्या रोऊं तेरी तकदीर को
तू रहे महरूम जुलफे यार में साना रहे
इक सिरे से बे वफा हैं इस जमाने में हसीन
गैर मुमकिन है बराबर इन से याराना रहे
ले खबर मजनूं की कुछ ए लैलये महमिल नशीं।
खाक उड़ाता दस्त में कब तक यह दीवाना रहे।

मजाकिया **पहली तरफ** **F T 4356**

एक तमाशा हमने देखा कूये में लग गई आग
कीचड़ पानी सारा जल गयो मोरी जनियां, मछली रह गई साफ
अरे हां रे मोरी सरहनिया आई गई घाट पे छुवा छू छुवा छू
जिस दिन से मैं जानी फंदे में फंसा हूं
हाथ जोड़के अब तो बंदा हाजिर खड़ा हूं, अरे हां रे मोरी बिरहन
ओर गई रे घाट पे छुवा छू छुवा छू............
मां मरों नद्दियन कुद्दियन भाई मरा नद तीरा
भय्यन को ले गयो सेवती का देवता कह्नन मंगाई बीरा
अरे हां रे मोरी बिरहन............

मालकोस **दूसरी तरफ**

मोटी मोटी रोटिया पकाले धोबनिया चलना पी के घाट
तीन चीज़ मत भूलियो बरैठन हुक्का तम्बाकू आग
अरे मोरी बिरहन आई और गई घाट पे छियाराम छियाराम
चली जाती धोबनिया मटकी चाल, आगे गधइया पाछे धोबनिया
सर पे कलफ की हंडिया, अरे हां रे मोरी बिरहन आई और....
अरे सतवा दलिया सर धर लीनो, ललवा लीनो साथ
लड्डू जलेबी बरेठा खाई है, हम खाई पनवा के पात
काहे की बरेठा तोहर गयय्या उलट दई मोरी खाट, अरे हां रे....
हमार सुसरवा मधुवा पिवत है नाहीं सुनत मोरी वात, अरे....

मास्टर फ़कीरुद्दीन

F T 4011

पहली तरफ

गजल

एक शोक हसीनो कमसिन पर ए इश्क़ मुझे माइल कर दे
आबाद जो रखना है दिल को बरबाद निशात दिल कर दे
इन मस्त निगाहों से साक़ी लबरेज तू सागिर दिल कर दे
या आंखों ही आंखों में बेखुद तू महफ़िल की महफ़िल कर दे
दिल में दुनिया का गम भर दे फिर दुनिया से ग़ाफिल कर दे
आसान जो मुश्किल करनी हैं मुश्किल को भी मुश्किल कर दे
एक बुत के तसब्बुर में हमने तस्वीरें मुहब्बत खैंची है
अल्लाह उसे दे जान मगर पहले पत्थर का दिल कर दे
ए इश्क़ यह दुनिया नज्द बने हर सिम्त बगोले पैदा हों
ज़र्रों को कैस का दिल कर दे हर नाके को महमिल कर दे

दूसरी तरफ

गजल

परदे उठे हुवे भी हैं उनकी नज़र इधर भी है
बढ़के मुक़द्दर आसमां सर भी है संगे दर भी है
आशियां भी मेरा जला दिया फिर यह सय्यादने कहा
बुल्बुले खानमां खराब क्या कोई तेरा घर भी है
वक्ते नज़ा न आय वह सूरत न अपनी दिखाय वह
मुझको तो दे कोई पता उनको मेरी खबर भी है
दीनों इमां हमने तो कर दिया तेरी नज़र
न दिल है और न जिगर मुझ सा कोई बशर भी है

गुलामनबी कव्वाल

कव्वाली　　　　**पहली तरफ़**　　　　F T 3990

दिल गया, दिल गया, दिल गया, दिल गया,
मेरी शामत कि में सूए क़ातिल गया
मुझ से आंखें मिलाई जिगर हिल गया
जो कुछ अरमान था खाक में मिल गया
हाय नाज़ों का पाला मेरा दिल गया
दिल गया, दिल गया, दिल गया, दिल गया,
इन अदाओं के कुरबान ए दिल रुबा
तिरछी नज़रों से एसा इशारा किया
अपने बरबादे उल्फत का तड़पा दिया
आह बरछी लगी हाय बिस्मिल हुवा
दिल गया, दिल गया, दिल गया, दिल गया,
मीठा २ सा कुछ २ है दरदे निहाँ
और इस के सिबा क्या करूं मैं बयाँ
शक है गर मेरी बातों पे तो मेहरबा
देख लो मेरे पहलू में अब दिल कहां
दिल गया, दिल गया, दिल गया, दिल गया,
वह असीरे मोहब्बत रवाना हुवा
खाली पहलू का अब आय आशयाना हुवा
हाय बरबाद अपना खज़ाना हुवा

मुद्दतें गुज़रीं माहिर ज़माना हुवा
दिल गया, दिल गया, दिल गया, दिल गया,

दूसर तरफ

दरदे दिल, दरदे दिल, दरदे दिल, दरदे दिल,—
पूछा लैला से मजनूं ने जब माजरा,
आह की कैस ने कुछ धुवां सा उठा
पेच खाता हुवा मुन्तशिर हो गया
फैलते २ बस यह उक्दा खुला
दरदे दिल, दरदे दिल, दरदे दिल. दरदे दिल,—
एशो इशरत है शादी का सामान है
मेरे उजड़े हुवे घर का मैहमान है
आरज़ू है तमन्ना है अरमान है
दिल जिगर है नजर है न जी जान है
दरदे दिल, दरदे दिल, दरदे दिल, दरदे दिल,—
सुबह ग़म या कोई ऐश की शाम है
शीशए मुल है या लब बलब जान है
वे करारी या राहत का सामान है
प्यारा २ सा माहिर यह क्या नाम है
दरदे दिल, दरदे दिल, दरदे दिल, दरदे दिल,—

खलील अहमद व पार्टी

नात **पहली तरफ** F T 3992

सपने में दरस पाऊं—मैं जाऊं तुमपे वारियां

जब से गये मोरी सुधहु न लीनी, क्या कहके जिया समझाऊं

मैं जाऊं ....

अंग भभूत गले मृग छाला—जोगन रूप बनाऊं मैं जाऊं....

बारे बलम तोहरे वल वल जाऊं—चरनन सीस नवाऊं मैं....

आओ पिया मोहे दरस दिखादो—हंस २ गरवा लगाऊं मैं....

नात **दूसरी तरफ**

पिया तोरे चरनन के बलिहार

अरज करत हूं, पय्यां परत हूं, न मोहें दिल से बिसार

पिया तोरे............

वारी मैं हमीका भूल न ज्हय्यो—पिया तोरे........

आन फंसी है वीच भंवर में—बिन तुम नय्या हमार-पिया...

........पार कहत है-अव मोरा कष्ट संवार—पिया तोरे....

अब्दुस्सत्तार व हमराहियान

गजल **पहली तरफ** FT 4085

सलामत रहें दर्दे दिल देने वाले
लक़ब कैसो फरहादका मुझको बख्शा,
तलबगार हुस्ने हक़ीक़ी बनाया,
चढ़ाया मुझे दारपर खाल खैंचा,
गरज एक नया खेल हर रोज खेला,
सलामत रहें दर्दे दिल देने वाले
मोहब्बतके दिलको मजे आ रहे हैं,
जो गम खानेवाले थे गम खा रहे हैं,
इनायत है उनकी जो तड़पा रहे हैं,
सलामत रहें दर्दे दिल देनेवाले
जिगर टुकड़े टुकड़े है दिल पारा पारा,

गजल **दूसरी तरफ**

शराबे जलवये रंगींसे मैं सरशार हो जाता,
अगर ए साकिये बेखुद तेरा दीदार हो जाता,
तो मेरे दिलके अरमानोंका बेड़ा पार हो जाता।
किसीका दिल जिगर जलता किसीपर बिजलियां गिरतीं,
किसीका दम निकल जाता किसीपर आफते आतीं,
जो तू इठलाके चलता नक़शे पा तलवार हो जाता ॥

अगर वह माहलका मेरा अगर वह खुश अदा मेरा,
अगर वह दिलरुबा मेरा इलाजे दर्दे दिल करता,
दिले बीमार अच्छा होके फिर बीमार हो जाता।
तुम्हें मालूम हो जाता जफ़ा क्या है सितम क्या है,
तुम्हारा दिल समझ लेता कि रंजो दर्दो गम क्या है,
अगर दो चार से दो चार दिन दो चार हो जाता॥

गुलाम अहमद व पार्टी

कव्वाली **पहली तरफ** **F T 4097**

उसको भी ढूंढ़ता हूं एक यह भी जुस्तजू है,
इक वह भी है तमन्ना इक यह भी आरजू है
ऐसा किया है जादू आंखों में बस गया तू
मैं जिसको देखता हूं तुझसा ही हूबहू है
इस आईनये वहदत में..............
मैं उसके रूबरू हूं वह मेरे रूबरू है
अब कत्ल कर चुके हो लाशें तो दफन कर दो,
पामाल भी करोगे क्या यह भी आरजू है

कव्वाली **दूसरी तरफ**

जफायें करो शौकसे जुल्म ढाओ,
मेरे सब्र की कुव्वत आजमाओ,

मुझे नकश बातिल समझ कर मिटाओ
कि अब देर की दिल में हसरत नहीं है
मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है
यह अच्छा किया सब वफाये भुला दीं,
मेरे दरदे दिलकी दवायें भुला दीं
मोहब्बतकी सारी अदाये भुला दी,
यह मासूमियत है शरारत नहीं है,
मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है
बुरा क्या किया दिलकी हस्ती मिटाई
हजारों उमीदोंकी वस्तो मिटा दी
मैं खुश हूं कि अरमां परस्ती मिटा दी
मोहब्बत यह है सब अदावत नहीं है,

अजीम कव्वाल व पार्टी

पहली तरफ — F T 4126

प्रीत तोरी हाये राम बड़ादुख दीनी
हंस हंसाके और नैना मिलायके, तूने यह मोपे गजब जादू कीनो
प्रीत तोरी........ ...
चंचल छबीला अजब अलबेला, तिरछी नजर दिल छीनी
प्रीत तोरी ....
झलक दिखाके और हियामें समाके, छापतिलक छीन लीनी

प्रीत तोरी...............

जान फंसी आफतमें जबसे, माइलने प्रेम कीनी,

प्रीत तोरी ....

दूसरी तरफ

थाम लो मोरी बहियां बलम मोरे

जग रूठे पिया तुम नाहीं रूठो, मिनती करूं पड़ूं पय्यां, बलम मोरे

चन्द्र बदन मृग लोचन नैना, चांद सूरज बल जईयां, बलम मोरे.

प्रेमकी नय्या डगमग डोले, डूब न जाये बीच ठईयां बलम मोरे

बहुत जलायो पिया पोत में अपने, अब तो लगालो गले सय्यां,

बलम मोरे...............

जबसे दिखायो झलक सुपनेमें, मायल हूं तोरे गुसईयां, बल्म मो

काली बरमन

भजन **पहली तरफ** **F T 4130**

नाहीं बनेगी गिरधारी हमारो तोरी,

तुम नन्दजी छैल छबीले मैं बृज भानूं दुलारी,

मैं जल जमना भरन जात रही मगमें ठाडे बनवारी,

चीर हमारा देओ रे मोहन,

सास सुनेगी देगी गारी,

दूसरी तरफ

भजन

भजो मन राम चरन सुखदाई,
जेही चरननसे निकसो सूर श्री शंकर जटा समाई,
जटा शंकरी नाम पड़ो है त्रिभुवन तारन आई,
जेही चरणनकी चरण पादुका भरत लेनेको लाई,
सोह चरण केवट धोये लीनो तब ही नाव चलाई,
सोइ चरण गौतम ऋषिकी नारी परस परम पद पाई,
सोइ चरण संत जन सेवत सदा रहत सुखदाई,
भजो मन राम चरन सुखदाई,

छोटा मोजू कव्वाल

F T 4153

पहली तरफ

गजल

न वह यार मिला न करार मिला
गुल बूटे मिले गुलजार मिला, मुझे ताज मिला दरवार मिला
हर एक मिला हर बार मिला, यूं मिलनेको संसार मिला
न वह यार मिला न करार मिला
मुझे इश्कका जिसने सोग दिया, मुझे हिज्रका जिसने रोग दिया
गमो रंजका जिसने भोग दिया, मुझे जोगीका जिसने जोग दिया
न वह यार मिला न करार मिला

माहिर वह सलामो कलाम नहीं, वह दौर मये गुलफाम नहीं
वह राहतें सुबहो शाम नहीं, दिल जबसे गया आराम नहीं
न वह यार मिला न करार मिला

गजल

दूसरी तरफ

मैं कुरबान बस इक नजर देख लेते
इधर देख लेते उधर देख लेते,
तड़पता है दिल और जिगर देख लेते
इन अंखियोंसे मुड़कर अगर देख लेते
तो उल्फत में तुम भी असर देख लेते
मैं कुरबान................

गये गमके दिन आई शामे मुसीबत
कटी शाम फुरकत बढ़ी शबकी जुलमत
बला क्या टली फट पड़ी और आफत
यही कहते कहते हुवी एक मुद्दत
शबे हिज्रकी हम सहर देख लेते

जुदाईमें बजता है शोहरतका डंका,
यही बस दो आलममें होता है चरचा
कि तुमने किया दरदो गमका मदावा
जमानेमें हो तुम तो रश्के मसीहा
हमारा भी जख्मे जिगर देख लेते

शंकरलाल राघवजी

आसावरी **पहली तरफ** F T 5243

नारद मेरे सन्त से अधिक न कोई
मम उर संतन, मैं संतन उर, दरस करूं स्थिर होई
कमला मेरो करत उपासन, मान चपलता दोई
यदपि दरस दियो मैं उरपर, संतन सम नहीं कोई
भूको भार हरूं संतन हित करूं छाया कर सोई
जो मेरे सन्तको रती एके दुखात तेही जड़ डारू में खोई
ज़िन नर तन धरि संतन सेये, ते निज जन नहीं खोई
भक्तानन्द कहत यूं मोहन प्रिय मोहे जन निरमोही

पहाड़ी दादरा **दूसरी तरफ**

जय श्रीकृष्ण कहियो ऊधो जान कान क्या माने
पतियां पठाई दीनी बात सों विचारी लीनी
कैसी राज नीतो कीनी नन्द दुलाराने
भरने गई थी नीर ठाड़ो यमुनाके तीर
देखी बलवीर प्यारे श्याम ठगारा ने
चित्त मोरा चोरी लीनो, मोसे कछु जादु कींनो
मनयो फिराय लीनो मुरली वाला ने
देवा नन्द कहे नाथ, सुनो अबलाकी गाथ
इच्छित है राधे प्यारी दरश तुम्हारे ने

अली असगर

गजल | पहली तरफ | F T 4339

फेर कर आंखें बदल कर त्योरियां रूठे हुवे
जारहा है सितमगर दिल जिगर लूटे हुवे
शीशा व सागर से मतलब है न मैखाने से काम
मुद्दतें गुजरी है शुगले मैकशी छूटे हुवे
ए तमाशे यार कब तक ठोकरें खाता फिरूं
हाये क्या मिलते नहीं बिछड़े हुवे छूटे हुवे
शीशये दिल तोड़ देना आपको एक खेल है
जब मैं जानूं दिल के टुकड़े जोड़िये टुटे हुवे

गजल | दूसरी तरफ

सब आशना अपने मतलब के यां दोस्त किसी का कोई नहीं ।
जब होगई अपनी गरज पूरी फिर पूछने वाला कोई नहीं ॥
यह चांद सा मुखड़ा क्या देखा अंधेरा हुवा नजरों में जहां ।
तेरे सर की कसम ए जाने जहां अब नजरों में जचता कोई नहीं
माईल जो तेरी सूरत पे हुवा घायल जो तेरी आंखों का हुवा ।
दुनियां में कहीं फिर उनके लिये जीनेका साहारा कोई नहीं ॥
यह हुस्न के पुतले हैं चलते हुवे दिल चाल से लेकर चलते बने ।
इस चाल को इक माहिर ही नहीं दुनिया में समझता कोई नहीं ॥

लछमन शर्मा

FT 4365

दादरा — पहली तरफ

गोट में कियां पड़ो घाटो
गयो आदमी बहुत साथ में थोड़ो लियो आटो
बाटी बनाई काची बनाई चूरों में कम साटो
चावल जानो बना खीचड़ी दाल हुई खाटो
बैठो जीमवा साथी भायला बिछा २ पाटो
हाथ २ पर सवा लागा घड़ी २ माटो
वह भी पट्ठो जिमो जीमवा हाथी को पाटो
चूरां बाटी बीत गई अब पातल नूं चाटो

दादरा — दूसरी तरफ़

मेलो थारो मजो बोहत आयो
वहरो भेजो टपक टपक रंग गालां पर छायो
बादलो गहरो घुट आयो बरसो मूसलाधार
सड़क पर पानी नहीं पायो
लोग मेला को घबड़ायो, पगड़ी भीज
अंगरखी भीजी कुरता सरकायो
काकी जी सुन जो मामी जी सुन ननदी जी गयो
मिच रही गावा कीच घघरा जांहगों तक आयो

एच॰ एस॰ लवलेकार

कव्वाली पहली तरफ F T 5327

कान्हा बन्सरी बजाओ गिरधारी
तेरी बन्सरी लागी मोको प्यारी
दही दूंध बेचने जाती थी जमना
कान्हा ने गागर फोरी ॥ १ ॥
मीरा कहे प्रभू गिरधर नागर
चरन कमल बलिहारी ॥ २ ॥

दुर्गा दूसरी तरफ

कोमल चित दीनन पर दाया,
मन बच कर्म मम भक्त अमाया।
सबहि मान प्रद आप अमानी,
भरत प्रान सम मम ते प्रानी ॥ १ ॥

अखतरी बाई (गाजीपुर)

पहली तरफ F T 4384

रूठे बलमा हमारे हो गुइयां रे
नाहीं माने मनाये से सय्यां रे
उसी की याद में हम बेक़रार रहते हैं,

हमारी आंखों से दिन रात अश्क बहते हैं,
शबे फिराक क्या २ न सदमे सहते हैं,
बदल २ के बस अब करवटें यह कहते हैं,
कैसे काटूं पिया बिन रतियां रे
रूठे बलमा हमारे गुइयां रे

बहार आई है गुलशन में दौर चलते हैं,
चमन में फूल भी खिलते हैं, फल भी फलते हैं,
वह कौन हौसले जिसके नहीं निकलते हैं,
हमीं तो हैं यह जो कह कह के हाथ मलते हैं,
कहूं कासे जवानी की बतियां रे
रूठे बलमा हमारे गुइयां रे

दूसरी तरफ

किस ने चिलमन से मारा नजारा मुझे
दर्दे फुरक्त नहीं अब गवारा मुझे
वह मैं नहीं हूं कि तुझ बुत से दिल मेरा फिर जाये,
फिरूं मैं तुझ से तो मुझ से मेरा खुदा फिर जाये,
फिरे जमाना फिरे आसमां हवा फिरजाये,
बुतों से हम न फिरें हम से गर खुदा फिरे,
इलाही वह न फिरे जिस के गम में मरता हूं,
गले पे मेरे अगर खंजरे जफा फिरजाये
किस ने चिलमन से मारा नजरा मुझे

मिस खुरशीद जान

पहली तरफ FT 4385

कली मुरझाई शबनम उड़ चली फूलों के दामन से
इलाही सैर करके यूं चला है कौन गुलशन से
फना के बाद हिद्दत है अभी तक कल्बे मुजतिर में
हूं ऐसा दिल जला अब तक धुवां उठता है मदफन से
अंधेरी रात ऐसी थी हवा से गुल चिरागां थे
खुदा हाफिज सिधारो यह सदा आती है मदफन से
भरी महफिल में जालिम गालियां देना ही क्या कम था
फिर उस पर यह क्यामत की रजा उठवाया दुशमन से

दूसरी तरफ

मशहर में मैंने अर्ज किया इस अदब के साथ,
लो आज कैसा देख लिया तुम को सब के साथ
अहले अजम के साथ है अहले अरब के साथ
कहने को लाशरीक हैं लेकिन हैं सब के साथ
कर कत्ल मुझ को तू मगर हां इस सदक के साथ
फिर मर के जी उठूं तेरे एज़ाजे लब के साथ
मुशताक मुझ को मिल्लते रज़वां से क्या ग़रज़
जन्नत में जाऊंगा उसी आली नसब के साथ

मिस शाहला

पहली तरफ

F T 4386

मेरे जोबनवा पे छाये रसिया नीबूं लेलो, ओ रसिया नीबू लेलो,
हां रसिया............
हुवे सैकड़ों आशिक़ मेरे देख के जोबन का ठाठ रे
भूला नहीं जिंदगी भर वह दो नीबू की चाट रे, नीबू........
मेरे नीबू बड़े चटपटे और जायके दार रे,
क़िस्मत वाला रस को चाटे वदकिस्मत बेजार रे
नीबू लेके बड़े नाज से निकली मैं तो घर से रे
वैठे हुवे दिवाने यह सब खड़े हुवे दीवाने,
यह सब देखके मोहे तरसे रे नीबू.......
नीबू का रस देख के मुंह में भर आया है पानी रे,
कोई कहता है शहला प्यारी कोई दिलबर जानी रे,

दूसरी तरफ

शहला आई है कलकत्ते से गंडेरी लेलो,
मेरी गंडेरी वड़ी रसीली जोबन से भरपूर,
जो चख ले हो जाय दिवाना होवे गम सब दूर,
गंडेरी..........
ठंडक से हो जिगर कलेजा ठंडा ए दिलदार
आओ खरीदो यार गंडेरी पैसे की तुम चार
गंडेरी..........

लेके गंडेरी घर से निकली जोबन को संभाल
बैठे हजारों आशिक मेरे खड़े हजारों आशिक
बांधे कतार रे गंडेरी.......
जिस से आंखें लड़े शहला कीं हो जाये निहाल
लूटे मजा गंडेरी का वह बाहें गले में डाल,

मिस रज्जो बाई

दादरा **पहली तरफ** **E T 4404**

रसिया गजरा तोड़ डाला, मोरे बालेपन का गजरा, गजरा गजरा, तोड़ डाला ...
सोने की थाल में ज्योना बनायेएलो सय्यां निपट जाये झगड़ा झगड़ा गजरा ....
लौंग इलायची का बिरिया लगायो रसीले सय्याँ निपट जाये झगड़ा २ गजरा ...
चुन चुन कलियां सेज बिछाई, सोले सय्यां निपट जाये झगड़ा झगड़ा, गजरा ....

दादरा **दूसरी तरफ**

कैसे जोबन पै आई वहार है, जिसको देखो वह तुम पर निसार है
जब से तीरे नजर से है मारा, नहीं लेते खबर क्यूं खुदरा
जिसकी उलफत में दिल बेकरार है, कैसे जोबन ...
कैसे जालिम पे दिल हाये आया, अपनी हस्ती को जिसपर मिटाया

जिसका मिलना वहुत दुशवार है, कैसे जोवन.................
कहीं दिल न किसी से लगाना, जान आफत में अपनी फंसाना
यह मुरव्वत की हमदम पुकार है, कैसे जोबन.........

मास्टर लब्भू

F T 4392

गजल पहली तरफ

एक टिस सी दिल में उठती है, एक दर्द जिगर में होता है।
एक फांस खटकती रहती है, और आशिक तेरा रोता है॥
तसकीन जिसे सब्र कहते हैं वह इश्क में किसको हासिल है।
वेताबी जब बढ़ जाती है तब सब्र कहां फिर होता है॥
यह दिल का आना दिल से है यह इश्क न सीखा जाता है।
यह आते आते आता है यह होते होते होता है॥

गजल दूसरी तरफ

इश्क कहते आये हैं शायद इसी खंजर का नाम
आज पहली बार है दिल जिससे घायल हो गया
मैं सोये फितने को बेदार कर नहीं सकता
जो तुम से इश्क का इजहार कर नहीं सकता
रक़ीब आंखों पे पहरे बिठाये बैठे हैं
गजब है उनका मैं दीदार कर नहीं सकता
यह कैसा जुलम है उल्फत में कैसी पाबंदी,
यह क्या सितम है तुम्हें प्यार कर नहीं सकता

पीर मोहम्मद कव्वाल

गजल पहली तरफ F T 4393

तीर मारा तीर मारा तीर मारा रे
जालिम ने नीची नैनों से तीर मारा रे
मैं सैर के लिये एक रोज घर से निकला था
कि रास्ते में मुझे एक हसीं नजर आया
थी शक्ल चाँद सी उसकी नजर थी रसमिली,
मैं देखते ही उसे बस यही पुकार उठा
तीर मारा तीर मारा तीर मारा रे
मिला दश्त में कल मुझ से कैस दीवाना,
करूं बयान मैं क्या तुम से हाल जार उसका
न होश अपने सरोपा का था कुछ भी,
फिराक लैला में रोकर वह यह ही कहता था
तीर मारा तीर मारा तीर मारा रे
मैं सूये गोरे गरीबां जो एक रोज गया,
बताऊं क्या तुम्हें फारिग कि मैं ने क्या देखा
उदासी छाई थी हर सम्मत हू का आलम था,
और एक कब्र से आती थी दमबदम यह सदा
तीर मारा तीर मारा तीर मारा रे

दूसरी तरफ

प्यारी लैला मेरी प्यारी लैला मेरी
तुझ को देखा नहीं एक मुद्दत हुवी
तेरी फुरकत में है जान पर आ बनी
इलतजा तुझ से मेरी है अब तो यही,
शक्ल अपनी दिखादे मुझे चांद सी
प्यारी लैला मेरी प्यारी लैला मेरी
कुये लैला में तेरा अगर हो गुजर,
कहना मेरी तरफ से नसीमे सहर,
करगया कूच दुनियां से मजनूं मगर,
मरते दम भी था उसकी जबां पर यही
प्यारी लैला मेरी प्यारी लैला मेरी
आह नाशाद दुनियां से जाना पड़ा
एक भी मेरा अरमां न पूरा हुवा,
था मुकद्दर में क्या यह अजल से लिखा,
यूं ही बरबाद मेरी जवानी हुई
प्यारी लैला मेरी प्यारी लैला मेरी

मिस पुष्पा व शर्मा

भजन पहली तरफ F T 4405

शर्मा—गहरी है प्रेम की धारा
पुष्पा—प्रेमी से पूछो, प्रेमी से पूछो

शर्मा—इसका नहीं है किनारा
पुष्पा—नैय्या से पूछो, नौका से पूछो
शर्मा—प्रीत की रीत है अद्‌भुत प्यारे—पंथ इसका न्यारा
पुष्पा—घायल से पूछो जख्मी से पूछो
शर्मा—जगत जिसे घनश्याम कहत है–है चित चोर वह प्यारा
पुष्पा—राधा से पूछो राधा से पूछो

भजन **दूसरी तरफ**

जाओ जी नन्द किशोर चोर चित चोर चित चोर
जितना सुन्दर है मनमोहन उतना ही है कठोर
बचपन में पूतना संघारी, कुब्जा से थी प्रीत तुम्हारी
दही माखन के चोर
प्रेम प्रीत के वान चलाकर, मन मोह मर और आंख बचाकर
मथुरा गया निठोर, जाओ जी···

पहली तरफ **F T 4407**

आई भी अपनी तबीयत तो कहां आई है,
जो दगाबाज है मक्कार है हरजाई है।
क्या कहूं उनको रकीबों से कहां है फुरसत
आज रोटी भी तो तन्दूर से पकवाई है।
क्या वजैदार तरहदार है उनके आशिक,
कोई कुञ्चड़ा कोई कस्साव कोई नाई है।
हम ने जब देखलिया उनको उदु से मिलते,

हंस के बोली मेरे मामूं का बड़ा भाई है।
हिज्र में तेरे चुना करता हूं जाना उपले,
काहे का इश्क मियां मुफ्त की रुस्वाई है।

दूसरी तरफ

तेरे तीरे नजर जिस तरफ जायेंगे।
जो न मरने थे बेमौत मरजायेंगे॥
अपने बीमारे गम की करो कुछ दवा,
सूख कर इश्क में तेरे भैंसा हुवा,
(आवाज) बेटा सत्यानासी का जुलाब लो।
बोली झुंझलाके फिर आगया बेहाया
देखा मुझको उठा करके मारा तवा
क्या खबर थी वो मुझसे बिगड़ जायेंगे।
रात के दस बजे घर मैं उनके गया
डाल कफनीं गले में लगाई सदा
(आवाज) हा हा हा हा—हो हो हो हो।
सदका दे हुस्न का अपनी सूरत दिखा
कपड़े पतले हैं चलती है ठंडी हवा
हम तो सरदी के मारे अकड़ जायेंगे।
(आवाज) बेटा इश्कबाजी का अंजाम यही है
पहरे वाले ने मुझ को लिया है बिठा
बोला आया कहां से मुझे यह बता
(आवाज) चोरी का इरादा होगा।

जब पड़े मुझपे जूते तो मैंने कहा
मैं तो बाज आया इस इश्क से या खुदा
मारे जूतों के हुलिए बिगड़ जायेंगे।
उसका इस बात पर मुझ से झगड़ा हुआ
लादो "बाटा" का सैंडल सवा सात का, टट्टूं, टट्टूं, टन्नूं, टूं,
साफ मैंने कहा डर था किस बात का
मुझ पे करजा नहीं है तेरे बाप का
आये दिल यूं तो सर पे वह चढ़ जायेंगे।

फैन्सी टोपियां मिलनेका पताः—
कच्छी एण्ड को०, { नं० १३ मलिक स्ट्रीट,
कलकत्ता।

श्रीमती हीरा बाई

गजल **पहली तरफ** H 370

मुझसे निगाह शोख़ने जिसवक्त चार की
वर्छी थी या छुरी थी जो सीनेके पार की।
दिलको न मेरे चैन, जिग़र को नहीं क़रार,
हालत है ग़ैर मेरे दिले बेक़रार की
हम शोलये फ़िराक़ में कबतक जला करें,
तूम्हीं कहो कि हद भी है कुछ इन्तजार की।
बालीं पर मेरे आके वो कहते हैं या खुदा,
हा़लत ये क्या है, मेरे रजा जां निसार की।

गजल **दूसरी तरफ—**

किये जा ऐ जालिम सितम धीरे धीरे।
सहेंगे तेरे जुल्म हम धीरे धीरे,
हजारों मरीजों को बेदम बनाकर
चला आता है वो सनम धीरे धीरे
झड़ी देखकर मेरे अशकों के शायद
हुवा अब्र बारां भी कम धीरे धीरे
पिया साग़रे इश्क साक़ी ने ऐसा
भुला बैठे हम जामे जम धीरे धीरे

पं० दलीपचन्द्र वेदी

H 369

देश **पहली तरफ**

पिया नहिं आये मैं का करूं गोइयां
पिया नहिं आये मोरा जिया घबड़ाये
पिया नहिं ० ॥
सावन की रुत बिजली चमके
घिर-घिर आये बदली रे
तेरे हिज्र में ऐसी तड़पूं
जैसे जल बिन मछली रे
कोयलिया गाय, बदरिया छाय, जिया घबड़ाय
पिया नहिं ० ॥

शेर——ऐ दिले नादां तेरे ग़मजे उठाऊं किस तरह
इन्ताशारी को तेरे, एकजा ठहराऊं किस तरह
जिगर में टीस है लब पर हाय, जिया घबड़ाय
पिया नहिं ० ॥

गजल **दूसरी तरफ**

जो हकीकगों की बहार थी, कभी चश्म अहले नेयाज में।
तेरे राजे हुस्न के फूल थे, जो खिले हैं आके मजाज़ में॥
न हो अपनी आंख जो हुस्नबीं तो जहाँ में कोई हसीं नहीं।

जो वह गजनवी की निगाह हो, वही ख़म है जुल्फे अयाज में।
मेरी बेखुदी ने गजब किया कि मिटा दी लज्जते आशिकी
वह जलन नहीं वह मजा नहीं तेरे सोज में मेरे साज में ॥

मि० जार्ज डानियाल्स

H 371

गजल

पहली तरफ

मेरे दिल पे बिजली गिराना किसीका।
सितम कर गया मुस्कराना किसीका ॥
इलाही ये तीरे नजर दिल पे बैठे।
खता हो न यारब निशाना किसीका ॥
भला हम कहें किससे वेताबीये दिल।
सुने भी तो कोई फसाना किसीका ॥
बिगड़ कर किसीका वह पहलू से उठना।
इधर के कसमें मनाना किसीका ॥
मोहब्बत न करते न बदनाम होते।
कहा तुमने जाकिर न माना किसीका ॥

गजल

दूसरी तरफ

नहीं कुछ आपसे शिकवा मगर शाकी हैं हम दिलके।
मुझे धोखा दिया कम्बख्त ने उस शोखसे मिलके ॥

यही है एक दिल कहिये करूं में नज्र किस-किस के ।
लबों के चश्म के दन्दान के रुखसार के तिलके ।
खुदारा ये तो बतला दो, कोई है शीशगर ऐसा ।
जो टुकड़े जोड़ दे आकर मेरे टूटे हुए दिलके ॥
हथेली पर लिये सर, हम चले आये हैं मक्तल में ।
कशिश है किस कदर यारब निहां खंजर में कातिल के ॥

मास्टर बदरुद्दीन

गजल **पहली तरफ** **U H 1176**

माशूक नई रोज जो बेदाद करेंगे ।
शिकवा न शिकायत न हम फ़रयाद करेंगे ॥
ताक़त नहीं हम में कि कोई हाल सुनायें ।
गुज़री है जो फुरकत में वह हम कैसे बतायें ॥
दिल में है लगी आग इसे कैसे बुझायें ।
तीरे नजर को तेरे सनम याद करेंगे ॥
शिकवा न शिकायत ० ॥
दुश्मन को भी अल्लाह कभी यह दिन न दिखाये ।
और मेरी तरह से उसे दर दर न फिराये ॥
इस खाना खराब इश्क़ से अल्लाह बचाये ।
कब देखिये वह दिलको मेरे शाद करेंगे ॥
शिकवा न शिकायत ० ॥

ग्रामोफ़ोन मास्टर

मिस मनोरमा

ग्रामोफ़ोन मास्टर

मिस उमादेवी

मि० पहाड़ी सन्याल

ज़लवा दिखाके मुझको यूं दीवाना बनाया ।
बेदाम मेरे तायरे दिल को हैं फंसाया ।।
फिर पांव में जञ्जीर मोहब्बत है पहनाया ।
कबतक मुझे इस कैद से आजाद करेंगे ।।
शिकवा न शिकायत ० ।।
जन्नत तो हसीनों की ही जमघट में रहेंगे ।
मुश्किल जो गड़ेगी उसे खुशहोके सहेंगे ।।
मुंह से न शिकायत का कोई लफ्ज़ कहेंगे ।
जितना भी सितम ये सितम ईजाद करेंगे ।
शिकवा न शिकायत ० ।।

गजल

दूसरी तरफ

पूरा हम आज दिलका ये अरमान करेंगे ।
माशूक के कदमों पे फ़िदा जान करेंगे ।।
वो शोख अगर आये तो सीने से लगायें ।
और हाल दिले जार उसे अपना सुनायें ।।
गुजरी है जुदाई में जो कुछ उसको बतायें ।
पूरा हम आज ० ।।
किस्मत है बुरी अपनी करें किससे शिकायत ।
किस-किस को सुनायें शबे फुरकत की हिकायत ।।
ऐ वखोरिसा इतनी तो होजाय इनायत ।
पूरा हम आज ० ।।

अल्लाह किसीको न मेरी तरह बनाये ।
और इश्क मोहब्बत में किसीको न फंसाये ।!
दर दर न मेरी तरह किसीको भी फिराये ।
पूरा हम आज० ॥
जन्नत ये मोहब्बत भी बुरी चीज है जालिम ।
मुल्ला हो या सूफ़ी हो या काज़ी हो या आलिम ।
जो इसमें फँसा अक्ल नहीं रहती है सालिम
पूरा हम आज ० ॥

गुलाम हुसेन कव्वाल

गजल　　　पहली तरफ　　　U H 11767

परदेश में ये दिलका लगाना नहीं अच्छा ।
गैरों को अपने घर में बुलाना नहीं अच्छा ॥
हो जाओगे बदनाम जमाने की नजर में ।
कमजर्फ हो हमराज बनाना नहीं अच्छा ॥
हो जाओगे बरबाद मुहब्बत में बुतों के ।
खुद आपको जिल्लत में फंसाना नहीं अच्छा ॥
हो जाय अगर इश्क कसौटी पे परख लो ।
दिल हरकसो नाकस से लगाना नहीं अच्छा ।
अब बूये बफा कुछ नहीं हुवाने जहाँ में ।
सच पूछिये "रौशन" में जमाना नहीं अच्छा ॥

गजल

दूसरी तरफ

करती है खाना खराब शराब मेरे प्यारे ॥
साकी शिताब तोड़दे जामे शराब को ।
पीकर हुए हैं ख्वार इस खाना ख़राब को ॥
गुरबत को बेकसी को और लाई अजाब को ।
लानत में मुब्तिला हुए पीकर शराब को ॥
दुनियां में सैकड़ों को तो ये ख्वार कर चुकी ।
जिस जिस के मुंह लगी उसे फिन्नार कर चुकी ॥
दाहिद ही क्या है जो भी फंसा इसके दाम में ।
हो जाता है गुलाम फकत एक जाम में ॥
रुसवाई उसकी होती है, फिर खासो आम में ।
रहता नहीं है होश उसे अपने काम में ॥
छुटती नहीं है मुंह से ये काफिर लगी हुई ।
बरबाद ही ये करती है सरपर चढ़ी हुई ॥
करती है खाना खराब ० ॥
लिल्लाह तुम न जाओ मैखाना हो जिधर ॥
रिन्दों का जमघटा हो खुम खाना हो जिधर
साकी शराब का लिये पैमाना हो जिधर ॥
शीशे भरे धरे हों ओ कासाना हो जिधर ।
रौशन बचो शराब से पीना हराम है ।
मुसलिम के वास्ते तो ये छूना हराम है ॥
करती है खाना ० ॥

मिस पूर्णा लक्ष्मी

गजल पहली तरफ Q S 2044

बनाया नरगिस को तुमने हैराँ अदा से आंखें दिखा दिखाकर।
मिटाया शमसो कमर का जलवा नकाब रुखसे उठा उठाकर।
यह मैंने माना कि यूँ तो तकवा बुरा है नासेह मगर समझतो।
बुतोंकी उल्फत किसी के दिल में न होय नादाँ खुदा खुदाकर।
जफ़ायें अकसर रही है मुझपर यह छेड़ तुमने नई निकाली,
वफ़ा का दुश्मन क़ि तजकिरा है मुझी से आंखें मिला मिलाकर

गजल दूसरी तरफ

टूटे दिल सामने लेकर तेरे शैदा आये
रहम कर रहम जो ऐ गैरते लैला आये।
हिचकियां आती है दम रुकता है फंसता है गला
फिर भी उम्मीद है शायद वह मसीहा आये।
हाय किसवक्त में उस गुलकी सवारी पहुंची
लोग बीमार को जब कब्र में दफना आये।
एक जायर ही पे मौकूफ नहीं मश्के सितम
मेंह तीरोंका जिधर वह गये बरसा आये।

मास्टर हबीब

पहली तरफ Q S 2046

अबतक फरेफता है सारा जहाँ हमारा
हिन्दूस्ताँ के हम हैं हिन्दूस्तां हमारा

इस मादरे वतन से जिद करके हम जो राए
दामन से इसने पोंछा अश्के रवां हमारा
याकूतो लालो अहमर हम क्या करेंगे लेकर
है जर्रा जर्रा इसका आरामे जाँ हमारा
जेरो जबर जहाँ को चश्मे जदन में करदें
कोई मिटायेगा क्या नामो निशाँ हमारा

दूसरी तरफ

अमल जिसका है अच्छा वही इनसाने कामिल है।
अवस उलझे हुवे हैं सबके सब झगड़े में मजहब के
गढ़े जाते हैं फिक्रे हर तरफ से अपने मतलब के
जो दाना है मुख़ालिफ़ है वह इस अन्दाज बेठकके
हकीकत में जो पूछी बस वही इज्जत के क़ाबिल है
अमल जिसका है अच्छा बस वही इनसाने कामिल है
कोई हिन्दू हो या मुसलिम बलासे जो भी हो वहहो
जो उठते बैठते सोते न भूले अपने मालिक को
हो सादिक बामुरोवत आजिज़ो हमदर्द साबिर-तो
वही ऐ अहले दुनिया बस चिरागे राहे मनज़िल है
अमल जिसका है अच्छा बस वही इनसाने कामिल है।
फरेबो मक्र मैखारी दरोगो रश्क का बानी
महज़ फिरके पे हो नाजाँ सरासर है यह नादानी
बहुत हुशयार जायर दहर की हर चीज है फानी
चलो वह राह जिस से दूर क़ोसों राहे बातिल है
अमल जिसका है अच्छा बस वही इनसाने कामिल है।

मास्टर सन्तोष

पहली तरफ QS 2043

गंगे अमर तरंगे सौभाग्य है हमारा ।
भारत बसुन्धरा पर लाई पवित्र धारा ।
माँ भारती की शोभा को सौगुनी बढ़ादी ।
कटि किंकिनी पिन्हाकर हीरोंकी मुक्त धारा ।
सुरधाम से निकलकर शिवकी जटा से ढलकर
थलपर मचल मचल कर फैली तुम्हारी धारा ।
कलनाद करती आई वनकुंज धाई धाई
सागर में जा समाई गंगे तुम्हारी धारा ।

दूसरी तरफ

जमुने यह किसकी आभा तुझ में है मुसकुराती
चंचल चपल तरंगे नीलम सी जगमगाती ।
तू मन्द हासिनी है हिमगिरि निवासिनीं है
जग पाप नाशिनी है यम की बहन कहाती ।
मथुरा व वृन्दाबन की तूने बनाई शोभा
श्रीकृष्ण को बिठाकर जग में है जगमगाती ।
लीला में श्याम के भी वह रस कहाँ बरसता
गर संग न राधिका के तू सधिका सुहाती ॥

मिस मुन्नी

गजल — पहली तरफ — N 6631

मुक्तीका है यह साधन रट राम नाम तोते,
तेरा यही है पूजन रट राम नाम तोते।
क्यूं वास्ना के पीछे करता है टांय टांय,
कर हरका नाम सुमरन रट राम नाम तोते।
क्यों मनकी कल्पना से पिंजरे में फंस रहा है,
झूठा है जगका बंधन रट राम नाम तोते।
कड़वे फलोंके पीछे छोड़े 'शरर' अमर फल,
बस में नहीं तेरा मन रट राम नाम तोते।

गजल — दूसरी तरफ

बैकुण्ठमें जाकर बनवारी बंशीका बजाना भूल गये,
मन कुंजमें आओ ए कान्हा क्या रास रचाना भूल गये।
ए नाथ तुम्हारे भगतोंपर विपताका हिमांचल टूटा है.
गिरधारी कन्हैया जी नटवर पर्वतको उठाना भूल गये।
इस देशमें आयेंगे फिर हम यह कह गये थे तुम मनमोहन,
भारतमें न आये तुम नटखट वायदेका निभाना भूल गये।
तारा न "शरर" को गर तुमने संसार कहेगा यह मुझसे,
वह दीन दयाल कृपाल तेरे पापोंको तराना भूल गये।

ऐसे जालिम पुरुषोंसे दिल न लगाये रे।

पिया बिन मोहे चैन न आये रे।

मि० के० सी० डे

भजन **पहली तरफ** N 6626

पिया घट पिया को रिझाओ रे, नैन बादर की झर लाओ।

शाम घटा और छाई रे

पिया घट पिया·······

आवत २ सुध की राह पर फिक्र पिया को सताओ रे

कहत कबीरा सुनो भाई साधो पिया को गयां सिखलाओ रे

भजन **दूसरी तरफ**

वालम आओ हमारे गेह रे, तुम बिन दुखिया गेह रे

सब कोई कहई तुम्हारी नारी, मोको लागत लाज रे

दिल से नहीं दिल लगाना, तब लग कैसा सनेह रे

अन्न न भावहि नींद न आवहि, ग्रेह बिन धरहि न धीर रे

कामन को है बालम प्यारा, ज्यों पियासा को नीर रे

हो कोई ऐसा पर उपकारी, पिया से कहे सुनाय रे

अब तो बेहाल कबीर भये हैं, बिन देखे जियो जाय रे

गान्धारी हनगल

N 5814

सूध सारंग **पहली तरफ**

अब मोरी बात मानले पिहरवा मैं तो ।
जाऊं तोसे वारी वारी वारी वारी ॥
प्रेम पिया मुख से नहिं बोलत ।
बिनति करत तोसे । हारी हारी हारी हारी ॥१॥

अडाना **दूसरी तरफ**

आई रे कर्कश । जिन पकरो मोरी बाहीं ।
सोच समझ हित चित सौंगरवा लगाई ॥
निडर निडर निडरावो रोसो धीर लंगरवा ।
भुज फरकत मोरि बाहीं ॥ १ ॥

* समाप्त *

SENOLA MUSICAL PRODUCTS
THE SYMBOL OF QUALITY

सेनोला रेकार्ड—

सेनोला मशीन पर सुनिये !

क्योंकि यह मशीन इस वक्त आला दर्जे की ख्याल की जाती है।

नया माडल, नं० ४१ जी

मूल्य—११०) रुपया।

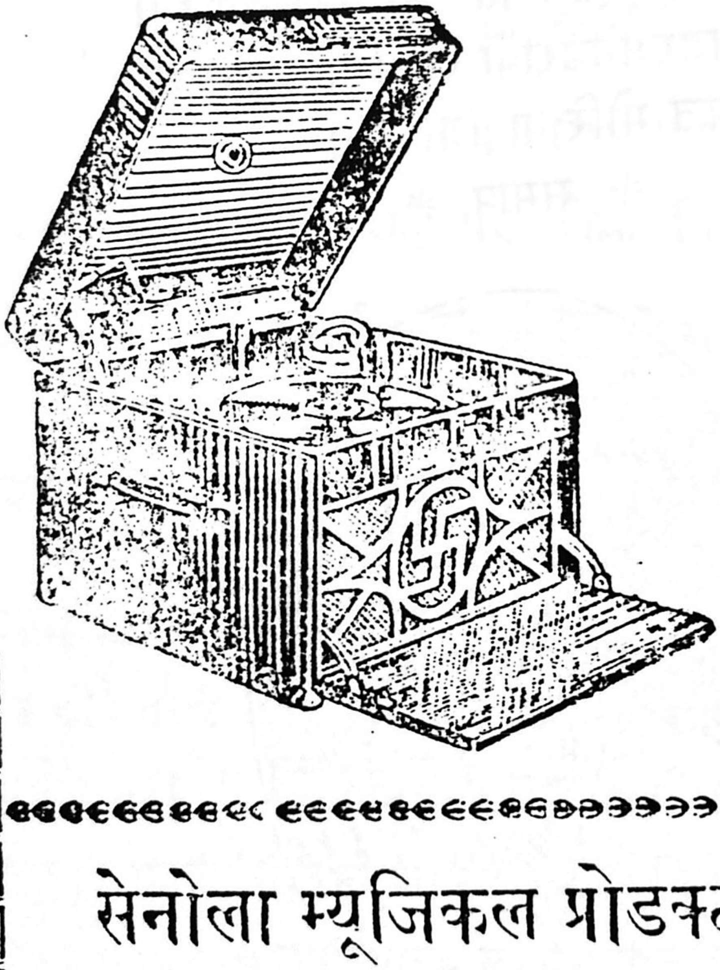

नया माडल—

नं० ३२

मूल्य—६५) रुपया।
इस कीमतमें ऐसी मशीन दुनिया भर में नहीं मिल सकती है।

सेनोला म्यूजिकल प्रोडक्टस कम्पनी,

१८३ धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता।

Selected by:-
Mr. P. D. Lamman,
83, Lower Chitpur Road,
CALCUTTA.

Published by:-
Lamman Brothers.
83, Lower Chitpur Road,
CALCUTTA.

Printed by:-
D. C. Parwar,
AT THE JAWAHAR PRESS,
161/1 Harrison Road,
CALCUTTA.

खुश खबरी

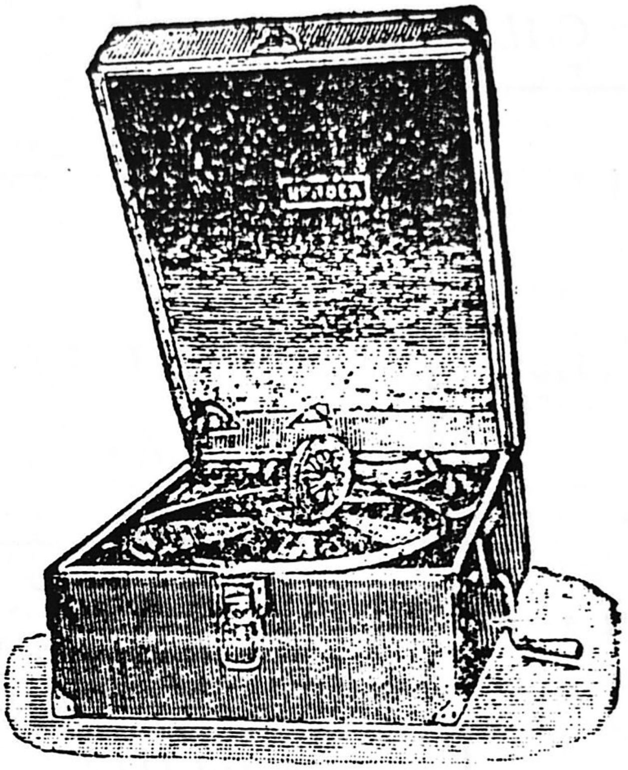

अगर आप अपने रेकार्डोंकी साफ और बलन्द आवाज़ सुननाचाहते हैं तो आज ही "नेरोला" मशीन खरीदें। जोकि देखनेमें खूबसूरत, बनावटमें मज़बूत और चलनेमें बहुत पायेदार हैं और दूसरे मेकरोंकी निस्वत मूल्य भी बहुत सस्ता है। इसके अलावा मोटर, टोनआर्म और ग्रामोफोनके तमाम पुर्जे हमसे मिल सकते हैं।

सेनोला रेकार्ड और मशीनोंके लिये हर जगह एजन्टोंकी जरूरत है।

पता—

निरोद बरन सेन एण्ड ब्रदर्स,

३७५, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

बिहारकी सबसे पुरानी कम्पनी

बिहार नेशनल इन्श्योरेंस कम्पनी

लिमिटेड, पटना

ब्रांच आफिस

२३ स्ट्रैंड रोड, कलकत्ता

फोन कलकत्ता ३६४८

बेतन पर स्पेशल एजेण्ट चाहिये।

सुखसंचारक कंपनी मथुरा

की

संसार प्रसिद्ध औषधें बेचकर

धन और यश कमाइये।

सुधासिन्धु।

कफ, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी अतिसार आदि रोगोंकी अनुपान रहित दवा कीमत ।।) आना

बालसुधा।

शक्तिहीन, दुबले पतले बच्चोंको मोटा, ताकतवर बनाने वाली मीठी दवा। की० ।।।)

सुख संचारक—

द्राक्षासव।

क्षुधा, शक्ति, स्फूर्ति, वर्धक। गुण क्रिया तथा स्वाद में अन्य बाजारू द्राक्षासवोंसे श्रेष्ठतम है। कीमत बड़ी बोतल २) छोटी बोतल १) रुपया

दद्रुगजकेसरी।

हर प्रकारके दादको विना जलन और तकलीफके फायदा करनेवाली दवा। की० ।)

फ़ोटोग्राफी

अगर आप फ़ोटोग्राफीका आर्ट सीखना चाहते हैं तो आज ही हमारी फ़ोटोग्राफीकी पुस्तक मंगाकर पढ़ें जिसमें फ़ोटो खैंचनेकी तमाम विधियोंको बहुत ही सरल भाषामें बयान किया गया है और हर एक थियूरीको चित्र देकर समझाया गया है। पुस्तक भरमें ७५ चित्र हैं। इस पुस्तकके जन्मदाता मिस्टर एम. एस. सील, एम. एस. सी. हैं। जिनकी राय इस वक्त सिनेमा लाईनमें बड़ी वज़नी समझी जाती है यह पुस्तक पहले पहल बंगला भाषामें बनाई गई थी जिसके दो ऐडीशन हाथों हाथ बिक गये और अब तीसरा छपकर तैयार हुआ है। चूंकि इतनी अच्छी पुस्तक आजतक हिन्दी भाषामें देखनेमें नहीं आई थी इसलिये बहुतसी फोटोग्राफी सम्बन्धी कम्पनियोंकी प्रार्थना पर इसका अनुवाद हिन्दी में किया गया है, ताकि हिन्दी जाननेवाली जनता भी इससे लाभ उठा सके। मूल्य केवल १॥) डाकखर्च अलग।

लक्ष्मन ब्रदर्स,

८३, लोअर चीतपुर रोड,

कलकत्ता।